राष्ट्रीय संस्करण

लॉकडाउन के बाद भी नीचे नहीं कर सकते गार्ड : सचिन

>> 12

दैनिक जागरण

वर्ष 3 अंक 297

मूल्य ₹6.00, नई दिल्ली, शनिवार, 4 अप्रैल 2020

www.jagran.com

पृष्ठ 14

कोरोना मीटर

(स्रोत : वर्ल्डोमीटर्स डॉट इंफो स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय)

	विश्व	अमेरिका	स्पेन	भारत	28 मार्च की स्थिति	दिल्ली
कुल केस	10,39,922	2,45,442	1,17,710	3,017	827	386
मौतें	55,170	6,098	10,935	90	20	6
स्वस्थ हुए	2,22,240	10,411	30,513	192	67	10

भारत के प्रमुख राज्य

राज्य	केस	मौतें
महाराष्ट्र	490	16
तमिलनाडु	411	1
केरल	295	2
तेलंगाना	229	9
उत्तर प्रदेश	182	2
राजस्थान	168	0
मध्य प्रदेश	131	0
कर्नाटक	128	3
अन्य	597	37

रात 11 :30 बजे तक

अन्य प्रमुख देश

देश	इटली	जर्मनी	चीन
केस	1,15,242	81,589	81,620
मौतें	13,915	1,129	3,322

नोट : कोरोना से प्रभावित लोगों के संदर्भ में आंकड़े उल्लिखित दो स्रोतों के अतिरिक्त जागरण न्यूज नेटवर्क के रूप में अन्य माध्यमों से भी लिए गए हैं। अत : तालिका तथा दैनिक जागरण के इस अंक में प्रकाशित सामग्री में आंकड़ों का अंतर संभव है।

हेल्पलाइन नंबर

कोरोना से जुड़ी सही जानकारी देने के लिए भारत सरकार और विश्व स्वास्थ्य संगठन ने वाट्सएप हेल्पलाइन नंबर जारी किए हैं। इन नंबरों को मोबाइल में सुरक्षित करके कोई भी प्रामाणिक सूचना पाई जा सकती है। कृपया नंबर दर्ज करके वाट्सएप पर सिर्फ नमस्कार का संदेश भेजें। तुरंत एक मेन्यू आएगा, जिसके अनुसार वांछित जानकारी ली जा सकती है।

who:+41 798931892

mygov : +919013151515

कोरोना को हराना है

मंत्रियों के समूह ने की लॉकडाउन में स्थिति की समीक्षा ● पेज 3

पुडुचेरी सरकारी अस्पताल के 54 कर्मचारी बर्खास्त ● पेज 5

राजस्थान में पुलिसकर्मी ने बनवाया सैनिटाइजेशन चैंबर ● पेज 7

सरोकार

आस्था का मनोविज्ञान भी ढाल बन बढ़ा रहा आत्मविश्वास

बरेली : आस्था का मनोविज्ञान कोरोना संक्रमितों के लिए ढाल बन रहा है। उप्र के बरेली के छह मरीजों की कहानी, जिन्हें वार्ड में ही प्रार्थना, ध्यान, साधना कराकर चिकित्सकों-मनोचिकित्सकों ने तनाव से उबार लिया है। (पेज-12)

जागरण विशेष

शुभ करोति कल्याणम... इसलिए जलाएं दीये

नई दिल्ली : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आह्वान पर कल जब घर-घर 'दिवाली' मनेगी और देश दीयों से जगमगा उठेगा, तब यह उत्साह कोरोना पर भारी पड़ेगा। कैसे, बता रहे विज्ञानी और विशेषज्ञ। (पेज-12)

न्यूज गैलरी

राज-नीति ▶ पृष्ठ 3

दिहाड़ी मजदूरों को तत्काल वेतन की मांग पर सरकार को नोटिस

नई दिल्ली : कोरोना महामारी के कारण बेरोजगार हो गए दिहाड़ी और प्रवासी मजदूरों को तत्काल न्यूनतम वेतन का भुगतान सुनिश्चित किए जाने की मांग पर सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र सरकार को नोटिस जारी कर जवाब मांगा है।

बिजनेस ▶ पृष्ठ 10

भारतीय इकोनॉमी की बुनियाद मजबूत है : एडीबी

नई दिल्ली : कोरोना संकट ने भारत पर प्रभाव तो डाला है, लेकिन अर्थव्यवस्था मंदी में नहीं जाएगी क्योंकि इकोनॉमी की बुनियाद मजबूत है। एशियाई विकास बैंक (एडीबी) ने कहा है कि चालू वित्त वर्ष में देश की विकास दर चार फीसद तक रह सकती है।

मनोबल और एकजुटता से होगी वायरस से जंग : मोदी

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

उम्मीदों का उजाला

- प्रधानमंत्री की अपील, लॉकडाउन से प्रभावित गरीबों के लिए कल रात नौ बजे नौ मिनट के लिए जलाएं दीये
- कहा, उत्साह के बल पर कुछ भी हासिल करना संभव
- शारीरिक दूरी बनाए रखने पर एक बार फिर दिया जोर

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को वीडियो संदेश के जरिए कोरोना को हराने के लिए महाशक्ति जागरण में शामिल होने का आह्वान किया। एएनआइ

कोरोना वायरस के प्रसार में आई तेजी के बीच एक तरफ जहां सरकार ने राज्यों के साथ समन्वय के जरिये स्थिति चाक-चौबंद करनी शुरू की है वहीं जनभागीदारी व जागरूकता बनाए रखने में खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कोई कसर नहीं छोड़ना चाहते हैं। जनता कर्फ्यू के दौरान ताली बजाकर डॉक्टरों, नर्सों, सफाईकर्मियों को धन्यवाद देने में दिखे देश के उत्साह को पीएम कोरोना की लड़ाई खत्म होने तक बरकरार रखने के साथ ही पूरे देश को एक डोर में बांधे रखना चाहते हैं। लिहाजा अब आगामी रविवार (पांच अप्रैल) को उन्होंने देश के उन गरीबों के लिए हर किसी से घर के अंदर प्रकाश करने को कहा है जो लॉकडाउन में सबसे ज्यादा प्रभावित हुए हैं। मोदी ने अपील की है कि रविवार को रात नौ बजे घर की रोशनी बंद कर नौ मिनट के लिए बालकनी में मोमबत्ती, दीया, टार्च या मोबाइल का फ्लैश जलाएं, जो कोरोना के अंधकार से जंग का द्योतक होगा और देश का मनोबल भी बढ़ाएगा।

कोरोना के खिलाफ पूरी जंग समाज के स्तर पर ही लड़ी जानी है। पीएम बार-बार इसकी याद दिला रहे हैं। साथ ही शारीरिक दूरी बनाए रखने का मंत्र भी दोहरा रहे हैं। एक दिन पहले ही उन्होंने सभी राज्यों के मुख्यमंत्रियों के साथ चर्चा में भी इसकी बात की थी और चरणबद्ध तरीके से लॉकडाउन से बाहर आने पर सुझाव मांगा था। संकेत साफ है कि ऐसे इलाके जो कोरोना के लिए हॉटस्पॉट बनते जा रहे हैं, उनके लिए लॉकडाउन बढ़ भी सकता है। लिहाजा शुक्रवार को पीएम ने ध्यान जनता का मनोबल बढ़ाने पर केंद्रित रखा। देश के नाम वीडियो संदेश में उन्होंने कहा, उत्साह से बढ़कर कोई ताकत नहीं होती। इसके बल पर कुछ भी हासिल किया जा सकता है। पिछले दिनों कई शहरों में प्रवासियों में लॉकडाउन का भय दिखा था। शायद पीएम रोशनी करने की अपील कर गरीबों को बताना चाहते हैं कि देश उनके साथ खड़ा है।

खेल हस्तियों से जागरूकता के लिए पीएम की अपील, दिए पांच मंत्र

देश के नाम वीडियो संदेश जारी करने के कुछ देर बाद ही पीएम ने देश की चुनिंदा खेल हस्तियों से चर्चा की। मोदी ने भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड अध्यक्ष सौरभ गांगुली, क्रिकेटर सचिन तेंदुलकर, विराट कोहली, युवराज सिंह, महिला हॉकी टीम की कप्तान रानी रामपाल, धाविका हिमा दास, पीवी संधू समेत 40 खेल हस्तियों से वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिए चर्चा की। कोरोना से पैदा हालात का जिक्र करते हुए मोदी ने कहा, वो जनता को सरकार की ओर जारी एडवाइजरी का पालन करने और शारीरिक दूरी बनाए रखने जैसे निर्देशों को मानने के लिए जागरूक करें क्योंकि यही बीमारी से लड़ने का अचूक मंत्र है। मोदी ने खिलाडियों को भी पांच मंत्र दिए और अपने संदेश में इसे शामिल करने का आग्रह किया। पहला मंत्र है कोरोना से लड़ने का संकल्प। दूसरा, शारीरिक दूरी बनाए रखने का संयम, तीसरा, सकारात्मक सोच, चौथा, कोरोना से जंग में अग्रिम पंक्ति में खड़े डॉक्टर, नर्स, पुलिसकर्मी जैसे योद्धाओं के लिए सम्मान और पांचवां व्यक्तिगत व राष्ट्रीय स्तर पर सहयोग। इस दौरान सचिन ने लॉकडाउन के बाद भी निगरानी जारी रखने की जरूरत पर जोर दिया तो हिमा ने चिकित्साकर्मियों पर हमले की घटनाओं पर चिंता जताई।

प्रधानमंत्री की खिलाड़ियों के साथ वीडियो कांफ्रेंसिंग की खबरें पेज>>12

बड़े पैमाने पर कोरोना जांच को मंजूरी

अहम फैसला ▶ आइसीएमआर ने कई विभागों की लैब को अधिकृत किया

सभी को सुरक्षा संबंधी निर्देशों का कड़ाई से पालन करने की हिदायत दी

- सरकारी संस्थाओं व अभियानों की ओर से भेजे गए नमूनों की होगी जांच
- 200 से अधिक वैज्ञानिकों ने केंद्र सरकार से की थी जांच केंद्र बढ़ाने की मांग

प्रतीकात्मक फोटो

एंटीबॉडी टेस्ट को मंजूरी मिलने से जल्द मिलेगी रिपोर्ट

कोरोना की जांच के लिए विभिन्न विभागों से संबद्ध लैब को अधिकृत करने के साथ ही आइसीएमआर ने रक्त नमूनों से एंटीबॉडी परीक्षण की मंजूरी दे दी है। रक्त संबंधी अन्य जांचों की तरह इसका भी परिणाम पंद्रह से बीस मिनट में मिल जाएगा। इससे कम समय में ज्यादा लोगों की जांच हो सकती है। इससे जो क्षेत्र कोरोना से ज्यादा प्रभावित हैं वहां मरीजों की पुष्टि जल्दी करने के साथ उनके समय से इलाज में सुविधा होगी। सरकार ने अभी तक पीसीआर (पेरीमिरेज चेन रियेक्शन) टेस्ट की अनुमति दे रखी थी। नाक व गले से लिए गए तरल नमूनों की इस जांच में काफी वक्त लग रहा था।

नई दिल्ली, एजेंसियां : तब्लीगी जमात की करतूत के कारण अचानक देश में कोरोना के बढ़ते मामले देखकर सरकार ने रणनीति बदल दी है। बीते दो दिनों में बिगड़ी स्थिति काबू करने के लिए बड़े पैमाने पर कोरोना की जांच को हरी झंडी दे दी गई। भारतीय चिकित्सा शोध परिषद (आइसीएमआर) ने कई विभागों की लैब को कोविड-19 की जांच के लिए अधिकृत कर दिया।

बायो तकनीक विभाग (डीबीटी), विज्ञान एवं तकनीक विभाग (डीएसटी), वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआइआर) और परमाणु ऊर्जा विभाग (डीएई) की लैब में भी अब कोविड-19 के नमूनों की जांच हो सकेगी। आइसीएमआर के एक अधिकारी ने बताया कि इन संस्थाओं की लैब को जांच शुरू करने से पहले परिषद द्वारा जारी सुरक्षा संबंधी दिशा निर्देशों का कड़ाई से पालन करने को कहा गया है।

ज्ञात हो, कुछ दिन पूर्व ही देश के प्रतिष्ठित संस्थानों के दो सौ से अधिक वैज्ञानिकों ने केंद्र सरकार को पत्र लिखकर देश भर में जांच केंद्र बढ़ाने की मांग की थी। इन वैज्ञानिकों का मानना था कि अधिक जांच केंद्र होने से न सिर्फ परिणाम जल्दी मिलेंगे पाजिटिव मरीजों का इलाज भी सही समय से शुरू हो पाएगा। आइसीएमआर का कहना है कि यह वायरस खतरनाक है। इसके नमूने कई स्तरों से होकर जांच के लिए पहुंचते हैं। जरा सी कोताही में वायरस लैब को संक्रमित कर सबके लिए मुसीबत खड़ी कर सकता है।

आइसीएमआर ने स्पष्ट किया है कि वह इन संस्थाओं को कोई जांच किट या अन्य सामान मुहैया नहीं कराएगी। ये लैब सरकारी संस्थाओं और सरकारी अभियानों द्वारा भेजे गए नमूनों की ही जांच करेंगी। ये लैब चूंकि प्रतिष्ठित संस्थानों के अधीन हैं। इस संबंध में कोई समझौता करने के लिए इन विभागों के सचिव ही उपयुक्त होंगे। इन जांच लैब की जिम्मेदारी संबंधित विभाग की ही होगी। संबंधित लैब को काम शुरू करने के लिए सरकारी स्वास्थ्य विभागों से संपर्क करने को कहा गया है।

अप्रैल के अंत तक चरम पर पहुंच सकता है कोरोना का कहर

नई दिल्ली : कोरोना का कहर लंबा खिंच सकता है। भारत में इसका चरम रूप अप्रैल के अंतिम या मई के पहले हफ्ते में दिखने को मिल सकता है। सरकार की मानें तो कोरोना के खिलाफ लड़ाई में काफी हद तक सफलता मिल रही थी, लेकिन तब्लीगी जमात ने सारी उपलब्धियों पर पानी फेर दिया। गत दो दिनों में तबलीगी जमात से जुड़े कोरोना के 647 मरीज सामने आए हैं। आइसीएमआर के एक वरिष्ठ वैज्ञानिक ने कहा, मरीजों की संख्या और तेज गति से बढ़ सकती है। अगला एक हफ्ता भारत के लिए अहम साबित होगा। उन्होंने कहा, अगले एक हफ्ते में यह पता चलेगा कि जमात के लोग अपने संपर्क में आने वाले कितने लोगों तक इस वायरस को पहुंचा चुके हैं। इसके आधार पर तय होगा कि यह चेन आगे कहां तक जाएगी। (पेज-5)

घर से दे सकेंगे टॉफेल व जीआरई की परीक्षा

नई दिल्ली, प्रेट्र : कोरोना के प्रकोप के कारण कई देशों में लाकडाउन होने की वजह से इस बार टॉफेल और जीआरई परीक्षा घर से ही देने का मौका मिलेगा। हालांकि चीन और ईरान के छात्रों को इन वैश्विक परीक्षाओं को घर से देने की इजाजत नहीं दी गई है।

टेस्ट ऑफ इंग्लिश ऐज ए फारेन लैंग्वेज (टीओएफएल) और ग्रेजुएट रिकॉर्ड एग्जामिनेशन (जीआरई) की परीक्षा, विदेशी विश्वविद्यालयों में प्रवेश लेने वाले छात्रों को पास करना जरूरी होता है।

टॉफेल के कार्यकारी निदेशक श्रीकांत गोपाल ने बताया कि जब तक हालात ठीक नहीं तब तक ये परीक्षाएं लोग घर से दे सकते है। छात्र इस परीक्षा का उच्च स्तर बनाये रखें इसके लिए हर संभव प्रयास किये जा रहे हैं। इस परीक्षा की गुणवत्ता बरकरार रखने के लिए रियल टाइम ह्यूमन मॉनिटरिंग व आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस का सहारा लिया जाएगा। ऑनलाइन टेस्ट के लिए उपलब्ध अनेक शेड्यूल से छात्र अपनी रुचि का दिन और समय चुन सकते हैं। जून की तरीखों के लिए रजिस्ट्रेशन खुला हुआ है।

एक दिन में तब्लीगी जमात से जुड़े और 237 संक्रमित मिले

- देश में कोरोना पॉजिटिव लोगों की संख्या तीन हजार के पार
- विभिन्न राज्यों में और 11 लोगों की मौत, मरने वालों का आंकड़ा 90 पर पहुंचा

राज्य	नए मामले	तब्लीगी
तमिलनाडु	102	100
दिल्ली	93	77
उत्तर प्रदेश	48	47
असम	4	4
हरियाणा	4	3
पंजाब	5	3
कर्नाटक	3	3

नई दिल्ली, एजेंसियां : तब्लीगी जमात ने देश में कोरोना वायरस के खिलाफ लड़ाई को कितना जटिल बना दिया है, इसका इसी से अंदाजा लगाया जा सकता है कि पिछले दो दिनों के भीतर जितने भी नए मामले सामने आ रहे हैं उनमें लगभग 80 फीसद जमात से ही जुड़े हुए हैं। शुक्रवार को देश में साढ़े तीन सौ से ज्यादा नए कोरोना पॉजिटिव केस सामने आए और संक्रमितों की संख्या तीन हजार को पार कर गई। 11 लोगों की मौत भी हो गई है और मरने वालों की संख्या 90 हो गई है। अब तक 162 लोग पूरी तरह से ठीक हो चुके हैं। पिछले चौबीस घंटे में रिकॉर्ड आठ हजार से ज्यादा सैंपल की जांच हुई है।

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय और राज्य सरकारों से मिली सूचना के मुताबिक शुक्रवार को कुल 13 लोगों की मौत कोरोना से हुई। इनमें महाराष्ट्र में छह, दिल्ली और तेलंगाना में दो और आंध्र प्रदेश, हिमाचल प्रदेश और गुजरात में एक-एक व्यक्ति ने दम तोड़ा है।

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के संयुक्त सचिव लव अग्रवाल ने बताया कि 14 राज्यों में 647 कोरोना पॉजिटिव मामले तब्लीगी जमात से जुड़े हैं। ये मामले अंडमान निकोबार से लेकर असम, दिल्ली, हिमाचल, हरियाणा, जम्मू-कश्मीर, झारखंड, कर्नाटक, महाराष्ट्र, राजस्थान, तमिलनाडु, तेलंगाना, उत्तराखंड और उत्तर प्रदेश में मिले हैं। शुक्रवार को सिर्फ सात राज्यों-तमिलनाडु, कर्नाटक दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, असम और पंजाब में कुल 259 नए मामले सामने आए। इनमें से 237 मामले तब्लीगी जमात से जुड़े हैं।

देशभर में संक्रमितों की संख्या 3009 हो गई थी। इनमें 47 विदेशी, वायरस से जान गंवाने वाले 87 लोग और पूरी तरह से ठीक हो चुके 162 लोग भी शामिल हैं। तमिलनाडु में 102 नए मामले सामने आए, इनमें से 100 तब्लीगी जमात से जुड़े थे। राज्य में तीन दिन में संक्रमितों का आंकड़ा 411 हो गया है, जिनमें से 364 का संबंध तब्लीगी जमात से है। दिल्ली में 93 नए केस मिले हैं। इनमें 77 जमाती हैं। राज्य में 386 संक्रमित हो गए हैं।

सीआइएसएफ के 11 जवान संक्रमित : महाराष्ट्र में 67 नए मामले सामने आए और संक्रमितों की संख्या 490 हो गई। इनमें पनवेल में संक्रमित पाए गए सीआइएसएफ के 11 जवान शामिल हैं जो मुंबई इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर तैनात थे। केरल में नौ नए केस मिले हैं और राज्य में अभी तक मिले संक्रमितों की संख्या 295 हो गई है। तेलंगाना में 75 नए मामले मिले और संक्रमितों की संख्या 229 हो गई।

उत्तर प्रदेश में नए 48 केस में से 47 तब्लीगी : उत्तर प्रदेश में शुक्रवार को 48 मामले सामने आए, इनमें 47 तब्लीगी जमात में शामिल लोग हैं। राज्य में कुल 179 लोग संक्रमित हो गए हैं। राजस्थान में 32 नए मामले आए और कुल संख्या 168 हो गई। चार नए मामलों के साथ बंगाल में कुल 38 संक्रमित हो गए हैं। जम्मू-कश्मीर में पांच नए केस पाए गए हैं और संख्या 75 हो गई है।

योगी ने कहा-कानून का पालन करना हम सिखाएंगे, छोड़ेंगे नहीं

● गाजियाबाद के अस्पताल में महिला स्वास्थ्यकर्मियों से अभद्रता करने वाले तब्लीगी जमातियों पर लगेगा रासुका

- उप्र के सीएम ने कहा, उत्तर प्रदेश को इंदौर नहीं बनने देंगे
- प्रदेश में संक्रमित 179 लोगों में से 52 तब्लीगी जमात के

कोरोना वायरस की स्थिति को लेकर शुक्रवार को उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अधिकरियों के साथ उच्चस्तरीय बैठक की। एएनआइ

> ये लोग न कानून को मानेंगे, न व्यवस्था को। इनके साथ सख्ती से पेश आने और इन्हें कानून का पालन करना सिखाने की जरूरत है। -योगी आदित्यनाथ, मुख्यमंत्री, उप्र

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

गाजियाबाद में तब्लीगी जमात के लोगों द्वारा महिला स्वास्थ्य कर्मियों के साथ की गई अभद्रता व अश्लील हरकतों पर उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सख्त तेवर दिखाए हैं। उन्होंने ऐसे सभी लोगों पर रासुका लगाने का आदेश देते हुए कहा, इन्हें छोड़ा नहीं जाएगा। सीएम ने शुक्रवार को लखनऊ में अपने आवास पर अफसरों संग बैठक में गाजियाबाद व अन्य शहरों में जमातियों के उपद्रव व असहयोग की घटनाओं को गंभीरता से लिया। योगी ने मध्य प्रदेश के इंदौर में डॉक्टरों संग मारपीट की घटना का जिक्र करते हुए कहा, वह उप्र को किसी कीमत पर इंदौर नहीं बनने देंगे। बता दें तब्लीगियों के चलते देश में कोरोना संक्रमितों की संख्या तेजी से बढ़ी है। उत्तर प्रदेश में ही संक्रमित 179 लोगों में से 52 लोग जमात से जुड़े हैं।

किसी भी तरह संक्रमण पर काबू पाना है : सीएम ने कहा, हमें किसी भी तरह से कोरोना संक्रमण पर काबू पाना है। जैसे हम इंसेफ्लाइटिस से जीते हैं, वैसे ही कोरोना के खिलाफ भी जंग जीतेंगे। इस चुनौती से निपटने को हमें चिकित्सा तंत्र व अवस्थापना सुविधाएं मजबूत करनी है।

तत्काल दर्ज हो मामला : डीजीपी हितेश चंद्र अवस्थी ने कहा है कि लॉकडाउन के दौरान सरकारी कर्मियों के काम में बाधा डालने और मारपीट करने वालों पर गैंगस्टर एक्ट व रासुका के तहत कार्रवाई की जाए। ऐसी घटना पर तत्काल एफआइआर दर्ज कर उसकी विवेचना एसपी-एसएसपी अपनी मॉनीटरिंग में कराएं।

नहीं सुधर रहे जमाती, शर्मनाक करतूत से गुस्से में लोग

नई दिल्ली : भारत में कोरोना के संकट को बढ़ा देने वाले तब्लीगी जमात के लोगों पर नर्सों के साथ अश्लील हरकत करने और डॉक्टरों पर थूकने को लेकर मामला दर्ज होने के बावजूद यह लोग नहीं सुधरे और शुक्रवार को भी देश के अलग-अलग राज्यों में अस्पताल कर्मियों को परेशान करने वाला रवैया जारी रहा। (विस्तृत पेज-5 पर)

87 लाख खातों में पहुंचे 871 करोड़ पेज>>7

अखबारों के वितरण में बाधा डालना सूचना के अधिकार का हनन

अखबार से नहीं फैलता है कोरोना

विशेषज्ञों के मुताबिक, सूचना पाना हर किसी का मौलिक अधिकार, लॉकडाउन में भी नहीं हुआ है यह अधिकार निलंबित

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

- अभिव्यक्ति की आजादी में लिखने व प्रकाशित करने के साथ ही सूचना को प्रसारित करना भी शामिल
- कोरोना महामारी के दौर में अखबार विश्वसनीय सूचना के अहम साधन

कोरोना महामारी के इस दौर में समाचार पत्र विश्वसनीय सूचना का एक अहम साधन हैं। इस मुश्किल घड़ी में प्रिंट मीडिया की पूरी टीम रात दिन जुट कर पूरी सावधानी का ध्यान रखते हुए लोगों तक विश्वसनीय और सही जानकारी पहुंचाने में लगी है। लेकिन लॉकडाउन के समय कई जगह लोगों तक समाचार पत्र नहीं पहुंच रहे हैं। विधि विशेषज्ञ मानते हैं कि सूचना का अधिकार व्यक्ति का मौलिक अधिकार है और समाचार पत्र व्यक्ति तक सूचनाएं पहुंचाते हैं। ऐसे में समाचार पत्र के व्यक्ति तक पहुंचने में बाधा डालना इस अधिकार का हनन है।

समाचार पत्रों से मिलने वाली सूचना की अहमियत बताते हुए सुप्रीम कोर्ट के वकील डीके गर्ग कहते हैं कि प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की कोई तुलना नहीं है। अखबार में सूचनाएं विश्वसनीय और विस्तृत होती हैं। इसके अलावा अखबार में क्षेत्र विशेष से संबंधित सूचनाएं होती हैं जिनकी जानकारी टीवी चैनलों पर नहीं मिलती। कोरोना महामारी के दौरान समाचार पत्र सूचना का सबसे जरूरी और भरोसेमंद साधन हैं। इसके जरिये ही लोगो को न सिर्फ तथ्यपरक जानकारी बल्कि सरकार की घोषणाएं और महामारी से बचाव के उपाय भी पता चलते हैं। इन सूचनाओं को जानना व्यक्ति का मौलिक अधिकार है और इससे उसे किसी भी आधार पर वंचित नहीं किया जा सकता। गर्ग कहते है कि लॉकडाउन के दौरान लोगों के मौलिक अधिकार निलंबित नहीं हुए हैं। वे 1962 के सुप्रीम कोर्ट के सकाल पेपर्स के मामले में दिए गए फैसले का हवाला देते हुए कहते हैं कि इस फैसले में सुप्रीम कोर्ट ने प्रेस की आजादी को मौलिक अधिकार मानते हुए यह भी कहा था कि अभिव्यक्ति की आजादी में न सिर्फ लिखने व प्रकाशित करने का अधिकार है बल्कि उस सूचना को प्रसारित करना भी आता है। गर्ग कहते हैं कि ये कई बार कहा जा चुका है कि कोरोना अखबार से नहीं फैलता। ये आवश्यक वस्तु में आता है और इसे लोगों तक पहुंचने में बाधा नहीं डाली जा सकती। ऐसा करना अपराध है। जब सरकार ने इस पर रोक नहीं लगाई है तो फिर इसे लोगों तक पहुंचने से रोकना अपराध है और इस पर कार्रवाई हो सकती है।

अखबार का प्रसार रोकना अपराध : इलाहाबाद हाईकोर्ट के सेवानिवृत न्यायाधीश एसआर सिंह भी कहते हैं कि अगर समाचार पत्र जरूरी सेवाओं में आते हैं तो इन्हें लोगों तक नहीं पहुंचने देना अपराध होगा। सूचना पाना अनुच्छेद 19(1)(ए) के मौलिक अधिकार के तहत आता है और अखबार लोगों तक नहीं पहुंचने देना इस अधिकार का हनन है।

समाचार पत्रों पर कोई रोक नहीं : पूर्व एडिशनल सॉलिसिटर जनरल और सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ वकील पीएस नरसिम्हा कहते हैं कि समाचार पत्र अभिव्यक्ति की आजादी के मौलिक अधिकार अनुच्छेद 19(1)(ए) के तहत आता है। और इस अधिकार पर सिर्फ सुरक्षा, कानून व्यवस्था आदि संविधान में दिये गए आधारों पर ही रोक लगाई जा सकती है। हालांकि यहां स्थिति ये नहीं है और सरकार की ओर से समाचार पत्रों पर किसी तरह की रोक नहीं लगाई गई है।

सूचना पाना अमूल्य अधिकार भी : सुप्रीम कोर्ट के वकील ज्ञानंत सिंह कहते हैं कि अभिव्यक्ति की आजादी सिर्फ अभिव्यक्ति तक सीमित नहीं है इस अधिकार में सूचना देने और सूचना पाने दोनों का अधिकार निहित है। यह एक अमूल्य अधिकार है। इस पर किसी भी तरह की बाधा या नियंत्रण कार्यकारी आदेश के जरिए नहीं लगाया जा सकता। इस अधिकार को नियंत्रित और नियमित सिर्फ अनुच्छेद 19 (2) के तहत दिये गए आधारों पर तर्कसंगत कानून द्वारा ही किया जा सकता है।

30.1 डिग्री सेल्सियस रहा राजधानी का तापमान शुक्रवार को। न्यूनतम तापमान 15.4 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। आज आसमान साफ रहेगा। अधिकतम और न्यूनतम तापमान क्रमशः 32 एवं 15 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है।

न्यूज गैलरी

दिल्ली-एनसीआर में सीएनजी पीएनजी के दामों में हुई कटौती

नई दिल्ली : इंद्रप्रस्थ गैस लिमिटेड (आइजीएल) ने संपीड़ित प्राकृतिक गैस (सीएनजी) और पाइप्ड नेचुरल गैस (पीएनजी) में बड़ी कटौती की है। वाहनों में इस्तेमाल होने वाली सीएनजी और पाइप के जरिये घरों की रसोई तक पहुंचने वाली पीएनजी के दामों में यह कटौती सात फीसद तक है। प्राकृतिक गैस के दाम घटने के बाद सीएनजी और पीएनजी की कीमतों में यह कटौती की गई है। राष्ट्रीय राजधानी और इसके आसपास के इलाकों में सीएनजी की खुदरा बिक्री करने वाली कंपनी आइजीएल ने कहा है कि दिल्ली में सीएनजी का दाम 3.20 रुपये घटाकर 42 रुपये किलो कर दिया गया है। इसके साथ ही दिल्ली से लगते नोएडा, ग्रेटर नोएडा और गाजियाबाद में इसके दाम में 3.60 रुपये की कटौती की गई है। इन इलाकों में सीएनजी का दाम 47.75 रुपये किलो रह जाएगा। इससे पहले यह दाम 51.35 रुपये प्रति पर था। इंद्रप्रस्थ गैस ने वक्तव्य में यह भी घोषणा की है कि दिल्ली में घरेलू पाइप गैस (पीएनजी) का दाम 1.55 रुपये घटकर 28.55 रुपये प्रति घनमीटर रह गया है। इसी प्रकार नोएडा, ग्रेटर नोएडा और गाजियाबाद में रसोई की पाइप वाली गैस का दाम 1.65 रुपये घटकर 28.45 रुपये प्रति घनमीटर रह गया है। (जासं)

सीबीएसई ने छात्रों को दी 'आरोग्य सेतु' की जानकारी

नई दिल्ली : केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) ने शुक्रवार को कोरोना वायरस से बचाव के लिए आरोग्य सेतु एप लांच किए जाने की जानकारी दी। बोर्ड ने आयुष मंत्रालय के इम्युनिटी बढ़ाने के उपायों को भी शेयर किया है। साथ ही सभी शिक्षकों, छात्रों व स्टाफ के सदस्यों से प्रधानमंत्री की अपील के अनुरूप पांच अप्रैल को दीया और कैंडल जलाने को कहा है। सीबीएसई के अधिकारियों ने बताया कि आरोग्य सेतु एप सभी छात्रों, स्कूलों के फैकल्टी मेंबर्स और टीचर्स के साथ-साथ इन सभी के परिवारजनों के लिए भी कोरोना से बचाने में सहायक साबित होगा। सीबीएसई ने इस संबंध में एक नोटिस भी साझा किया है। (जासं)

तीन हजार से अधिक लोग हिरासत में लिए गए

नई दिल्ली : घर-घर और गली-गली तक दिल्ली पुलिस व प्रशासन द्वारा लॉकडाउन के बारे में जागरूकता फैलाने के बावजूद लोग इसका उल्लंघन करने से बाज नहीं आ रहे हैं। शुक्रवार को दिल्ली पुलिस ने लॉकडाउन का उल्लंघन करने के मामले में 3,195 लोगों को हिरासत में लिया है। दिल्ली पुलिस के अतिरिक्त जनसंपर्क अधिकारी एसीपी अनिल मित्तल के मुताबिक इनमें बिना किसी जरूरी काम के घर से निकले 365 लोगों के वाहनों को जब्त कर लिया गया। लॉकडाउन का उल्लंघन करने पर 156 एफआइआर भी दर्ज की गई हैं। यह कार्रवाई गुरुवार देर रात से लेकर शुक्रवार शाम पांच बजे तक दिल्ली पुलिस ने की। (जासं)

सभी जरूरतमंदों तक पहुंचे योजनाओं का लाभ : सीएम

निर्देश ▸ वीडियो कांफ्रेंसिंग से मुख्यमंत्री ने विधायकों से की बात

कहा, विधायक यह सुनिश्चित करें कि कोई भी व्यक्ति उनके क्षेत्र में भूखा न सोए

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली

वीडियो कांफ्रेंसिंग से पार्टी के विधायकों से बात करते अरविंद केजरीवाल। सौ. दिल्ली सरकार

मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने शुक्रवार को वीडियो कांफ्रेंसिंग से सभी विधायकों को निर्देश दिए कि वे सुनिश्चित करें कि लॉकडाउन के दौरान अपने क्षेत्र के लोगों तक सरकार की योजनाओं का लाभ पहुंचे। वीडियो कांफ्रेंसिंग में केजरीवाल के साथ उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया और स्वास्थ्य मंत्री सत्येंद्र जैन भी मौजूद थे।

केजरीवाल ने कहा कि गरीबों को राशन की सबसे ज्यादा जरूरत है। दिल्ली सरकार सभी राशन कार्ड धारकों को राशन मुफ्त में और पहले से ज्यादा दे रही है। यह सुनिश्चित किया जाए कि दिल्ली सरकार की सभी राशन की दुकानों पर लोगों को राशन मिले। उन्होंने कहा कि एक बड़ा मुद्दा लोगों को भोजन उपलब्ध कराने का भी है। सरकार के रैन बसेरों और स्कूलों में मिल रहा खाना पर्याप्त मात्रा में हो और अच्छी गुणवत्ता का हो। केजरीवाल ने विधायकों से कहा कि वे यह सुनिश्चित करें कि उनके क्षेत्र में कोई भी व्यक्ति भूखा न रहे। अगर किसी को खाने की जरूरत हो तो विधायक ऐसे लोगों को भोजन वितरण केंद्र तक पहुंचाएं या उनके घर राशन का इंतजाम कराएं। उन्होंने कहा कि विधायक राशन और भोजन के वितरण का निरीक्षण करें। कहीं भी किसी तरह की गड़बड़ी मिलती है तो तुरंत सरकार तक पहुंचाएं ताकि सरकार कार्रवाई कर सके।

ऑनलाइन आवेदन करने में करें मदद : केजरीवाल ने कहा कि जिनके पास राशन कार्ड नहीं है, वे ऑनलाइन आवेदन करें। राशन कार्ड के लिए आवेदन देने वालों को भी मुफ्त राशन दिया जाएगा। जिनको दिक्कत आ रही है, विधायक ऐसे सभी लोगों को ऑनलाइन आवेदन करने में मदद करें।

328 केंद्रों पर बेघरों को ठहराने की व्यवस्था : केजरीवाल ने कहा कि ऐसे लोग जो अपने घरों को न जाकर दिल्ली में ही रुके हैं और उनके पास रहने को घर नहीं है, ऐसे लोगों को ठहराने के लिए 328 केंद्रों पर व्यवस्था की गई है। इन केंद्रों पर 57,270 लोगों के रहने का इंतजाम किया है। अभी यहां केवल 11,443 लोग रह रहे हैं।

होटल में क्वारंटाइन लोगों का जीएसटी माफ : राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली :दिल्ली सरकार के जीएसटी विभाग ने राजधानी के होटलों में 14 दिनों तक क्वारंटाइन में रहने वाले लोगों का जीएसटी माफ कर दिया गया है। शुक्रवार को जारी आदेश कहा गया है कि जिन होटलों को दिल्ली सरकार द्वारा संदिग्ध मरीजों को क्वारंटाइन में रखने के लिए चिह्नित किया गया है, वे सभी ऐसे संदिग्ध मरीजों से कमरे के किराये के साथ जीएसटी नहीं वसूलेंगे। होटलों को ऐसे जीएसटी बिल के लिए जीएसटी विभाग में क्लेम करना होगा। गौरतलब है कि दिल्ली सरकार द्वारा क्वारंटाइन लिए चिह्नित होटलों का किराया 31 सौ रूपये प्रतिदिन है। जीएसटी लगने पर यह किराया 3600 रुपये प्रतिदिन होता है। दिल्ली सरकार के निर्णय से होटल में क्वारंटाइन रहने वालों को फायदा मिलेगा।

गरीबों की आधी-अधूरी मदद कर रही दिल्ली सरकार : कांग्रेस

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली : प्रदेश कांग्रेस ने दिल्ली सरकार पर लॉकडाउन के दौरान गरीबों की आधी-अधूरी मदद करने का आरोप लगाया है। पार्टी का कहना है कि करीब सप्ताह भर पहले प्रदेश अध्यक्ष अनिल चौधरी सहित पांचों उपाध्यक्षों ने उपराज्यपाल अनिल बैजल और मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को पत्र लिखकर जो सुझाव दिए थे, वे बेनतीजा रहे। मुख्यमंत्री और उपराज्यपाल ने उन पर कोई गंभीरता नहीं दिखाई।

प्रदेश कांग्रेस के उपाध्यक्ष एवं पूर्व विधायक जयकिशन ने बयान जारी कर कहा है कि राशन कार्ड वालों को कम राशन दिया जा रहा है। अब नया राशन कार्ड बनवाने के लिए ऑनलाइन आवेदन करने की बात कहकर गुमराह किया जा रहा है। ये लोग ऑनलाइन आवेदन कैसे करेंगे? जयकिशन ने कहा कि ऑटो रिक्शा और ई-रिक्शा वालों को पांच हजार रुपये की मदद बहुत कम है। इतने में न तो इनके रिक्शे का किराया पूरा होगा और न ही किस्त भरी जाएगी। यह राशि 15 हजार होनी चाहिए। दिहाड़ी मजदूरों की मदद भी बहुत कम है। साप्ताहिक बाजार बंद होने के कारण छोटे-छोटे दुकानदार, रेहड़ी पटरी पर खाने-पीने का सामान बेचने वाले, घरेलू सहायकों की तरफ भी सरकार ने कोई ध्यान नहीं दिया है।

जयकिशन ने कहा कि कोरोना जैसी भयानक बीमारी में अपनी जान हथेली पर रखकर सफाई करने वाले सफाई, मलेरिया, उद्यान वर्कर्स, स्वास्थ्य विभाग के नगर निगम कर्मचारियों को समय पर वेतन नहीं मिल रहा है।

कोरोना से जंग के लिए अस्पतालों में 243 वेंटिलेटर

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली

कोरोना वायरस के संक्रमण से लड़ने के लिए दिल्ली सरकार के अस्पतालों में फिलहाल इंतजाम दुरुस्त नजर आ रहे हैं। कोरोना से निपटने के लिए दिल्ली के स्वास्थ्य विभाग ने पांच अस्पतालों को अधिकृत किया है। वहीं राजधानी में मौजूद केंद्र के चारों बड़े अस्पतालों में भी इससे निपटने की व्यवस्था की गई है। फिलहाल स्वास्थ्य विभाग ने कोरोना के इलाज के लिए अधिकृत अस्पतालों में 243 वेंटिलेटर की व्यवस्था की है।

मौजूदा परिस्थिति में तो यह पर्याप्त है, लेकिन यदि संक्रमण ज्यादा बढ़ा और हालत बिगड़े तो वेंटिलेटर कम पड़ सकते हैं। हालांकि जरूरत पड़ने पर वेंटिलेटर बढ़ाने की योजना है।

स्वास्थ्य विभाग के अनुसार कोरोना के लिए अधिकृत अस्पतालों में मौजूदा समय में 3261 पीपीई किट हैं। ऐसे में फिलहाल डॉक्टरों व नर्सों को पीपीई किट उपलब्ध हो पा रही है। अभी सिर्फ कोरोना के इलाज के लिए गठित टीम के सदस्यों को ही एन-95 मास्क उपलब्ध हो पा रहा है।

दिल्ली नर्सेज फेडरेशन के महासचिव लीलाधर रामचंदानी ने कहा कि अस्पतालों में एन-95 मास्क की बहुत कमी है। कोरोना के वार्ड में कार्यरत कर्मचारियों को तो यह उपलब्ध हो पा रहा है, लेकिन इमरजेंसी के आइसीयू में कार्यरत कर्मचारियों को एन-95 मास्क उपलब्ध नहीं हो पा रहा है, जबकि इमरजेंसी में कोरोना के संदिग्ध मरीज भी पहुंच रहे हैं। इससे इमरजेंसी में काम करने वाले डॉक्टरों व नर्सिंग कर्मचारियों को भी संक्रमण का खतरा है।

वेंटिलेटर की कमी बता रहे विशेषज्ञ : सोशल ज्यूरिस्ट एनजीओ के संस्थापक अशोक अग्रवाल ने कहा कि सरकारी अस्पतालों में पहले ही वेंटिलेटर की कमी है। निजी अस्पतालों में 35 फीसद तक आइसीयू बेड हैं, जबकि सरकारी अस्पतालों में कुल बेड का पांच फीसद भी आइसीयू बेड नहीं हैं। अदालत ने सरकारी अस्पतालों में कुल बेड का 10 फीसद आइसीयू बेड सुनिश्चित करने का निर्देश दिया था, जिस पर अमल करने की जरूरत है।

बढ़ेंगे वेंटिलेटर : कोरोना से निपटने के लिए तैयार स्वास्थ्य विभाग की योजना के अनुसार सिर्फ 14 से 15 फीसद मरीजों की ही स्थिति गंभीर होती है, जिनमें से पांच फीसद मरीजों को आइसीयू बेड की जरूरत पड़ सकती है। ऐसे में मामले बढ़ने पर लोकनायक अस्पताल में 200 वेंटिलेटर की व्यवस्था की जा सकती है। वहीं राजीव गांधी अस्पताल में भी वेंटिलेटर बढ़ाए जाएंगे।

अस्पतालों में उपलब्ध संसाधन

वेंटिलेटर	243
पीपीई किट	3261
सर्जिकल मास्क	4,63,450
एन-95 मास्क	20,566
सैनिटाइजर	22,366

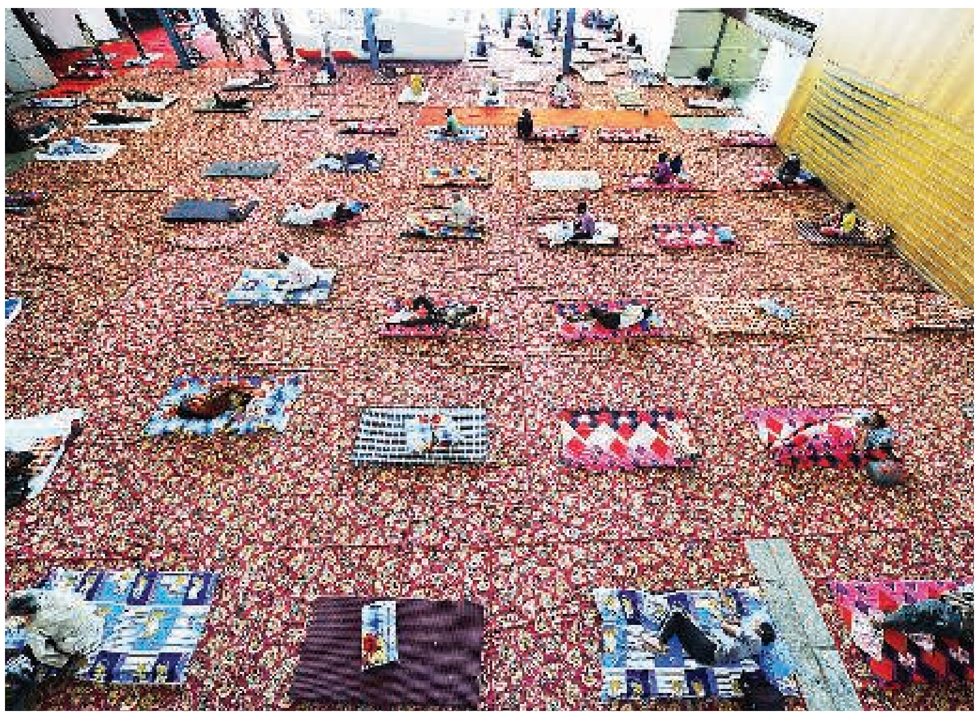

बरती जा रही सतर्कता

दिल्ली के एक स्पोर्ट्स कांप्लेक्स में बेघर लोगों का दृश्य। कोरोना वायरस के संक्रमण के मद्देनजर शारीरिक दूरी का समुचित ध्यान रखा गया है। बिस्तर एक निश्चित दूरी पर लगाए गए हैं। प्रेट्र

'स्वास्थ्य कर्मियों की सुरक्षा सबसे अहम'

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली

राजनिवास में कोरोना को लेकर अफसरों के साथ बैठक करते उपराज्यपाल अनिल बैजल। सौ. राजनिवास

उपराज्यपाल अनिल बैजल ने कहा है कि कोरोना से जंग में स्वास्थ्य कर्मियों की सुरक्षा सबसे अहम है। इसलिए फ्रंटलाइन स्वास्थ्य कर्मियों की सुरक्षा और स्वास्थ्य के मद्देनजर सभी आवश्यक चिकित्सा उपकरण की खरीदारी यथाशीघ्र की जाए।

उपराज्यपाल शुक्रवार को वीडियो कांफ्रेंस के जरिये उपमुख्यमंत्री, मुख्य सचिव, जिला अधिकारियों, जिला पुलिस उपायुक्त और अन्य अधिकारियों के साथ लॉकडाउन एवं कोविड-19 की रोकथाम के उपायों पर समीक्षा बैठक कर रहे थे। बैठक में उपराज्यपाल ने जोर देकर कहा कि कोरोना के खिलाफ निर्णायक लड़ाई में लॉकडाउन का पालन सबसे मजबूत हथियार है। इस परिदृश्य में कोविड -19 के प्रसार को रोकने के लिए इन चार स्तंभों-टेस्टिंग, ट्रेसिंग, आइसोलेशन और क्वारंटाइन पर मुख्य फोकस होना चाहिए।

जिला अधिकारियों और पुलिस उपायुक्तों ने उपराज्यपाल को बताया कि उनके अधिकार क्षेत्र में खाद्यान्न वितरण केंद्रों, राशन की दुकानों और अन्य स्थानों पर सामाजिक दूरी का सख्ती से पालन किया जा रहा है। उपराज्यपाल ने उनके प्रयासों की सराहना की और निर्देश दिए कि इस संबंध में जागरूकता कार्यक्रमों को और तेज किया जाए।

उपराज्यपाल ने निर्देश दिए कि सभी होम क्वारंटाइन मामलों की सख्ती से निगरानी की जाए और उल्लंघन करने वालों के खिलाफ कठोर कार्रवाई हो। पुलिस आयुक्त ने बताया कि तकनीक और सूचना के बेहतर तालमेल एवं इस्तेमाल से सभी कोरोना वायरस के मरीजों के संपर्कों की पहचान कर ली गई है तथा होम कोरंटाइन का उल्लंघन करने वाले 95 व्यक्तियों के विरुद्ध मामले दर्ज किए गए हैं। उन्होंने आगे बताया कि स्वास्थ्य विभाग और पुलिस प्रशासन ने 20,408 होम क्वारंटाइन के मामलों की सक्रिय निगरानी की सलाह दी है, जिनकी निगरानी की जा रही है। पुलिस आयुक्त ने बताया कि लॉकडाउन का सख्ती से पालन कराया जा रहा है और उल्लंघन करने वालों पर केस दर्ज कर उन्हें हिरासत में लिया जा रहा है। इसके अलावा ई-पास की सघन जांच की जा रही है और दुरुपयोग करने वालों पर कार्रवाई की जा रही है।

छात्रों के लिए मददगार साबित हो रही हेल्पलाइन

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

कोरोना संक्रमण के चलते देशव्यापी लॉकडॉउन के बाद राष्ट्रीय राजधानी में हजारों छात्र भी जहां के तहां फंस गए। दिल्ली विश्वविद्यालय, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, जामिया मिल्लिया, आंबेडकर विश्वविद्यालय, आइआइटी और दूसरे शिक्षा संस्थानों में हजारों छात्र अध्ययनरत हैं। वहीं, मुखर्जी नगर, करोलबाग, सत्यनिकेतन और राजेंद्र नगर जैसे इलाकों में पीजी और निजी हॉस्टल्स में रहकर कई छात्र प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करते हैं। बहुत से छात्रों के पास दिल्ली का कोई पहचान पत्र भी नहीं है। ऐसे में उन्हें घर से बाहर निकलने में भी परेशानी हो रही है। ऐसे में छात्रों की भारी दिक्कत को देखते हुए राष्ट्रवादी संगठन 'युवा' छात्रों के लिए किसी देवदूत की तरह सामने आया है।

राजधानी के विभिन्न हिस्सों में रहने वाले छात्रों के लिए युवा ने हेल्पलाइन नंबर जारी किया। इस हेल्पलाइन का नंबर 8800868686 है, जिसके जारी होने के बाद सैकड़ों छात्रों ने फोन कर अपनी-अपनी समस्या बताई और मदद के लिए आग्रह किया।

युवा के दिल्ली प्रदेश संयोजक रजनीश ने बताया कि अधिकांश छात्रों के सामने भोजन की समस्या है, क्योंकि लॉकडॉउन के बाद हॉस्टल के कुक और दूसरे कर्मचारी घर चले गए थे और खाना बनाने की सामग्री भी नहीं बची थी। ऐसे में 'युवा' की ओर से जारी हेल्पलाइन ने लॉकडॉउन में फंसे छात्रों के लिए संजीवनी का काम किया।

रजनीश बताते हैं कि उन्होंने दिल्ली को 30 भागों में बांट कर छात्रों की मदद के लिए समन्वय का काम शुरू कर किया है। युवा से जुड़े कार्यकर्ता छात्रों की मांग पर उन्हें भोजन, नाश्ता, पानी, दवाइयां, नकदी, राशन सामग्री और गैस के सिलेंडर जैसी वस्तुओं की आपूर्ति कर रहे हैं। इस हेल्पलाइन पर रोज सैकड़ों छात्र फोन कर मदद मांग रहे कैं, जिन्हें युवा कार्यकर्ता पूरा कर रहे हैं।

सहायता के लिए सेवा भारती ने जारी किए नंबर

कोराना वायरस संक्रमण के बाद राष्ट्रीय लॉकडॉउन की घोषणा होने से बहुत से लोगों को परेशानियों और दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। देश की राजधानी दिल्ली में ऐसे बहुत से लोग हैं जो संकट की इस घड़ी में मदद के लिए परेशान हैं। प्रशासन और सरकार की मदद हर व्यक्ति के पास नहीं पहुंच पा रही है। संकट की इस घड़ी में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के कई प्रकल्पों ने अपने स्वयंसेवकों को लोगों की सेवा के लिए लगाया है और कई हेल्पलाइन नंबर जारी किए हैं। इनमें पूर्वोत्तर के लोगों के लिए हेल्प लाइन नंबर 9650530531, दिव्यांग लोगों की मदद के लिए भी 800111090 और कोरोना संक्रमण की जानकारी देने के लिए 8010066066 हेल्पलाइन नंबर जारी किया है। राजधानी दिल्ली के तमाम लोग इन नंबरों पर फोन कर मदद प्राप्त कर रहे हैं। इससे उन्हें राहत मिल रही है।

पुत्र ने पिता के खिलाफ दर्ज कराया केस

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली : दिल्ली में एक व्यक्ति ने बार-बार लॉकडाउन का उल्लंघन करने पर अपने पिता के खिलाफ वसंत कुंज साउथ थाने में मामला दर्ज करा दिया। पुलिस के सख्त कार्रवाई करने व क्वारंटाइन सेंटर भेजने की चेतावनी देने पर बुजुर्ग बड़ी मुश्किल से माने।

रजोकरी गांव निवासी अभिषेक सिंह पहली अप्रैल को थाने पहुंचे और पुलिस को शिकायती पत्र दिया जिसमें कहा गया कि लॉकडाउन के बावजूद उसके पिता वीरेंद्र सिंह बार-बार घर के बाहर निकलकर सड़क पर टहलते हैं। इससे पूरे परिवार पर कोरोना वायरस के संक्रमण का खतरा हो सकता है।

पुलिस ने वीरेंद्र सिंह को कई बार समझाया लेकिन वह नहीं माने और सड़क पर टहलने की जिद करते रहे। इस पर अभिषेक ने पिता के खिलाफ मामला दर्ज करवा दिया। पुलिस द्वारा क्वारंटाइन सेंटर भेजने की चेतावनी के बाद बुजुर्ग ने लॉकडाउन का पालन शुरू करते हुए घर से निकलना बंद कर दिया है।

लोकनायक व जीबी पंत अस्पताल में होगा सिर्फ कोरोना पीड़ितों का इलाज

▸ अगले कुछ दिनों तक बंद रहेगी दोनों अस्पतालों में ओपीडी सेवा

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली

दिल्ली सरकार के लोकनायक व जीबी पंत अस्पताल में ओपीडी सेवा अगले कुछ दिनों तक बंद रहेगी। इन दोनों अस्पतालों में सिर्फ कोरोना से पीड़ित लोगों का इलाज होगा। इसलिए स्वास्थ्य विभाग ने फैसला किया है कि शनिवार से इन दोनों अस्पतालों में ओपीडी बंद रहेगी। सिर्फ इमरजेंसी सेवा जारी रहेगी। लोकनायक अस्पताल में भूतल पर इमरजेंसी में गंभीर मरीजों का इलाज होगा। इमरजेंसी में प्रतिदिन करीब एक हजार मरीज इलाज के लिए पहुंचते हैं। ओपीडी सेवा बंद होने से इमरजेंसी में मरीजों का दबाव बढ़ सकता है। हालांकि गायनी ब्लॉक में प्रसूति विभाग में सुचारू रूप से इलाज की सुविधा उपलब्ध रहेगी। जीबी पंत अस्पताल में भी इमरजेंसी सेवा उपलब्ध होगी। इमरजेंसी में खास तौर पर हार्ट व न्यूरो के मरीजों को इलाज उपलब्ध कराने का निर्देश दिया गया है। साथ में यह भी निर्देश दिया गया है कि लोकनायक से हार्ट व न्यूरो के रेफर मरीजों को भी जीबी पंत अस्पताल में इलाज उपलब्ध कराना होगा। इन दोनों अस्पतालों में ओपीडी पंजीकरण का समय पहले की कम कर दिया गया था। इसके अलावा लॉकडाउन के बाद अस्पताल में मरीज भी आने कम हो गए थे। इस वजह से ओपीडी में मरीजों की संख्या आधे से भी ज्यादा कम हो गई थी। मौजूदा समय में कोरोना के सबसे ज्यादा मरीज लोकनायक अस्पताल में ही भर्ती हैं।

डॉक्टरों को संविदा पर रखेगा रेलवे : कोरोना संक्रमण के मामले जिस तरह से बढ़ रहे हैं, उसे देखते हुए रेल प्रशासन अपनी तैयारी में कोई कमी नहीं छोड़ना चाहता है। पैरा मेडिकल स्टाफ के साथ ही डॉक्टर भी संविदा पर रखे जा सकते हैं। दिल्ली रेल मंडल में भी कोरोना पीड़ितों के इलाज के लिए अस्थायी डॉक्टरों की भर्ती की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है।

घर बैठे किताबों की दुनिया में घूम रहे लोग

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली : लॉकडाउन के इस पीरियड में किताबें भी लोगों की मित्र बन रही हैं। राष्ट्रीय पुस्तक न्यास (एनबीटी) के सटे होम इंडिया विद बुक्स कार्यक्रम को खासा पसंद किया जा रहा है। इसके जरिये एनबीटी की वेबसाइट से लोग मुफ्त किताबें डाउनलोड कर पढ़ रहे हैं।

गौरतलब है कि कोरोना से जंग के बीच एनबीटी ने सप्ताह भर पहले अपनी वेबसाइट एनबीटी इंडिया डॉट जीओवी डॉट इन पर 100 से अधिक किताबें पीडीएफ में तैयार कर अपलोड करने की पहल की थी। गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर और प्रेमचंद जैसे ढेरों नामी लेखकों की ओर से लिखित एवं 18 भाषाओं में प्रकाशित इन पुस्तकों को मुफ्त में डाउनलोड कर पढ़ा जा सकता है। हर आयु वर्ग के पाठकों को ध्यान में रखकर वेबसाइट पर अपलोड की गई किताबों में से कई किताबें राष्ट्रपिता महात्मा गांधी पर भी आधारित हैं।

एनबीटी की जनसंपर्क उपनिदेशक कंचन शर्मा के मुताबिक एक सप्ताह में ही एनबीटी की वेबसाइट से एक हजार किताबें डाउनलोड की जा चुकी हैं। सबसे ज्यादा बच्चों की किताबें पसंद की जा रही हैं। एनबीटी अभी और किताबें अपलोड करने में लगा है। उन्होंने उम्मीद जताई कि आगे आगे यह संख्या बढ़ती ही जाएगी। डिजिटल मार्केटिंग के क्षेत्र में लेखन करने वाले उपेंद्र राणा भी इस डिजिटल क्रांति की प्रशंसा करते नहीं थकते। सात किताबों के लेखक उपेंद्र कहते हैं, आज पठन-पाठन ऑनलाइन संभव है। यह आसान भी है और समय व्यतीत करने का बेहतरीन जरिया भी है। वे कहते हैं कि कोरोना की वजह से लॉकडाउन के चलते इस समय लोग घरों में ही रहते हुए ऑनलाइन किताबें खूब पढ़ रहे हैं। उनका कहना है कि ऑनलाइन के क्षेत्र में ज्ञान ही नहीं, रोजगार के अवसर भी भरपूर हैं।

लॉकडाउन में 'आजाद' हुई राजधानी की हवा

राहत

व्यस्त घंटों में भी दिल्ली-एनसीआर के वायु प्रदूषण में हुआ सुधार, पीएम 2.5 में 64 तो नाइट्रोजन ऑक्साइड में 75 फीसद की कमी

संजीव गुप्ता, नई दिल्ली

लॉकडाउन ने दिल्ली-एनसीआर के घरों के दरवाजे भले ही बंद कर दिए हों, लेकिन हवा को प्रदूषण से बिल्कुल मुक्त कर दिया है। आलम यह है कि सुबह व शाम के अति व्यस्त घंटों में भी इन दिनों हवा एकदम साफ चल रही है। प्रमुख प्रदूषक तत्व पीएम 2.5 और नाइट्रोजन ऑक्साइड (एनओ 2) भी क्रमशः 64 और 75 फीसद तक कम हो गए हैं।

गौरतलब है कि दिल्ली-एनसीआर में सुबह 8 से 11 जबकि शाम को 5 से 9 बजे तक का समय अति व्यस्त घंटों (पीक अवर्स) में गिना जाता है। यह वही समय होता है, जब सड़कों पर वाहनों की संख्या और यातायात दबाव सर्वाधिक होता है। इस दौरान वाहनों के धुएं और ईंधन की वजह से प्रदूषण भी सबसे ज्यादा उत्पन्न होता है। सफर और टेरी भी अपनी रिपोर्ट में स्पष्ट कर चुके हैं कि दिल्ली-एनसीआर के वायु प्रदूषण में 40 फीसद से अधिक योगदान वाहनों के प्रदूषण का ही होता है।

दूसरी तरफ कोरोना वायरस के संक्रमण की चेन तोड़ने के लिए चल रहे इस लॉकडाउन पीरियड में लोगों के पैर ही नहीं, वाहनों के पहिए भी थम गए हैं। औद्योगिक इकाइयां भी बंद हैं। नतीजा, हवा भी पूरी तरह से प्रदूषण मुक्त हो गई है। अतिव्यस्त घंटों में भी प्रदूषण का नामोनिशान नजर नहीं आ रहा। आसमान तो एकदम नीला देखा जा ही सकता है, दूर-दूर तक की सड़क और इमारतें भी साफ नजर आने लगी हैं।

पर्यावरण विशेषज्ञों का कहना है कि बेशक इन दिनों लॉकडाउन के चलते प्रदूषण खत्म हुआ है, मगर इससे यह भी साबित हो गया है कि निजी वाहनों पर निर्भरता कम करके और सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा देकर वायु प्रदूषण को आगे भी नियंत्रित किया जा सकता है।

लॉकडाउन के दौरान सड़कों पर चारों तरफ सन्नाटा नजर आ रहा है। वाहनों का आवाजाही नहीं होने, फैक्ट्रियां बंद होने आदि से राजधानी से प्रदूषण लगभग खत्म हो गया है। इससे मौसम भी पूरी तरह से साफ है। नई दिल्ली व पुरानी दिल्ली का एक मनोरम दृश्य। ध्रुव कुमार

सेंटर फॉर साइंस एंड एंवायरमेंट (सीएसई) के सस्टेनेबल सिटीज प्रोग्राम के कार्यक्रम प्रबंधक अविकल सोमवंशी कहते हैं कि प्रदूषण मुक्त हवा में सांस लेने के लिए दिल्ली-एनसीआर वासियों को अपनी जीवनशैली और दिनचर्या में कुछ बदलाव तो करना ही होगा। औद्योगिक प्रदूषण पर भी लगाम लगानी होगी।

दिल्ली-एनसीआर में कहां कितना कम हुआ पीएम 2.5 और एन ओ 2

शहर	पीएम 2.5	एन ओ 2
दिल्ली	57 फीसद	64 फीसद
गुरुग्राम	69 फीसद	66 फीसद
फरीदाबाद	62 फीसद	40 फीसद
गाजियाबाद	64 फीसद	75 फीसद
नोएडा	62 फीसद	79 फीसद

लॉकडाउन से कोरोना पर तो वार हुआ ही है, वायु प्रदूषण भी पूरी तरह काबू में आ गया है। लॉकडाउन खत्म हो जाने के बाद भी यदि थोड़ा ध्यान रखा जाए तो सांस लेने के लिए यह साफ हवा भविष्य में भी मिल सकती है। इसी दिशा में बीएस-6 भी अनिवार्य किया गया है।

-भूरेलाल, अध्यक्ष, पर्यावरण प्रदूषण नियंत्रण एवं संरक्षण प्राधिकरण (ईपीसीए)

7,195 से ज्यादा वैगन खाद्यान्न और 64,567 वैगन कोयले का परिवहन किया है रेलवे ने लॉकडाउन के दौरान देशभर में आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति के लिए पिछले तीन दिनों में। रेल मंत्रालय ने यह जानकारी दी है।

दिहाड़ी मजदूरों को तत्काल वेतन दिलाने की मांग पर सरकार को नोटिस

कोरोना का असर

- जनहित याचिकाओं पर सुप्रीम कोर्ट ने सरकार से मांगा जवाब

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

सुप्रीम कोर्ट। फाइल

कोरोना महामारी के कारण बेरोजगार हो गए दिहाड़ी और प्रवासी मजदूरों को तत्काल न्यूनतम वेतन का भुगतान सुनिश्चित किए जाने की मांग पर सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र सरकार को नोटिस जारी कर जवाब मांगा है। कोर्ट मामले पर सात अप्रैल को फिर सुनवाई करेगा।

सरकार को ये नोटिस न्यायमूर्ति एल. नागेश्वर राव व दीपक गुप्ता की पीठ ने हर्ष मंदर और अंजली भारद्वाज की ओर से दाखिल जनहित याचिका पर वीडियो कांफ्रेसिंग के जरिये अर्जेंट सुनवाई में दिए। याचिकाकर्ता की ओर से पेश वकील प्रशांत भूषण का कहना था कि कोरोना महामारी के चलते लाखों प्रवासी और दिहाड़ी मजदूर बेरोजगार हो गए हैं और उनके रहने खाने का संकट खड़ा हो गया है। याचिका में जीवन के अधिकार की दुहाई दी गई है। हालांकि केंद्र सरकार की ओर से पेश सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने हर्ष मंदर और अंजली भारद्वाज की ओर से दाखिल इस जनहित याचिका का विरोध किया। उन्होंने कहा कि देश कोरोना महामारी के चलते अप्रत्याशित परिस्थितियों से गुजर रहा है। जिन्होंने यह जनहित याचिका दाखिल की है वे इस मुश्किल समय में लोगों की मदद के लिए कुछ नहीं कर रहे हैं। ये पीआइएल की दुकानें बंद होनी चाहिए। जो वास्तविक लोग हैं वे फील्ड में लोगों की मदद कर रहे हैं। इस तरह एसी कमरे में बैठ कर पीआइएल दाखिल करने से कुछ नहीं होगा। सॉलीसिटर जनरल ने कहा कि सरकार लगातार इस दिशा में काम कर रही है और बहुत से कदम उठाए गए हैं। लेकिन पीठ ने उनकी दलीलों पर कहा कि यह मामला प्रवासी मजदूरों और दिहाड़ी मजदूरों की समस्याओं से जुड़ा है। वे देखना चाहते हैं कि सरकार ने क्या कदम उठाए हैं। इस पर मेहता ने कहा कि अगर कोर्ट चाहता है तो वे जवाब देंगे।

दाखिल याचिका में कहा गया है कि कोरोना के चलते अचानक घोषित हुए लॉकडाउन से हजारों प्रवासी मजदूरों और दिहाड़ी मजदूरों का रोजगार चला गया है। सरकार की ओर से जारी आदेश में कहा गया है कि जहां ये प्रवासी और दिहाड़ी मजदूर काम करते थे। वे कंपनियां या प्रतिष्ठान लोग उन्हें लॉकडाउन के दौरान का वेतन देंगे। साथ ही मकान मालिक भी उनसे किराया नहीं लेंगे लेकिन यह आदेश व्यवहारिक नहीं है क्योंकि बहुत से प्रतिष्ठान बहुत छोटे हैं उनके लिए पैसे देना मुश्किल है। ऐसे में केंद्र और राज्य सरकारें सुनिश्चित करें कि प्रवासी और दिहाड़ी मजदूरों को एक सप्ताह के भीतर न्यूनतम वेतन दिया जाए।

पलायन कर रहे मजदूरों को होटलों में शरण देने की याचिका खारिज

- सरकार की ओर से पेश सॉलिसिटर जनरल ने याचिका पर जताई आपत्ति
- कहा, सड़क पर नहीं अब कोई कामगार

नई दिल्ली, प्रेट्र : कोरोना वायरस के प्रोकप को देखते हुए देशव्यापी लॉकडाउन के कारण विभिन्न शहरों से अपने गांव व शहर पैदल जा रहे कामगारों को रास्ते में पड़ने वाले होटलों व रिजार्ट में शरण देने की मांग करने वाली याचिका को सुप्रीम कोर्ट ने खारिज कर दिया।

जस्टिस एल. नागेश्वर राव और दीपक गुप्ता की खंडपीठ ने वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये इस याचिका पर सुनवाई करते हुए कहा कि अदालत सरकार को लाखों तरह के सुझाव लेकर आने वाले सभी लोगों की बात सुनने को बाध्य नहीं कर सकती। ऐसा करना मुमकिन भी नहीं है क्योंकि इसमें सरकार को काफी वक्त लग सकता है।

केंद्र सरकार की ओर से पेश हुए सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने इस याचिका पर आपत्ति करते हुए कहा कि पलायन करने वाले कामगारों को रास्ते में शरण देने के लिए राज्य सरकारों ने स्कूल-कॉलेजों व अन्य इमारतों को कब्जे में लिया है। उल्लेखनीय है लॉकडाउन के बाद पलायन करने वाले कामगारों के पक्ष में सुप्रीम कोर्ट में अनेक याचिकाएं दायर की गईं।

31 मार्च को मुख्य न्यायाधीश एस. ए बोवडे ने केंद्र सरकार को निर्देशित किया था कि वह पलायन करने वालों को रास्ते में रोककर आश्रय, भोजन और चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराए। कोरोना वायरस से ज्यादा दहशत को घातक बताते हुए शीर्ष अदालत ने केंद्र को पलायन करने वालों का भय दूर करने के लिए सभी धर्मों के गुरुओं को साथ लेकर अभियान चलाने का भी निर्देश चुकी है। कोर्ट इसके साथ ही कोरोना के बारे में 24 घंटे ताजा जानकारी देने वाला पोर्टल शुरू करने का भी निर्देश दे चुका है। सॉलिसिटर जनरल ने 31 मार्च को कोर्ट में बताया था कि इस समय कोई कामगार सड़क पर नहीं है। सब या तो घर पहुंच गए हैं या किसी आश्रय स्थल में हैं। इसलिए इस याचिका को खारिज कर देना ही सही है।

मास्क व सैनिटाइजर की निर्धारित कीमतों का प्रचार होगा

नई दिल्ली, प्रेट्र : केंद्र सरकार ने सुप्रीम कोर्ट को आश्वस्त किया है कि कोरोना वायरस के प्रकोप के चलते मास्क व सैनिटाइजर की निर्धारित दर से अधिक कीमत वसूलने से रोकने के लिए स्थापित हेल्पलाइन नंबरों का प्रचार किया जाएगा। जस्टिस एल. नागेश्वर राव व जस्टिस दीपक गुप्ता की खंडपीठ एनजीओ जस्टिस फॉर राइट्स फाउंडेशन की इस संबंध में दायर याचिका पर सुनवाई कर रही थी। याचिका में सभी लोगों को उचित दर पर मास्क, सैनिटाइजर व साबुन उपलब्ध कराने की मांग की गई थी।

कोविड-19 की मुफ्त जांच की मांग पर केंद्र से जवाब तलब

देश के सभी नागरिकों की कोविड-19 संबंधी जांच मुफ्त कराए जाने की मांग को लेकर दायर एक जनहित याचिका पर सुनवाई करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र सरकार और अन्य संबंधित पक्षों से जवाब मांगा है। जस्टिस एल. नागेश्वर राव व जस्टिस दीपक गुप्ता की खंडपीठ ने वीडियो कांफ्रेंसिंग से सुनवाई करते हुए याचिका दायर करने वाले वकील शशांक देव सुधी से इसकी प्रति क्रेंद्र सरकार का प्रतिनिधित्व कर रहे सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता को मेल करने को कहा है। इस याचिका पर अब अगले सप्ताह सुनवाई होगी। सुधी ने अपनी याचिका में जांच की सुविधाएं बढ़ाए जाने के साथ इंडियन कौंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च (आइसीएमआर) द्वारा प्राइवेट अस्पतालों में जांच की फीस 4500 करने पर भी सवाल उठाया है।

दवा और आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति सुनिश्चित करने के उपायों पर हुई चर्चा

बैठक ▸ मंत्रियों के समूह ने रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह के निवास पर किया विचार-विमर्श

राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन से उत्पन्न स्थितियों का किया गया आकलन

लॉकडाउन के दौरान जरूरी वस्तुओं की आपूर्ति सुनिश्चित रखने के लिए नई दिल्ली में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह (दाएं) की अध्यक्षता में मंत्री समूह की बैठक हुई। गृह मंत्री अमित शाह भी बैठक में मौजूद रहे। प्रेट्र

नई दिल्ली, प्रेट्र : देश में कोरोना वायरस के मामलों में अचानक वृद्धि से जूझते हुए सरकार ने शुक्रवार को स्वास्थ्य प्रणाली की विस्तृत समीक्षा की और साथ ही 21 दिन के राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन से उत्पन्न स्थिति का आकलन किया। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह की अध्यक्षता में मंत्रियों के एक समूह द्वारा यह समीक्षा की गई। इसमें केंद्रीय मंत्रिमंडल के कई प्रमुख सदस्य-गृह मंत्री अमित शाह, खाद्य मंत्री रामविलास पासवान, रेल मंत्री पीयूष गोयल, पेट्रोलियम मंत्री धर्मेंद्र प्रधान और सूचना-प्रसारण मंत्री प्रकाश जावड़ेकर शामिल थे।

अधिकारियों ने कहा कि मंत्रियों ने कोरोना वायरस के मामलों की बढ़ती संख्या से निपटने के लिए विभिन्न व्यवस्थाओं पर विचार-विमर्श किया। साथ ही लॉकडाउन के दौरान दवा और आवश्यक वस्तुओं की पर्याप्त आपूर्ति सुनिश्चित करने के उपायों पर चर्चा की। सरकारी सूत्रों ने कहा कि देशभर में आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति का जायजा लिया गया, जो सुचारु रूप से चल रहा है। ट्रकों और मालवाहक गाड़ियों से खाद्य सामग्री की लोडिंग और अनलोडिंग में मजदूरों की कमी से उत्पन्न कठिनाइयों के निदान पर भी चर्चा हुई।

सूत्रों ने कहा कि प्रवासी कामगारों के आवागमन पर मंत्रियों ने कहा कि इस मुद्दे को सुलझा लिया गया है और राज्य सरकारों द्वारा स्थापित अस्थायी शेल्टरों में उनकी देखभाल की जा रही है।

बैठक में रसायन और उर्वरक मंत्री डीवी सदानंद गौड़ा, कृषि और ग्रामीण विकास मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर, मानव संसाधन विकास मंत्री रमेश पोखरियाल निशंक, महिला और बाल विकास मंत्री स्मृति ईरानी, जल शक्ति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत और नागरिक उड्डयन मंत्री हरदीप सिंह पुरी भी शामिल थे। मंत्रियों ने हजारों स्वास्थ्य पेशेवरों, पुलिस, अर्धसैनिक और सशस्त्र बलों की कड़ी मेहनत और देशभर में आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति बनाए रखने में लगे लोगों की सराहना की। उन्होंने कहा कि इनके बगैर देश में लॉकडाउन को सफल बनाना मुमकिन नहीं था।

आनंद विहार, निजामुद्दीन की घटनाओं से कोरोना के खिलाफ मुहिम को झटका

- राष्ट्रपति ने कहा, लॉकडाउन के दौरान कोई भूखा न रहे
- अदृश्य शत्रु से लड़ने में शिथिलता की गुंजाइश नहीं

राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने शुक्रवार को राज्यपालों, उपराज्यपालों और प्रशासकों से वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से कोरोना वायरस के मुद्दे पर चर्चा की। एएनआइ

नई दिल्ली, प्रेट्र : राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने आनंद विहार में प्रवासी श्रमिकों के इकट्ठा होने और निजामुद्दीन में तब्लीगी जमात के मरकज पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि इन दो घटनाओं ने कोरोना वायरस का मुकाबला करने के प्रयासों को करारा झटका दिया। राज्यपालों, लेफ्टिनेंट गवर्नरों और राज्यों-केंद्र शासित प्रदेशों के अधिकारियों के साथ एक वीडियो कांफ्रेंस में राष्ट्रपति ने यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता पर जोर दिया कि कोरोना वायरस के खिलाफ लॉकडाउन के दौरान कोई भी भूखा न रहे।

राष्ट्रपति भवन द्वारा शुक्रवार को जारी बयान में कहा गया कि सम्मेलन में इस बात पर आम सहमति थी कि अदृश्य शत्रु से लड़ने में शिथिलता या आत्मसंतुष्टि की कोई गुंजाइश नहीं है। इस सिलसिले में राष्ट्रपति ने देश के कुछ हिस्सों में डॉक्टरों, स्वास्थ्य कर्मियों और पुलिस कर्मियों पर हमले की घटनाओं पर चिंता व्यक्त की। राष्ट्रपति ने कहा कि कोविड-19 महामारी के खिलाफ लड़ाई में देश के लोगों ने अनुकरणीय साहस, अनुशासन और एकजुटता दिखाते हुए मिसाल कायम की है। हालांकि, उन्होंने कहा कि आनंद विहार में प्रवासी कामगारों का जमावड़ा और निजामुद्दीन में तब्लीगी जमात के मरकज से वायरस का मुकाबला करने के प्रयासों को झटका लगा।

इसके अलावा उन्होंने यह सुनिश्चित करने पर भी जोर दिया कि भोजन और अन्य आवश्यक वस्तुएं जरूरतमंदों तक उपलब्ध कराई जाए। उन्होंने कहा कि शारीरिक दूरी के सवाल पर कोई समझौता न किया जाए।

धर्मगुरुओं को प्रेरित करें कि उनके अनुयायी मंडली न बनाएं : वेंकैया

उपराष्ट्रपति एम वेंकैया नायडू ने शुक्रवार को राज्यपालों और उपराज्यपालों से कहा कि वे आध्यात्मिक नेताओं को इस बात के लिए प्रेरित करें कि उनके अनुयायी मंडली न बनाएं। उन्होंने उनसे कोरोना वायरस का प्रसार रोकने की खातिर शारीरिक दूरी का पालन करने के लिए कहने का भी अनुरोध किया। वीडियो कांफ्रेंस के माध्यम से राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद के साथ राज्यपालों, उपराज्यपालों और अधिकारियों को संबोधित करते हुए नायडू ने यह बात कही। उन्होंने उन्हें संबंधित राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में फसलों की कटाई, भंडारण और खरीद सुनिश्चित करने के लिए किए गए प्रबंधों पर भी ध्यान केंद्रित करने के लिए कहा।

भाजपा कार्यकर्ता पीएम का संदेश घरों तक पहुंचाएं : नड्डा

नई दिल्ली, प्रेट्र : भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने पार्टी कार्यकर्ताओं से कहा है कि वह रविवार को दीया, टार्च या मोबाइल की फ्लैश लाइट जलाने का प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का संदेश जनता तक पहुंचाएं। उन्होंने कहा कि लॉकडाउन के दौरान गरीबों की मदद करने के लिए भारत दुनिया के समक्ष रोल मॉडल बन चुका है।

नड्डा ने शुक्रवार को ट्वीट करके कहा कि नोवल कोरोना वायरस के खिलाफ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत वासियों ने लड़ाई जारी रखी है। उन्होंने कहा कि दीया जला कर रोशन करने से देश का मनोबल बढ़ेगा। केंद्रीय मंत्री प्रकाश जावडेकर ने कहा कि पीएम की अपील का पालन करते हुए सभी को अपने आसपास रात नौ बजे दीये जलाकर रोशनी करें।

उन्होंने अपनी बात के समर्थन में एक वीडियो भी साझा किया जिसमें डब्लूएचओ के महानिदेशक टेड्रोस अडानोम गेब्रियासिस ने भारत सरकार की ओर से गरीबों के लिए राहत पैकेज घोषित किए जाने की प्रशंसा की है। उन्होंने कहा कि कोविड-19 के खिलाफ लड़ाई के इस कठिन समय में हर कोई पीएम मोदी के नेतृत्व और उनके प्रयासों की तारीफ कर रहा है।

पीएम की दीया जलाने की मुहिम से जुड़ें छात्र व शिक्षक

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की पांच अप्रैल को रात नौ बजे सभी से नौ मिनट तक अपने घरों की बत्ती को बुझाकर दीया, मोमबत्ती, टार्च या मोबाइल की फ्लैश लाइट जलाने की अपील के कुछ ही मिनटों में मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने यूजीसी सहित सभी प्रमुख शैक्षणिक संस्थानों से छात्रों और शिक्षकों तक इसे पहुंचाने की अपील की है। हालांकि अपील के साथ कड़े निर्देश दिए भी दिए हैं कि सभी को इस मुहिम में घर में रहकर ही शामिल होना है। किसी को भी घर से बाहर आने की जरूरत नहीं है।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय के सचिव अमित खरे ने यूजीसी, एआइसीटीई, एनसीईआरटी, केवीएस व सीबीएसई जैसे संस्थानों को लिखे पत्र में कहा है कि प्रधानमंत्री की मुहिम का उद्देश्य प्रकाश की शक्ति का अनुभव करना और उस उद्देश्य को रेखांकित करना है। इसके खिलाफ हम साथ मिलकर यह लड़ाई लड़ रहे हैं। मंत्रालय ने कहा है कि वह छात्रों, शिक्षकों और शैक्षणिक संस्थानों में काम करने दूसरे सभी कर्मचारियों तक पीएम मोदी का पांच अप्रैल को दीया जलाने का संदेश पहुंचाएं। साथ ही सभी को इसमें शामिल होने के लिए भी प्रेरित करें। वहीं, मंत्रालय की इस अपील के बाद यूजीसी ने देश के सभी विश्वविद्यालय के कुलपतियों को इस संबंध में पत्र लिखा है। इसमें प्रधानमंत्री और मंत्रालय के उद्देश्यों से अवगत कराया है। बता दें कि देश भर में मौजूदा समय में 900 से ज्यादा विश्वविद्यालय और करीब 50000 कॉलेज है। इनसे लाखों की संख्या में छात्र जुड़े हुए है। मंत्रालय ने इससे पहले पीएम की 22 मार्च को जनता कर्फ्यू के दौरान शाम को पांच बजे लोगों को कोरोना के योद्धाओं के लिए ताली, घंटा और थाली बजाने की अपील से जुड़ने को लेकर भी जागरूकता फैलाने का काम किया था।

मोदी की अपील पर कांग्रेस ने साधा निशाना

- पार्टी ने कहा, संकट के मुद्दों से किनारा कर केवल प्रतीकों पर जोर दे रहे मोदी

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

देश के नाम संदेश में रविवार को दीया जलाने की प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अपील पर कांग्रेस ने निशाना साधते हुए कहा है कि गंभीर चुनौतियों के ठोस समाधान के बजाय पीएम केवल प्रतीकों को तवज्जो दे रहे हैं। लॉकडाउन से दैनिक कामगारों और वेतनभोगियों के बढ़े संकट के बावजूद इनके लिए राहत पैकेज की घोषणा नहीं होने पर भी पार्टी ने सवाल उठाया है। कांग्रेस नेता शशि थरूर ने तो तंज कसते हुए रोशनी जलाने के कार्यक्रम को पीएम का विशेष फोटो आयोजन तक करार दिया।

प्रधानमंत्री के वीडियो संदेश पर निराशा जाहिर करते हुए वरिष्ठ कांग्रेस नेता पी. चिदंबरम ने कहा कि कोरोना संकट में मुश्किल का सामना कर रहे सभी लोगों को पीएम के संबोधन से उम्मीद थी। हर कामकाजी पुरुष या महिला, व्यवसायी से लेकर दैनिक वेतनभोगी को उम्मीद थी कि लॉकडाउन से बढ़ी आर्थिक गिरावट को रोकने और आर्थिक विकास के इंजन को फिर से गति देने वाले कदमों की घोषणा पीएम करेंगे। यह भी उम्मीद की जा रही थी कि 25 मार्च को वित्त मंत्री की ओर से घोषित पहली राहत पैकेज में जिन वर्गों को नजरअंदाज कर दिया गया था उनको केंद्रित करते हुए दूसरे राहत पैकेज का एलान होगा।

पीएम पर तंज कसते हुए चिदंबरम ने कहा कि हम आपकी बात सुनकर पांच अप्रैल को दीये भी जलाएंगे, मगर इसके बदले में आप हमारी ही नहीं बल्कि चिकित्सा विशेषज्ञों व अर्थशास्त्रियों की बात सुनिए। उन्होंने कहा कि प्रतीकवाद महत्वपूर्ण है, मगर उपायों और विचारों की गंभीरता भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। लेकिन इन दोनों ही पहलूओं पर पीएम मोदी के संबोधन ने निराश किया है।

कांग्रेस के मुखर नेताओं में शामिल थरूर ने कहा, 'प्रधान शोमैन को सुना। इसमें लोगों की तकलीफ, उन पर बढ़े बोझ, उनकी आर्थिक चिंताओं को लेकर कोई बात नहीं कही गई। लॉकडाउन के बाद भविष्य की चुनौतियों से पार पाने का भी कोई दृष्टिकोण या विचार नहीं दिया। भारत के फोटो-ऑप पीएम ने केवल फील गुड क्षण के आयोजन का मौका सजाया है।' वहीं वरिष्ठ नेता कपिल सिब्बल ने ट्वीट कर कहा कि पीएम ने कोराना को रोकने, चिकित्साकर्मियों के बचाव के उपायों, टेस्टिंग किट उपलब्ध कराने, गरीबों व जरूरतमंदों तक खाना पहुंचाने, दिहाड़ी प्रवासी मजदूरों और बेरोजगार हुए लोगों को सहायता देने के बारे में कुछ नहीं कहा।

पवार की पार्टी में दो मत

राज्य ब्यूरो, मुंबई : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा शुक्रवार को किए गए आह्वान पर महाराष्ट्र में राजनीति शुरू हो गई है। कांग्रेस नेता पीएम मोदी के आह्वान की आलोचना करते दिखे, लेकिन राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) में इस मुद्दे पर दो मत नजर आने लगे हैं। राकांपा प्रवक्ता एवं राज्य की महाराष्ट्र विकास अघाड़ी सरकार में मंत्री नवाब मलिक ने ट्वीट किया- 'प्रधानमंत्री मोदीजी के भाषण से देशवासियों के हाथ घोर निराशा ही लगी है। सोचा था चूल्हा जलाने की बात होगी, साहब दीया जलाने का उपदेश दे गए।' हालांकि, राकांपा विधायक एवं पार्टी अध्यक्ष शरद पवार के पौत्र रोहित पवार अपने ट्वीट में प्रधानमंत्री के आह्वान का समर्थन करते दिखे। उन्होंने लिखा, 'प्रधानमंत्री रोशनी करके पूरे देश को एक साथ लाना चाह रहे हैं। यदि ऐसा है तो हमें उनका समर्थन करना चाहिए।' उधर, प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष एवं राज्य के राजस्व मंत्री बालासाहब थोराट ने सवाल किया है कि घर की रोशनी बंद करके दीया जलाने का आह्वान करना प्रधानमंत्री का काम है क्या?

वायरस से लड़ाई के लिए राज्यों को मिले 11,092 करोड़ रुपये

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : कोरोना के खिलाफ लड़ाई में राज्यों के लिए धन की कमी आड़े नहीं आएगी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ वीडियो कांफ्रेंसिंग की जरिये बैठक के दौरान मुख्यमंत्रियों की ओर से राज्य में धन की कमी का मुद्दा उठाए जाने के बाद गृह मंत्रालय ने शुक्रवार को 11,092 करोड़ रुपये जारी कर दिए हैं। यह धन सीधे राज्यों के आपदा प्रबंधन कोष में जाएगा।

गृहमंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि गृहमंत्री अमित शाह ने राज्यों को 2020-21 के आपदा प्रबंधन कोष की राशि एडवांस में जारी करने का आदेश दिया। केंद्र सरकार ने कोरोना के साथ लड़ाई के लिए राज्यों को आपदा प्रबंधन कोष का इस्तेमाल करने का निर्देश दिया है। 14 मार्च को जारी नोटिफिकेशन में आपदा प्रबंधन कोष से कोरोना के खिलाफ तैयारियों में इस्तेमाल करने की अनुमति देते हुए राज्यों को विशेष अस्पताल बनाने से लेकर जरूरी उपकरणों की उपलब्धता सुनिश्चित रखने को कहा गया। इसके बाद 24 मार्च को लॉकडाउन के बाद बड़ी संख्या में प्रवासी मजदूरों की वापसी को रोकने और उनके लिए ठहरने, खाने-पीने की व्यवस्था करने के लिए राज्यों को इस कोष के इस्तेमाल की अनुमति दे दी गई।

उजाले का संतुलन

कल रात नौ मिनट पूरे देश के घरों में लाइट रहेगी ऑफ, कारखानों के बंद होने से 30 फीसद तक घट चुकी है बिजली की मांग

उन नौ मिनट के लिए बिजली मंत्रालय चौकस

- एक साथ देश भर में बिजली स्विच ऑफ होने से ग्रिड को बचाने में जुटा तंत्र

जयप्रकाश रंजन, नई दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सभी देशवासियों से आग्रह किया है कि आगामी रविवार (पांच अप्रैल) को रात्रि नौ बजे सभी प्रकार की लाइटें नौ मिनट के लिए बंद कर दें। लेकिन क्या इन नौ मिनट के दौरान सभी प्रकार की बिजली को स्विच ऑफ करने से देश में बिजली की मांग इतनी कम हो सकती है कि ग्रिड संचालन में समस्या आ जाए और बिजली संयंत्रों को उत्पादन भी बंद करना पड़े? शुक्रवार को बिजली मंत्रालय में इन सभी पहलुओं पर चर्चा की गई है। मोटे तौर पर यह माना गया है कि सिर्फ लाइट्स बंद होने से बिजली की मांग इतनी कम नहीं होगी कि ग्रिड के फेल होने की स्थिति आए। इसके बावजूद सभी वैकल्पिक व्यवस्था को तैयार रखा जाए कि किसी आपातकालीन स्थिति का सामना किया जा सके। वैसे ग्रिड को लेकर समस्या भले ही नहीं आए, लेकिन लॉकडाउन की वजह से पहले से ही देश में बिजली की मांग जितनी नीचे जा चुकी है उसमें और गिरावट आने की संभावना है। 21 मार्च, 2020 तक देश में बिजली की मांग (पीकऑवर) तकरीबन 1.65 लाख मेगावाट थी जो अब घट कर 1.25 लाख मेगावाट तक आ चुकी है। देश के अधिकांश ताप बिजली संयंत्र अपनी क्षमता का 50 फीसद ही उत्पादन कर रहे हैं। पांच अप्रैल को नौ मिनट के लिए जब देश भर में लाइटों को बंद किया जाएगा तो इस मांग में और गिरावट आ सकती है। बिजली मंत्रालय के सूत्रों के मुताबिक बिजली की मांग में एकबारगी 50-60 फीसद की कमी आए तो ग्रिड के फेल होने की स्थिति पैदा हो सकती है, लेकिन सिर्फ रोशनी बंद करने से महज 4-5 फीसद बिजली की ही कमी होगी। ऐसे में कोई खतरा नहीं है। इसके बावजूद सारा तंत्र सक्रिय रहेगा कि कोई आपातकालीन स्थिति पैदा न हो। एक अन्य अधिकारी के मुताबिक आपातकालीन स्थिति तभी पैदा होगी जब देश भर की जनता अपने बिजली बोर्ड को ही ऑफ कर दे। यानी बिजली की खपत में अचानक ही भारी गिरावट आ जाए। यह ग्रिड प्रबंधन के लिए अप्रत्याशित स्थिति हो सकती है। ऐसे हालात में देश की ताप बिजली संयंत्रों को बंद करना पड़ सकता है। ताप बिजली संयंत्रों के साथ समस्या यह है कि उन्हें अचानक ही बंद नहीं किया जा सकता।

आपातकालीन परिस्थितियों में बंद करने के बाद इन्हें फिर से चालू करने के लिए 10-12 का घंटे का समय लगेगा। हालांकि पनबिजली परियोजनाओं को जल्दी से बंद भी किया जा सकता है और चालू भी किया जा सकता है। ऐसे में देश की हाइड्रो पावर प्रोजेक्ट की मदद मिलेगी। पांच अप्रैल के लिए भी हाइड्रो पावर प्रोजेक्ट को तैयार रखना होगा। बताते चलें कि देश में अभी बिजली उत्पादन की क्षमता 3.70 लाख मेगावाट की है। ताप, पनबिजली और न्यूक्लियर को मिला दें तो इसमें से 2.80 लाख मेगावाट क्षमता की यूनिटें चालू हैं। इनमें से तकरीबन 90 हजार मेगावाट क्षमता की यूनिटें मेंटीनेंस के लिए बंद हैं। इस तरह से 1.90 लाख मेगावाट की क्षमता वाली यूनिटें बिजली बना रही हैं।

कृषि विपणन, आंगनबाड़ी, आयुष से जुड़ी सेवाओं को लॉकडाउन से छूट

नई दिल्ली, एएनआइ : केंद्रीय गृह मंत्रालय ने कहा है कि जिन विशेष सेवाओं को लॉकडाउन प्रतिबंध से छूट दी गई है वे कृषि उत्पाद, खाद्य एवं पोषाहार, चिकित्सा सेवाएं और दवा निर्माण से सीधे संबंधित हैं। गृह मंत्रालय की विज्ञप्ति में कहा गया है, 'राज्यों को भेजे गए संदेश में जिन खास सेवाओं को लॉकडाउन प्रतिबंध के तहत छूट दी गई है उनमें कृषि उत्पाद की सीधी खरीद-बिक्री, बच्चों, महिलाओं, दूध पिलाने वाली माताओं को आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं द्वारा दिए जाने वाले खाद्य एवं पोषाहार, चिकित्सा सेवाएं और आयुष श्रेणी के तहत दवा निर्माण शामिल हैं।'

केंद्रीय गृह सचिव ने राज्यों को इस संबंध में पत्र भेजा है और छूट दी गई सेवाओं का ब्योरा दिया है। कोरोना वायरस के संक्रमण पर काबू पाने के लिए लागू देशव्यापी लॉकडाउन से ये सेवाएं प्रभावित नहीं होने पाए इसलिए इस तरह का स्पष्टीकरण जारी किया गया है।

कह के रहेंगे माधव जोशी

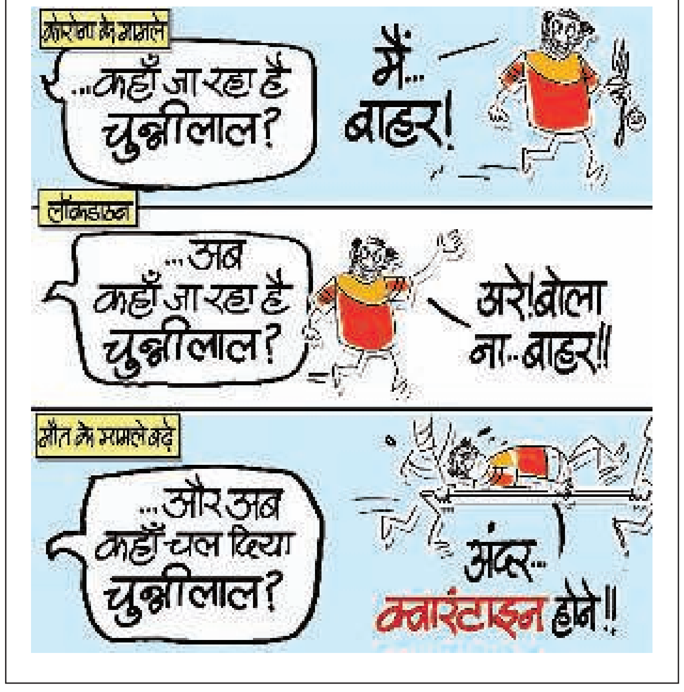
कोरोना के मामले
...कहाँ जा रहा है चुन्नीलाल?
मैं... बाहर!
लॉकडाउन
...अब कहाँ जा रहा है चुन्नीलाल?
अरे! बोला ना.. बाहर!!
मौत के मामले बढ़े
...और अब कहाँ चल दिया चुन्नीलाल?
अंदर... क्वारंटाइन होने!!

उप्र में कोरोना संक्रमण के 48 नए मामले, इनमें 47 तब्लीगी जमात के

बुरे हालात ▶ 14 जिलों में मिले जमात में शामिल हुए मरीज, 24 जिलों तक फैला संक्रमण, नोएडा में अब तक 50 मरीज

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

उत्तर प्रदेश में तब्लीगी जमात से वापस लौटे लोगों ने मुसीबत बढ़ा दी है। दिल्ली के निजामुद्दीन के मरकज मे तब्लीगी जमात में शामिल होकर लौटे 47 लोगों में कोरोना वायरस की पुष्टि हुई है। शुक्रवार को उप्र में एक साथ कोरोना वायरस से संक्रमित सर्वाधिक 48 लोग पाए गए हैं। प्रमुख सचिव स्वास्थ्य अमित मोहन प्रसाद के मुताबिक संख्या में इतना बड़ा इजाफा तब्लीगी जमात मे शामिल लोगों के चलते हुआ है। यूपी में अब कोरोना वायरस से संक्रमित मरीजों की संख्या बढ़कर 174 हो गई है। कोरोना वायरस का संक्रमण भी अब 24 जिलों मे फैल गया है।

तब्लीगी जमात में शामिल होकर लौटे जिन लोगों में कोरोना वायरस पाया गया है, वह अलग-अलग 14 जिलों से हैं। यूपी में तब्लीगी जमात में शामिल होकर लौटे करीब 1203 लोग चिह्नित किए जा चुके हैं और इसमें 296 विदेशी हैं। स्वास्थ्य विभाग इन सभी की जांच कराएगा। अभी तक 897 से अधिक लोगों के नमूने जांच के लिए लैब भेजे भी जा चुके हैं।

नोएडा में भी मिला मरीज : नोएडा में एक और मरीज कोरोना वायरस का पाया गया है। यहां अभी तक सर्वाधिक 50 मरीज हैं। नोएडा के अलावा मेरठ में 25, आगरा में 19, सहारनपुर में 12, लखनऊ में 10, गाजियाबाद में 10, लखीमपुर खीरी में एक, कानपुर में सात, पीलीभीत में दो ,मुरादाबाद में एक, वाराणसी में दो, शामली में तीन, जौनपुर में एक, बागपत में एक, बरेली में छह, बुलंदशहर में तीन, बस्ती में पांच, हापुड़ में एक, गाजीपुर में एक, आजमगढ़ में चार, फिरोजाबाद में चार, हरदोई में एक, प्रतापगढ़ में दो, और शाहजहांपुर का एक मरीज शामिल है। इस तरह कुल 24 जिलों में अब 174 मरीज कोरोना वायरस से संक्रमित हैं।। दूसरी ओर शुक्रवार को नोएडा में अस्पताल में भर्ती दो और मरीजों को छुट्टी दी गई। इस तरह अब तक कुल 19 मरीज स्वस्थ हो चुके हैं। इसमें आगरा के आठ, नोएडा के आठ, गाजियाबाद के दो और लखनऊ का एक मरीज शामिल है।

दिल्ली के निजामुद्दीन में तब्लीगी जमात मरकज में शामिल हुए लोगों को अहमदाबाद प्रशासन ने शुक्रवार को क्वारंटाइन में भेजा। एएनआइ

तब्लीगियों का विदेशी नेटवर्क खंगालेंगी केंद्रीय खुफिया एजेंसियां

शत्रुघ्न शर्मा, अहमदाबाद

तब्लीगी जमात मरकज के विदेशी नेटवर्क को अब केंद्रीय खुफिया एजेंसियां खंगालेंगी। गुजरात सरकार ने शुक्रवार को हाई कोर्ट में तब्लीगी जमात मरकज के कार्यक्रम से लौटने वाले राज्य के लोगों के संदर्भ में पूछे गए सवाल पर यह जानकारी दी।

राज्य सरकार के महाधिवक्ता कमल त्रिवेदी ने गुजरात हाई कोर्ट को बताया कि तकनीकी व मानवीय संसाधनों के जरिये दिल्ली के निजामुद्दीन स्थित तब्लीगी जमात मरकज के कार्यक्रम में शामिल होने वाले राज्य के लोगों की पहचान की जा रही है। इनमें कई लोग कोरोना संक्रमित पाए गए हैं। जलसे में 960 विदेशी भी शामिल हुए थे। फॉरेन एक्ट 1946 के तहत गृह मंत्रालय ने उनका वीजा रद करने का फैसला किया है और उन्हें ब्लैकलिस्टेड भी किया जाएगा। अदालत को यह भी बताया गया कि तब्लीगियों के विदेशी नेटवर्क को खंगालने का काम अब केंद्रीय खुफिया एजेंसियां करेंगी।

महाधिवक्ता ने बताया कि गुजरात के सूरत, अहमदाबाद, भावनगर, आणंद, आदि शहरों से करीब 151 तब्लीगी दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम में शामिल होने गए थे। इनमें से 84 लोगों की तलाशी के बाद स्क्रीनिंग की जा चुकी है। उन्हें मास क्वारंटाइन में भेजा गया है। हालांकि, अबतक 68 तब्लीगी चिह्नित नहीं किए जा सके हैं। उन्होंने बताया कि गुजरात हाई कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश विक्रमनाथ की अध्यक्षता वाली पीठ ने दिल्ली के निजामुद्दीन स्थित मरकज के कार्यक्रम में शामिल होकर लौटे राज्य के तब्लीगियों के मामले पर स्वतः संज्ञान लेते हुए राज्य सरकार से जवाब मांगा था। देर शाम डीजीपी शिवानंद झा ने बताया कि तब्लीगी जमात के लोग स्वेच्छा से सामने नहीं आ रहे हैं। क्राइम ब्रांच व अन्य एजेंसियों की मदद से अब तक 103 लोगों को पकड़कर मास क्वारंटाइन में भेजा गया है। इनमें अहमदाबाद के 57, भावनगर के 20, मेहसाणा के 12 व सूरत के 8, बोटाद के 4 व नवसारी के 2 तब्लीगी शामिल हैं।

ऐसी घटनाएं खराब करती हैं धर्म की छवि : वीके सिंह

नई दिल्ली, एएनआइ : केंद्रीय मंत्री वीके सिंह ने शुक्रवार को कहा कि तब्लीगी जमात से जुड़े लोगों ने जानबूझकर कोरोना वायरस फैलाने की कोशिश की। ऐसी घटनाएं धर्म की छवि खराब करती हैं।

वीके सिंह ने खास बातचीत में कहा, 'तब्लीगी जमात मरकज के कार्यक्रम में शिरकत के बाद लोगों ने छिपकर फरार होने की कोशिश की। कोरोना वायरस के फैलने पर क्या उन्हें कोई उपलब्धि हासिल हो जाएगी? यह शर्मनाक हरकत है। धर्म विशेष के लोग ऐसा कर रहे हैं। इंदौर में उनका इलाज के लिए गई टीम पर हमला भी किया गया।'

उन्होंने कहा, 'मैं मुस्लिम और दूसरे समाज के लोगों से आग्रह करता हूं कि वे ऐसी हरकतें बंद करें। अगर आप अपने धर्म की इज्जत करते हैं तो ऐसी घटनाएं तत्काल रोकें।'

स्वास्थ्यकर्मियों पर हमले और दुर्व्यवहार के मुद्दे पर केंद्रीय मंत्री ने कहा कि उन्होंने पुलिस अधीक्षक से बात करके कड़ी कार्रवाई के लिए कहा है। कानून का उल्लंघन करने वालों को बख्शा नहीं जाएगा। उन्होंने कहा, 'अगर आप संक्रमित हैं तो डॉक्टरों का सहयोग करें, इलाज पाएं। उन्होंने कहा कि गाजियाबाद में दो लोगों को इलाज के बाद छुट्टी दे दी गई है। '

देश में कुल संक्रमित

राज्य	संक्रमित
महाराष्ट्र	490
तमिलनाडु	411
केरल	295
दिल्ली	386
आंध्र प्रदेश	161
राजस्थान	168
उत्तर प्रदेश	174
कर्नाटक	128
मध्य प्रदेश	131
तेलंगाना	229
गुजरात	95
जम्मू-कश्मीर	75
बंगाल	38
पंजाब	53
हरियाणा	48
बिहार	29
चंडीगढ़	18
असम	20
लद्दाख	14
अंडमान-निकोबार	10
उत्तराखंड	10
छत्तीसगढ़	9
हिमाचल प्रदेश	7
गोवा	6
ओडिशा	9
पुडुचेरी	4
मणिपुर	2
झारखंड	2
मिजोरम	1

मरकज से खुलेंगे मौलाना साद के कई राज

राकेश कुमार सिंह, नई दिल्ली

- कोरोना संक्रमण की वजह से अभी मरकज में जाकर जांच नहीं करेगी पुलिस
- स्वास्थ्य विभाग से क्लीयरेंस मिलने पर ही जब्त किए जाएंगे मरकज में रखे रजिस्टर

तब्लीगी मरकज से बाहर निकाले गए लोगों के बड़ी संख्या में कोरोना संक्रमित पाए जाने से माना जा रहा है कि पूरी इमारत में वायरस का संक्रमण फैल चुका है। इसीलिए पुलिस ने फिलहाल तब्लीगी मरकज में नहीं घुसने का निर्णय किया है। स्वास्थ्य विभाग से क्लीयरेंस मिलने के बाद पुलिस जांच के लिए अंदर जाएगी। पुलिस को उम्मीद है कि मरकज से कई रजिस्टर मिल सकते हैं, जिसमें वहां आने वाले भारतीय व विदेशियों के नाम व पते के साथ ही चंदे का लेखाजोखा भी मिल सकता है। रजिस्टरों से मरकज के प्रमुख मौलाना मुहम्मद साद के कई राज खुल सकेंगे।

मरकज को फिलहाल पूरी तरह से सील कर दिया गया है और सुरक्षा की जिम्मेदारी पैरा मिलिट्री को सौंप दी गई है। वहां किसी को भी अंदर जाने देने की अनुमित नहीं है। वहां तैनात पैरा मिलिट्री को कोरोना के संक्रमण से बचाने के लिए विशेष तरीके के ड्रेस दिए गए हैं।

क्राइम ब्रांच ने साद को नोटिस भेजे मांगे 26 सवालों के जवाब

इस बीच, क्राइम ब्रांच ने मरकज के प्रमुख मौलाना मुहम्मद साद को नोटिस जारी कर 26 सवालों के जवाब मांगे हैं। नोटिस में सबसे पहले मरकज का पूरा पता व पंजीकरण का ब्योरा मांगा गया है। पदाधिकारियों व सदस्यों की नाम-पता सहित पूरी जानकारी के साथ तीन साल में जमा कराए गए आयकर, पैन कार्ड व बैंक खातों की जानकारी भी उपलब्ध करानी होगी। कर्मचारियों का भी पूरा ब्योरा देना होगा। इमारत के नक्शा के साथ सीसीटीवी की रिकॉर्डिंग भी मांगी गई है।

क्राइम ब्रांच के एक वरिष्ठ अधिकारी के मुताबिक बिल्डिंग में प्रवेश करना बहुत ही खतरनाक होगा। इसलिए अभी बाहर से जांच की जा रही है। 23 मार्च को पुलिस ने वहां से कुछ रजिस्टर जब्त किए थे। अगले दिन निजामुद्दीन थाने में मौलाना साद व प्रबंधन से जुड़े छह मौलानाओं की मीटिंग बुलाई गई थी। उनसे वहां आने जाने वाले लोगों के बारे में जानकारी मांगी गई थी।

इसमें उन्होंने कुछ सूची सौंपी थीं। इसके अलावा वहां रहने वाले काफी लोगों से पूछताछ भी गई थी। यह पता लगाया जा रहा है कि तीन मार्च से 28 मार्च तक वहां कौन कौन लोग रहने आए थे। संबंधित राज्यों को इन लोगों की सूचना भेजी जा रही है, ताकि वहां उन्हें क्वारंटाइन में रखा जा सके।

महाराष्ट्र में भी होना था सम्मेलन

मुंबई, आइएएनएस : महाराष्ट्र सरकार ने पिछले महीने पालघर में तब्लीगी जमात को सम्मेलन करने की इजाजत न देकर दिल्ली जैसी तबाही को होने से रोक लिया है।

आधिकारिक सूत्रों ने शुक्रवार को बताया कि तब्लीगी जमात ने जनवरी के महीने में मुंबई से 30 किमी दूर वसई कस्बे के पालघर में 14-15 मार्च को एक दिल्ली जैसा ही सम्मेलन कराने की अनुमति मांगी थी। इस सम्मेलन में देश भर के जमातियों के अलावा विश्व के कई देशों से कुल 50 हजार लोग शामिल होने वाले थे। भारत में तब तक कोरोना वायरस के संक्रमण ने भी कदम नहीं रखा था। जमातियों के इस सम्मेलन की मंजूरी शमीम एजुकेशन एंड वेलफेयर सोसाइटी ने मांगी थी। वह लोग पश्चिम वसई के गांव दिवामन में कुरान की आयातें पढ़ने, इस्लामिक चर्चा और नमाज पढ़ने की इजाजत मांग रहे थे। इस मामले में जिले के प्रशासन और राज्य की पुलिस ने गहन चर्चा की और फौरी तौर 5 फरवरी को इसकी इजाजत दे दी थी। तब तक कोराना का संक्रमण भारत में आ चुका था। विश्व स्वास्थ्य संगठन के इसे महामारी घोषित करने और संक्रमण महाराष्ट्र में फैलने पर राज्य सरकार को इस कार्यक्रम को लेकर खतरा महसूस हुआ। और राज्य के गृह मंत्रालय ने विगत छह मार्च को स्थानीय पुलिस की ओर से क्रार्यक्रम को मिली अनुमति को रद कर दिया। राज्य के गृह मंत्री अनिल देशमुख ने बताया कि 24 मार्च को मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे ने राज्य में लॉकडाउन की घोषणा कर दी।

असल राह से भटका साद तो बिगड़ती गई बात

जागरण संवाददाता, मुजफ्फरनगर

मौलाना साद फाइल

मौलाना साद ने दीन और जीवन शैली के मानक खुद गढ़े

मौलाना साद ने अपने अहम की वजह से सैकड़ों जमातियों को कोरोना वायरस का संवाहक बना दिया। दारुल उलूम देवबंद समेत अन्य कई विश्वस्तरीय उलेमा ने काफी पहले आशंकाएं जाहिर कर दी थीं। दरअसल, मौलाना साद ने अपनी फितरत के मुताबिक दीन और जीवनशैली के मानक खुद गढ़े और इसकी घुट्टी जमातियों को पिला दी। नतीजतन, तब्लीगी जमात का चेहरा बदलता गया। दो साल पहले दारुल उलूम देवबंद ने जारी फतवे के अंतिम पैरे में स्पष्ट लिखा कि एक प्रयास करने की जरूरत है, ताकि मौलवी साद की गलत विचारधारा को सुधारा जा सके। मौलाना मोहम्मद साद ज्ञान की कमी के कारण भटक गए हैं।

जमीयत उलमा-ए-हिंद के राष्ट्रीय महासचिव मौलाना महमूद मदनी ने कहा कि मरकज निजामुद्दीन प्रकरण को जिस तरह धार्मिक रंग दिया जा रहा है, वह निंदनीय है। कहा कि कोरोना वायरस के खिलाफ जंग में जिम्मेदार इंसान होने का परिचय देते हुए धर्म व जाति से ऊपर उठकर हर पीड़ित व्यक्ति की मदद करनी चाहिए। कहा कि लॉकडाउन में फंसे लोगों को निकालने की जिम्मेदारी सरकार और पुलिस प्रशासन की थी, लेकिन पुलिस-प्रशासन ने इस काम में देरी की और अब बदनाम एक समुदाय के लोगों को किया जा रहा है।

जनमत मुद्दा

क्या जानबूझकर इंसानों की जान का खतरा बनने वाले तब्लीगी जमात के लोग कोरोना वायरस से ज्यादा खतरनाक साबित हो सकते हैं?

mudda@jagran.com पर आप अपनी राय हमें भेज सकते हैं।

कांधला में हो रही है छानबीन

जागरण संवाददाता, शामली

हजरत निजामुद्दीन मरकज में हजारों जमातियों का कार्यक्रम आयोजित करने पर चर्चाओं में आए मौलाना साद को लेकर दिल्ली-यूपी पुलिस अलर्ट हो गई है। तब्लीगी जमात व मौलाना साद का कांधला से ताल्लुक होने पर दोनों प्रदेशों की पुलिस ने यहां अपना जाल बिछा दिया है। खुफिया विभाग की टीम जमात से जुड़े लोगों व मौलाना साद के करीबियों पर निगाह जमाए है। मौलाना साद के परिवार व रिश्तेदारों ने भी चुप्पी साध ली है। अधिकांश के मोबाइल फोन भी बंद है। मौलाना साद के कांधला स्थित आवास पर ताला लगाकर उनके कारिंदे भी भूमिगत हो गए हैं। हालांकि मौलाना साद ने डॉक्टरों की सलाह पर खुद को दिल्ली में ही क्वारंटाइन करने का ऑडियो संदेश वायरल किया है। दिल्ली पुलिस का मानना है कि रिपोर्ट दर्ज होने के बाद मौलाना साद दिल्ली से कहीं दूसरे प्रदेश में चला गया है। मौलाना साद के वेस्ट यूपी में कहीं होने की संभावना है।

फोन का प्रयोग नहीं करता साद : मौलाना साद की ससुराल सहारनपुर के मोहल्ला मुफ्ती में है। उनके बेहद करीबी बताते हैं कि मौलाना साद ने कभी टेलीविजन या फिल्म नहीं देखी। वीडियो, इंटरनेट तथा फेसबुक, ट्विटर या इंस्टाग्राम से भी वह कोसों दूर हैं। मौलाना साद कैमरे से तस्वीरें खिचवाने के भी खिलाफ हैं। जमात में भी वह इन सबसे बचने की प्रेरणा देते हैं। सहारनपुर में मौलाना साद के ससुर भी फोन के प्रयोग से दूरी बनाए हैं।

पुलिस के लिए भी जानलेवा बन सकता है मरकज

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली

तिहाड़ भेजे गए दंगाई में मिला कोरोना, तीन जवान क्वारंटाइन

उत्तर-पूर्वी दिल्ली में हुए दंगे के मामले में गिरफ्तार एक आरोपित कोरोना पॉजिटिव पाया गया है। इसके बाद क्राइम ब्रांच के तीन पुलिसकर्मियों को क्वारंटाइन कर दिया गया है । क्राइम ब्रांच सूत्रों के मुताबिक गत दिनों क्राइम ब्रांच में तैनात उक्त तीनों पुलिसकर्मियों ने उत्तर-पूर्वी दिल्ली में हुए दंगों के मामले में एक आरोपित को गिरफ्तार कर तिहाड़ जेल भेजा था। जेल में जांच के दौरान आरोपित कोरोना पॉजिटिव पाया गया। पुलिसकर्मियों के परिजनों को सेल्फ क्वारंटाइन रहने के निर्देश दिए हैं। उधर आरोपित के परिजनों को भी क्वारंटाइन में भेज दिया गया है।

निजामुद्दीन स्थित तब्लीगी मरकज में फैले कोरोना वायरस के संक्रमण से पुलिसकर्मियों के लिए खतरा पैदा हो गया है। वहां कार्रवाई में शामिल रहे पुलिसकर्मियों के चपेट में आने की आशंका है। 13 पुलिसकर्मियों पर कोरोना का खतरा जरूर मड़रा रहा है। फिलहाल इन सभी को क्वारंटाइन कर दिया गया है। यह संख्या और भी बढ़ सकती है।

तब्लीगी मरकज से निकाले गए देश-विदेश के 2137 जमातियों से देशभर में कोरोना वायरस के संक्रमण का संकट बढ़ा है। मरकज से निकाले गए लोगों के संपर्क में आने वाले लगातार पॉजिटिव मिल रहे हैं। ऐसे में कार्रवाई करने वाले पुलिसकर्मियों को भी संदिग्ध माना जा रहा है। यदि किसी की तबीयत बिगड़ती है, तो उसके सैंपल जांच के लिए भेजे जाएंगे।

जांच एजेंसियों ने डाला डेरा

मरकज को खाली कराए जाने के बाद से पुलिस सहित अन्य जांच एजेंसियों ने निजामुद्दीन में डेरा डाल दिया है। तीन किलोमीटर के इलाके में जितनी भी सड़कें व गलियां है, वहां चप्पे-चप्पे पर बैरीकेड लगाकर पुलिस व पैरा मिलिट्री की तैनाती कर दी गई है। आसपास के लोगों को होम क्वारंटइन कर दिया गया है। तीन किमी के दायरे से बाहर जाने की किसी को भी इजाजत नहीं है। वहीं सैनिटाइजेशन के बाद मरकज को सील कर दिया गया है। हालांकि, संक्रमण के खतरे को देखते हुए पुलिस व स्वास्थ विभाग के कर्मचारी मरकज के अंदर जाने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहे हैं।

मरकज में आइसोलेशन व क्वारंटाइन में भेजे गए जमातियों का सामान पड़ा हुआ है, जिसे छूना व हटाना किसी के लिए भी संकट की वजह बन सकता है। ऐसे में पुलिसकर्मी भी जांच के लिए अंदर जाने से कतरा रहे हैं। अधिकारियों के आदेश के बावजूद अभी तक अंदर रखे रजिस्टर व अन्य सामान को कब्जे में नहीं लिया जा सका है। पुलिस के पास कोरोना के संक्रमण से बचाने वाला पर्सनल प्रोटेक्टिव इक्यूपमेंट भी नहीं है। ऐसे में सबसे बड़ा खतरा उनकी सेहत को ही है। पुलिस के अतिरिक्त जनसंपर्क अधिकारी एसीपी अनिल मित्तल ने बताया कि 2 अप्रैल को 7 पुलिसकर्मियों को 10 दिनों के लिए आराम करने को कहा गया है।

बरेली की दरगाह में जुटी रही भीड़, 12 दिन बाद पुलिस ने बाहर निकाला

जागरण संवाददाता, बरेली : कोरोना संक्रमण को लेकर लगातार बरती जा रही सतर्कता और बार-बार जारी हो रहे अलर्ट के बावजूद बरेली के शाहदाना वली दरगाह में भीड़ जुटी रही। 12 दिन तक वहां करीब 200 लोग मौजूद रहे। पुलिस को जानकारी थी, मगर टालमटोल की जाती रही। दिल्ली में तब्लीगी जमात से बड़े पैमाने पर संक्रमण फैलने का मामला सुर्खियां बना तब जाकर सुध ली गई। गुरुवार आधी रात के बाद पुलिस पहुंची तो वहां भीड़ देख बसें मंगवाईं और सभी को उनके घरों पर भेज दिया गया।

थाने से करीब सौ मीटर की दूरी पर स्थित शाहदाना वली की दरगाह पर बड़ी संख्या में लोग पहुंचते हैं। 21 मार्च को यहां दो सौ ज्यादा लोग थे। अगले दिन जनता कर्फ्यू और फिर लॉक डाउन होने के बाद से सभी वहीं रहे। इस बीच शासन से बार-बार अलर्ट जारी किया जा रहा था कि मस्जिदों, दरगाहों में भीड़ न लगे, सामूहिक नमाज न हो।

लौटने की जानकारी छिपाने पर छह के खिलाफ मामला दर्ज

जेएनएन, नई दिल्ली : दिल्ली के निजामुद्दीन में तब्लीगी जमात की मरकज में हिमाचल प्रदेश के ऊना जिले से 21 लोग गए थे। ये 21 मार्च को वापस हिमाचल आए। तब लॉकडाउन नहीं था, लेकिन इन्होंने कई बातें छुपाई और पुलिस व प्रशासन को सही सूचना नहीं दी। इसके आरोप में पुलिस ने दो अलग-अलग एफआइआर दर्ज की है। दिल्ली से लौटे ऐसे व्यक्तियों के खिलाफ अब तक ऊना, बद्दी, शिमला, कांगड़ा, बिलासपुर और ऊना छह एफआइआर दर्ज की गई हैं। शिमला में शुक्रवार को हिमाचल प्रदेश के पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) एसआर मरडी ने बताया कि दिल्ली से लौटे तब्लीगी जमात से जुड़े 14 और लोगों की पहचान की गई है। अब इनकी संख्या 204 हो गई है। छह मामले आपदा प्रबंधन अधिनियम के तहत दर्ज किए गए हैं।

बिलासपुर में भी एक मस्जिद में दिल्ली के कुछ तब्लीगी जमात के लोगों के ठहरने को लेकर की गई जांच में पूरा मामला झूठा पाए जाने पर पुलिस ने अब मस्जिद के मौलवी समेत तीन लोगों पर मुकदमा दर्ज कर लिया है। तीनों पर आपराधिक षड्यंत्र के तहत झूठी सूचना देने के भी आरोप लगाए गए हैं। पुलिस ने मस्जिद में जाकर पूरे घटनाक्रम से जुड़ा रजिस्टर तथा अन्य कागजात भी कब्जे में ले लिए हैं।

तब्लीगी जमात के कार्यक्रम में हिस्सा लेकर लौटे 80 फीसद जमातियों को पंजाब पुलिस ने ढूंढ़ लिया है। 40 का टेस्ट करवाया गया है, जिनमें से मोहाली में दो पॉजिटिव पाए गए हैं।

सामूहिक रूप से नमाज पढ़ने से रोकने पर हमला, दारोगा समेत तीन घायल

जागरण संवाददाता, कन्नौज

कन्नौज में शुक्रवार को नमाजियों के हमले में घायल पुलिसकर्मी। पुलिस की टीम सदर कोतवाली में अदा की जा रही सामूहिक नमाज रुकवाने पहुंची थी। एएनआइ

उत्तर प्रदेश के कन्नौज में एक मकान में सामूहिक रूप से नमाज पढ़ने से रोकने पर नमाजियों ने पुलिस टीम और एलआइयू सिपाही पर लाठी-डंडे और ईंट-पत्थरों से हमला कर दिया। इसमें दारोगा समेत तीन लोग घायल हो गए। हमलावरों ने एलआइयू सिपाही की बाइक भी क्षतिग्रस्त कर दी। पुलिस ने 11 हमलावरों को पकड़ा है। शुक्रवार दोपहर करीब डेढ़ बजे एलआइयू सिपाही राजवीर सिंह क्षेत्र भ्रमण पर थे। मोहल्ला कागजियान निवासी मोहम्मद साबिर के घर से कई लोगों की आवाज आने पर राजवीर ने गेट के ऊपर से देखा तो कई लोग अंदर नमाज पढ़ रहे थे। सूचना पर पुलिस टीम पहुंची और मकान का दरवाजा खुलवाने की कोशिश की। तभी नमाज पढ़ने वाले कुछ लोग बाहर आ गए।

दारोगा ने उनसे कहा कि धारा 144 लागू है और पूरे देश में लॉकडाउन है तो एक साथ नमाज न पढ़ें। इस पर उक्त लोग पुलिस वालों से भिड़ गए। पुलिस नमाजियों की वीडियो बनाने लगी तो छतों से कई पुरुष-महिलाएं ईंट-पत्थर बरसाने लगे। इसी बीच मकान के अंदर से बाहर आए लोगों ने पुलिस टीम पर हमला कर दिया। सिपाही श्यौदान सिंह का सिर फट गया वहीं, एलआइयू सिपाही के चेहरे पर भी गंभीर चोट आई है। दारोगा भी घायल हुए हैं। सभी को जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है। डीएम राकेश कुमार मिश्र व एसपी अमरेंद्र प्रसाद सिंह समेत तमाम अधिकारी पुलिस बल के साथ घटनास्थल पर पहुंच गए। ड्रोन कैमरे की मदद से हमलावरों की तलाश की गई तो छतों पर ईंट-पत्थर रखे दिखे। पुलिस ने 11 हमलावरों को पकड़ लिया है। एसपी ने बताया कि घर में नमाज पढ़ रहे 26 लोगों पर मुकदमा दर्ज होगा।

लॉकडाउन में सख्ती पर पुलिस कर्मियों को पीटा, वर्दी फाड़ी

नईदुनिया, रायपुर : लॉकडाउन में बेवजह घूम रहे लोगों पर पुलिस ने सख्ती की तो पुलिस कर्मियों को पीटा गया। यहां तक कि उनकी वर्दी भी फाड़ दी गई। मामला छत्तीसगढ़ के रायपुर स्थित कठली गांव का है। पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक कठली गांव में एक युवक मोटरसाइकल से बार-बार आवागमन कर रहा था। वहां चौक पर तैनात पुलिस कर्मियों ने उससे इस पर पूछताछ की गई और घर लौटने की सख्त हिदायत दी गई। यह बात उसे नागवार लगी। युवक गांव वालों को बुला लाया। घटना का एक आरोपित गिरफ्तार कर लिया गया है।

नियम तोड़ने पर कई गिरफ्तार

जेएनएन, नई दिल्ली

लॉकडाउन में सामूहिक नमाज पर पाबंदी के बावजूद शुक्रवार को देश के कई स्थानों पर लोगों ने मस्जिदों में सामूहिक नमाज पढ़ी। पुलिस ने कार्रवाई करते हुए 17 लोगों को गिरफ्तार कर लिया है। दर्जनों लोगों के खिलाफ महामारी अधिनियम और निषेधाज्ञा उल्लंघन में मुकदमा दर्ज किया गया है। उत्तराखंड के उत्तरकाशी में एक घर में समूह में नमाज अदा करने पर दस लोग गिरफ्तार किए गए।

उप्र में पीलीभीत के सदर कोतवाली क्षेत्र में शुक्रवार को अपराह्न जुमे की नमाज पढ़कर निकले सात लोगों को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। पुलिस अधीक्षक अभिषेक दीक्षित ने बताया कि मनाही के बावजूद सदर कोतवाली क्षेत्र में स्थित मस्जिद अब्बासियान में कुछ लोगों ने सामूहिक नमाज पढ़ी। प्रदेश के ही कासगंज के सोरों के गंगागढ़ मदरसा में मौलाना सहित पांच लोग एकत्र होकर जुमे की नमाज अदा कर रहे थे। पुलिस ने सभी को गिरफ्तार कर लिया। अमरोहा के गांव सलारपुर में मस्जिद में सामूहिक नमाज अदा कर रहे चार लोगों को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। इनके पांच साथी भाग निकले। मेरठ के सौंदत गांव में जुमा की नमाज पढ़वा रहे इमाम को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया।

वहीं, बिहार के भभुआ, सिवान और मधुबनी में लॉकडाउन का खुलेआम उल्लंघन हुआ। भभुआ में तो मस्जिद में जुटकर सामूहिक नमाज से मना करने पर दो पक्षों में मारपीट हुई और पथराव हुआ।

कोरोना को हराना है

कोरोना के बढ़ते प्रकोप के बीच कैसे होगा वेंटिलेटर का इंतजाम

कोरोना के बढ़ते प्रकोप के कारण अस्पतालों पर दबाव बढ़ता जा रहा है। संक्रमित लोगों की जान बचाने के लिए बुनियादी जरूरतों के अभाव ने गंभीर चुनौतियां खड़ी कर दी हैं। इनमें वेंटिलेटर सबसे अहम माना जा रहा है। लेकिन इसकी कमी चिंता का सबब बन रही है। सरकार और निजी क्षेत्रों ने अपनी ओर से वेंटिलेटरों की उपलब्धता बढ़ाने के प्रयास तेज कर दिए हैं। फिलहाल, देश में क्या है वेंटिलेटर की स्थिति, डालते हैं एक नजर।

इस तरह जानिए वेंटिलेटर

वेंटिलेटर एक ऐसी मशीन है, जो खुद से सांस लेने में असमर्थ लोगों को कृत्रिम रूप से सांस देने में सहायक है। इसमें कंप्रेस्ड ऑक्सीजन का अन्य गैसों के साथ इस्तेमाल किया जाता है। क्योंकि वायुमंडल में ऑक्सीजन की मात्रा 21 फीसद ही होती है। इसके जरिए रोगियों को जरूरी मात्रा में ऑक्सीजन की आपूर्ति की जाती है, जो फेफड़े को सांस छोड़ने में मदद करती है।

कोविड-19 मरीजों के लिए जरूरी

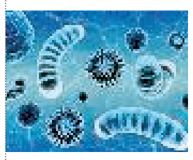

विशेषज्ञों के अनुसार, कोविड–19 पीड़ित रोगियों में कभी–कभी इंटरस्टीशियल निमोनिया होता है। इसका वायरस फेफड़ों के भीतर वायु नलिकाओं में सूजन पैदा करता है, जिसे ब्रॉकियोल्स कहते हैं। इस क्षेत्र में सूजन का मतलब है कि हवा अंदर–बाहर नहीं हो सकती है। चूंकि फेफड़ों में वायु विनिमय का क्षेत्र छोटा पड़ जाता है, इसलिए रोगियों को सांस लेने में ज्यादा जोर लगाना पड़ता है, जो ज्यादा समय तक करना संभव नहीं होता है। जब रोगी प्रति मिनट 40–45 की दर से सांस नहीं ले पाता है तो उसे वेंटिलेटर की जरूरत होती है, जो उसके फेफड़े को ज्यादा मात्रा में ऑक्सीजन पहुंचाता है। इसके सहारे रोगी को ठीक होने का समय मिल जाता है, जिससे वह फिर से सांस लेने की स्थिति में आ सकता है।

जरूरत से बहुत कम वेंटिलेटर

देश के सरकारी अस्पताल 14,220 आइसीयू वेंटिलेटर युक्त हैं। इसके अतिरिक्त कोविड–19 के रोगियों के लिए बनाए गए विशेष अस्पतालों में करीब 6,000 वेंटिलेटर हैं। जबकि विशेषज्ञों के मुताबिक, कोरोना संक्रमण के हालात बिगड़ने की स्थिति में 15 मई तक देश में एक लाख से लेकर 2.2 लाख वेंटिलेटर की जरूरत हो सकती है। हालांकि दिल्ली के अपोलो अस्पताल के रेस्परेटरी मेडिसिन के सीनियर कंसलटेंट डॉ. राजेश चावला मानते हैं कि अभी वेंटिलेटर की कमी नहीं है, क्योंकि कोरोना के कुछ ही रोगियों को वेंटिलेटर की जरूरत पड़ती है। अधिकांश तो ऑक्सीजन पर ही होते हैं। लेकिन हालात यदि इटली जैसे हो जाएं, तब तो किसी भी देश को समस्या हो सकती है। इटली में गुरुवार तक 110574 लोग संक्रमित हुए और 13155 लोगों की मौत हो चुकी है। लेकिन भारत की स्थिति फिलहाल ठीक–ठाक दिखती है।

इस तरह बनता है वेंटिलेटर

वेंटिलेटर ऑक्सीजन की आपूर्ति अलग–अलग तरीकों से करते हैं। मैक्स वेंटिलेटर बनाने वाली एबी इंडस्ट्रीज के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अशोक पटेल बताते हैं कि वेंटिलेटर के अवयव (कंपोनेंट) उसके प्रकार पर निर्भर करते हैं। यह सिर्फ सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर तकनीक का संयोजन नहीं है बल्कि इसमें वायु शास्त्र होता है, जो गैसों को हैंडल करता है। साथ ही सुरक्षा मानकों को बनाए रखने की भी जरूरत होती है।

क्षमता बढ़ाने की जरूरत

औद्योगिक सूत्रों के अनुसार, देश में इस्तेमाल होने वाले महज 10 फीसद वेंटिलेटर भारत में निर्मित हैं। महामारी के कारण मांग बढ़ने के बावजूद आपूर्ति की वैश्विक चेन प्रभावित हुई है। आयात धीमा होने से भारतीय निर्माताओं पर दबाव बढ़ा है कि सीमित क्षमता के बावजूद उत्पादन बढ़ाया जाए। फिलहाल प्रतिमाह करीब छह हजार वेंटिलेटर निर्माण की क्षमता है। हालांकि एबी इंडस्ट्रीज का कहना है कि वह अगले दो महीनों में उसका उत्पादन 350–400 प्रतिमाह बढ़ा सकता है। बेंगलुरु स्थित कंपनी एसकैनरी टेक्नोलॉजीज का दावा है कि वह एक लाख वेंटिलेटर बनाने का इरादा रखता है, जबकि अभी एक बैच में सिर्फ 5000 की क्षमता है। शेष उत्पादन वह अन्य के सहयोग से करेगी।

तीन तरह के वेंटिलेटर

एयर फ्लो डिलीवरी तंत्र के आधार पर वेंटिलेटर तीन प्रकार के होते हैं– बेलो ड्रिवन या पिस्टन वेंटिलेटर, टरबाइन और एक्सटर्नल कंप्रेस्ड एयर ड्रिवन वेंटिलेटर। कोरोना रोगियों के लिए आइसीयू सेटिंग वाला न्यूमेटिक एक्सटर्नल कंप्रेस्ड एयर ड्रिवन वेंटिलेटर आदर्श है। टरबाइन वेंटिलेटर इससे कम प्रभावी होता है। इसमें कम कंपोनेंट होते हैं, जिन्हें बढ़ाया जा सकता है। इन रोगियों का फेफड़ा अपेक्षाकृत सख्त तथा एयर पैसेज फूला हुआ होता है। ऐसी हालत में गैस का कम फ्लो मददगार नहीं होगा। इसलिए अधिक दबाव और हाई फ्लो की जरूरत होती है। सही समय पर इलाज होने से फेफड़े की कोशिकाएं स्थायी रूप से क्षतिग्रस्त नहीं होती है।

कंपोनेंट की है समस्या

अब सवाल कच्चे माल का भी है। एबी इंडस्ट्रीज के पटेल बताते हैं कि वेंटिलेटर का कम से कम 40 फीसद कंपोनेंट अमेरिका, फ्रांस तथा जर्मनी जैसे देशों से आता है। इनमें सेंसर्स तथा डिस्प्ले जैसे कई अहम कंपोनेंट शामिल हैं। एसकैनरी के प्रबंध निदेशक विश्वप्रसाद अल्वा कहते हैं, 'सामान्य परिस्थितियों में सरकार के पास महामारी तथा आपदा प्रबंध प्रकोष्ठ होता है, जिससे चालू हालत में वेंटिलेटर का स्टोर करने की अपेक्षा होती है। लेकिन हमारी सरकार ने कई पत्राचार और बैठकों के बाद भी ऐसा नहीं किया। हम उनसे 2012–2013 से बात कर रहे हैं। पिछली सरकारों ने भी कुछ नहीं किया।'

ऐसे निपटेंगे हालात से

रक्षा मंत्रालय के तहत आने वाला एक सार्वजनिक उपक्रम भारत इलेक्ट्रॉनिक्स (बीईएल) 3000 वेंटिलेटर बनाने की प्रक्रिया में है। स्वास्थ्य मंत्रालय का उपक्रम लाइफकेयर लिमिटेड ने भी 20 हजार वेंटिलेटर के लिए निविदा निकाली है। ट्रेन 18 का निर्माता आइसीएफ, चेन्नई भी वेंटिलेटर बनाने की कोशिश कर रहा है। वहीं, निजी क्षेत्र में एसकैनरी वेंटिलेटर के डिजाइन को सरल बनाने की दिशा में बीईएल तथा महिंद्रा एंड महिंद्रा के साथ मिलकर काम कर रहा है और टाटा के साथ भी सहयोग शुरू कर सकता है। डिजाइन सरल होने से आयातित कंपोनेंट की बाधा से भी पार पाया जा सकता है। इसके साथ ही मारुति सुजुकी इंडिया ने भी नोएडा की एक कंपनी एजीवीए हेल्थकेयर के साथ मिलकर द्रुतगति से उत्पादन बढ़ाकर 10 हजार प्रतिमाह करने की घोषणा की है। इसके दीगर, सेंसर तथा डिस्प्ले जैसे इलेक्ट्रॉनिक कंपोनेंट के आयात के विकल्प खोजने के भी प्रयोग हो रहे हैं।

(स्रोत: मीडिया रिपोर्ट्स)

अप्रैल के अंत तक अपने चरम पर पहुंच सकता है महामारी का कहर

चिंताजनक ▶ लॉकडाउन से मिली सफलता पर तब्लीगी जमात ने फेरा पानी

बीते दो दिनों में तब्लीगी जमात से जुड़े कोरोना के 647 मरीज मिले

नीलू रंजन, नई दिल्ली

लव अग्रवाल। ट्विटर

तब्लीगी जमात की करतूतों के कारण कोरोना का कहर लंबा खिंच सकता है। भारत में इसका चरम रूप अप्रैल के अंतिम हफ्ते या मई के पहले हफ्ते में दिखने को मिल सकता है। सरकार की मानें तो कोरोना वायरस के खिलाफ लड़ाई में काफी हद तक सफलता मिल रही थी, लेकिन तब्लीगी जमात ने सारी उपलब्धियों पर पानी फेर दिया।

स्वास्थ्य मंत्रालय के संयुक्त सचिव लव अग्रवाल ने कहा कि पिछले दो दिनों में तब्लीगी जमात से जुड़े कोरोना के 647 मरीज सामने आए हैं। तब्लीगी जमात के कारण मरीजों की संख्या में तेज बढ़ोतरी का हवाला देते हुए आइसीएमआर के एक वरिष्ठ वैज्ञानिक ने आशंका जताई कि कोरोना से ग्रसित मरीजों की संख्या और तेज गति से बढ़ सकती है। इसके चरम पर पहुंचने के बारे में पूछने पर उन्होंने कहा कि यह अप्रैल के अंत या फिर मई में देखने को मिल सकता है। यानी उसके बाद ही कोरोना के मरीजों की संख्या में कमी आनी शुरू होगी।

उनके अनुसार अगला एक हफ्ता भारत के लिए अहम साबित होगा और उसके बाद ही स्थिति साफ हो पाएगी। उन्होंने कहा कि अगले एक हफ्ते में यह पता चलेगा कि तब्लीगी जमात के लोग अपने संपर्क में आने वाले कितने लोगों तक कोरोना वायरस को पहुंचा चुके हैं। इसके आधार पर तय होगा कि यह चेन आगे कहां तक जाएगी।

स्वास्थ्य मंत्रालय के संयुक्त सचिव ने कहा कि कोरोना वायरस की चेन को तोड़ने में वक्त लगता है और इसी आधार पर उसके अप्रैल के अंत तक अगले चरण में पहुंचने का अनुमान है।

भारत में गर्मी बढ़ने और लोगों को बचाने में बीसीजी टीके के असर के बारे में उनका कहना था कि इस तरह की कई थ्योरी दी जा रही हैं, लेकिन उनकी वैज्ञानिक रूप से पुष्टि नहीं हुई है। कोविड-19 एक नया वायरस है और विभिन्न चीजों पर यह कैसे प्रतिक्रिया करता है, इस पर वैज्ञानिक शोध होना बाकी है।

लव अग्रवाल ने कहा कि तब्लीगी जमात के मरीजों को छोड़ दें तो लॉकडाउन के कारण कोरोना के वायरस के फैलने से रोकने में काफी हद तक सफलता मिली है। नए मरीजों की बढ़ोतरी 50 फीसद से अधिक तक कम रही है। आइसीएमआर ने अपने गणितीय मॉडल में भी यही अनुमान लगाया है। समस्या यह है कि तब्लीगी जमात के कोरोना वायरस से ग्रसित लोग सिर्फ कुछ स्थानों तक सीमित नहीं हैं। देश के 14 राज्यों अंडमान निकोबार, दिल्ली, असम, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, जम्मू-कश्मीर, झारखंड, कर्नाटक, महाराष्ट्र, राजस्थान, तमिलनाडु तेलंगाना, उत्तराखंड और उत्तर प्रदेश में तब्लीगी जमात से संबंधित कोरोना के मरीज मिले हैं। आने वाले समय में तब्लीगी जमात के कोरोना ग्रसित लोगों के संपर्क में आने वालों और फिर उनके साथ संपर्क में आने वालों में भी बहुत सारे इससे ग्रसित मिल सकते हैं। स्वास्थ्य मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि राज्यों के साथ मिलकर तब्लीगी जमात के संपर्क में आने वालों की पहचान करने के लिए सघन अभियान शुरू किया गया है और अभी तक उनसे संबंधित 9000 से अधिक लोगों को आइसोलेशन में रखा गया है।

मां की मौत के बाद पिता अस्पताल में भर्ती और बाकी परिवार क्वारंटाइन

नईदुनिया, इंदौर : कोरोना ने मौजूदा दौर में जिंदगी के मायने बदल दिए हैं। जो परिवार कभी मिलजुल कर रहते थे, उन्हें अलग-अलग रहना पड़ रहा है। गम भी अकेले-अकेले सहना पड़ रहा है। इंदौर के खजराना क्षेत्र के एक परिवार पर गम का ऐसा ही पहाड़ टूटा है। मां की मौत हो चुकी है। पिता अस्पताल में भर्ती हैं। क्वारंटाइन होने के कारण परिवार के लोग अपनी मां को कंधा भी नहीं दे सके। जब दैनिक जागरण के सहयोगी प्रकाशन नईदुनिया ने महिला के बेटे से बात की तो उसने दर्द कुछ इस तरह बयां किया-

हमारी अम्मी तो कहीं आती-जाती भी नहीं थी, मगर पता नहीं उनको कोरोना जैसा रोग कैसे लग गया? सात दिन पहले उन्हें बुखार आया था। एक निजी अस्पताल में भर्ती किया। जब जांच हुई तो कोरोना संक्रमित पाई गईं। इसके बाद उन्हें दूसरे अस्पताल में शिफ्ट किया गया। परिवार के सात सदस्य भी हॉस्टल में क्वारंटाइन किए गए हैं। एक दिन पहले अम्मी का इंतकाल हो गया है। हम हॉस्टल में हैं। मुझे तो पता भी नहीं कि उन्हें कैसे सुपुर्द ए खाक किया गया होगा। ताउम्र दुख रहेगा कि हम उनके जनाजे में शामिल नहीं हो पाए। किसी और के साथ ऐसा न हो। हम तो सिर्फ सब्र कर रहे हैं। अस्पताल में भर्ती पिता की खैरियत भी नहीं पूछ पा रहे हैं।

पूजा कर रहीं महिलाओं व पुजारी से मारपीट, थाना प्रभारी लाइन हाजिर

मध्य प्रदेश के रीवा में मंदिर के पुजारी की पिटाई करता टीआइ। ट्विटर

नईदुनिया, रीवा

▶ **मध्य प्रदेश के रीवा का मामला, सोशल मीडिया में फोटो और वीडियो वायरल होने के बाद की गई कार्रवाई**

मध्य प्रदेश के रीवा में रामनवमी पर मंदिर में पूजा-अर्चना कर रहीं महिलाओं और पुजारी से मारपीट की गई। इस मामले में थाना प्रभारी को लाइन हाजिर कर दिया गया है। घटना की फोटो और वीडियो सोशल मीडिया में वायरल होने के बाद यह मामला सामने आया था।

रीवा आइजी चंचल शेखर ने बताया कि थाना प्रभारी राजकुमार मिश्रा को लाइन अटैच कर दिया है। लॉकडाउन में पुलिस कुछ ज्यादा ही सख्त हो गई। गौरतलब है कि मामले को लेकर रीवा एसपी आबिद खान की भी शिकायत की गई है। इस पर शेखर ने कहा कि इस मामले को हिंदू-मुस्लिम रंग नहीं देना चाहिए। लॉकडाउन के दौरान पुलिस प्रयास करती है कि लोग शारीरिक दूरी बनाकर रहें, जिससे कोराना वायरस ना फैले। हालांकि, पुलिस ने जिस तरह बलप्रयोग किया, वह ठीक नहीं था। उन्होंने कहा कि घटना के वक्त उनके साथ मौजूद रहे अन्य पुलिसकर्मियों की भूमिका की भी जांच की जा रही है।

पुडुचेरी सरकारी अस्पताल के 54 कर्मचारी बर्खास्त

पुडुचेरी, प्रेट्र : पुडुचेरी जिला प्रशासन ने यहां के सरकारी मेडिकल कॉलेज अस्पताल के 54 कर्मचारियों को बर्खास्त करने का आदेश दिया है। इस अस्पताल में कोविड-19 के मरीजों का इलाज किया जा रहा है। बर्खास्त कर्मचारियों पर अस्पताल से गैरहाजिर रहने और कर्तव्य में लापरवाही का आरोप लगाया गया है। जिलाधिकारी टी अरुण द्वारा जारी आदेश में कहा गया है कि इंदिरा गांधी मेडिकल कॉलेज अस्पताल के डीन द्वारा एक रिपोर्ट प्रस्तुत की गई थी। इसमें कर्मचारियों की गैरहाजिरी का जिक्र था।

आदेश में कहा गया है कि दो अप्रैल को कर्मचारियों की गैरहाजिरी के कारण आपातकालीन सेवाएं बाधित हुईं। इससे अस्पताल के अन्य अधिकारियों के काम करने में भी बाधा आई। इन कर्मचारियों को अनुबंध के आधार पर अस्पताल में रखा गया था और नियमों के अनुसार संस्थान को उन्हें कोई भी नोटिस दिए बगैर उनकी सेवा समाप्त करने का अधिकार था।

शारीरिक दूरी के नियम की उड़ाईं धज्जियां

देशभर में जारी लॉकडाउन के बीच बंगाल की राजधानी कोलकाता में शुक्रवार को जरूरतमंदों को भोजन वितरित किया गया। लेकिन इस दौरान शारीरिक दूरी बनाए रखने का जरा भी खयाल नहीं रखा गया। असीम पॉल

बेटे से लिपटकर रो भी न सका पिता, अंतिम यात्रा के लिए चार कंधे न हो सके नसीब

विजय गाहल्याण, पानीपत

▶ **पिता और भाई को भी डॉक्टरों ने किट पहनाई, दूर ही रहे लोग**

▶ **श्मशान में कांपते हाथों से शव छिटक कर जमीन पर गिरा**

पिता के सामने बेटे की मौत। यह दुख क्या कम था कि शव उठाने को चार कंधे भी न मिले। बेबस पिता एक बार बेटे से लिपटकर रो भी न सका। कारण था कोरोना की आशंका में मौत होना। इसलिए दूरी जरूरी थी। दूरी इतनी असहनीय थी कि पिता बिलख-बिलखकर कहता रहा, पैसे ले लो, बेटे को उठा लो। आखिरकार किट पहनकर पिता और बड़े भाई ने अंतिम संस्कार किया।

पानीपत के सेक्टर 13-17 के 28 वर्षीय युवक की मौत हो गई। आशंका कोरोना वायरस के संक्रमण की थी। शव से दूरी रखने के लिए पुलिस और अस्पताल स्टाफ का पहरा था। चिता से 10 मीटर दूर शव वाहन खड़ा किया। उससे 100 मीटर दूर पुलिसकर्मी और अस्पताल स्टाफ रहा। किसी से मदद नहीं मिलने पर पिता ने बड़े बेटे के साथ मिलकर शव को उतरा। कांपते हाथों से शव जमीन पर गिर गया। किसी तरह उठाकर पहले बेंच पर, फिर चिता पर रखा। विलाप करते हुए भाई ने चिता को अग्नि दी। इसके बाद पिता-पुत्र को घर में क्वारंटाइन कर दिया गया।

पिता बोले–भगवान ऐसा दिन किसी को न दिखाए : खौफ इतना था कि शव वाहन अंदर नहीं जाने दिया। इसके बाद डॉक्टरों ने पिता को किट पहनाई। उन्होंने ही शव को नीचे उतारा। एसआइ ने भी दूर से बयान देने की नसीहत दी। रोते हुए पिता बोले कि भगवान ऐसा दिन किसी को न दिखाए। अंतिम बार बेटे का चेहरा तक नहीं देख पाया। कोई रिश्तेदार तक नहीं पहुंचा। बता दें कि कोरोना एक संक्रामक रोग से लोगों को छून से फैलता है। इसलिए जब तक इसका प्रकोप खत्म न हो जाए एक-दूसरे से दूरी बनाकर रखना जरूरी है।

संस्कार के लिए मुश्किल से माना पंडित

प्रत्यक्षदर्शी जनसेवा दल के सचिव चमन गुलाटी ने बताया कि सेक्टर 13–17 में युवक के घर के बाहर शव वाहन खड़ा था। इसमें युवक का शव था। कोरोना वायरस के संक्रमण की आशंका से मौत होने की भनक लगने पर श्मशानघाट के पंडित ने कहा कि उनके पास चालक नहीं है। गुलाटी वाहन चलाकर सामान्य अस्पताल गए, वहां से श्मशानघाट गए। पंडित ने संस्कार कराने से इन्कार कर दिया। बहुत समझाने और किट पहनाने पर पंडित माने। तीन ही किट थी। डॉक्टर ने पिता और पुत्र को किट पहनने के लिए कहा।

चिंताजनक

बिहार में सैंपल देने में भी की आनाकानी, एक का नमूना ही जांच को भेजा, उत्तराखंड में डिप्टी एमएस ने डीआइजी से की शिकायत

नहीं सुधर रहे जमाती, शर्मनाक करतूत से गुस्से में लोग

जेएनएन, नई दिल्ली

भारत में कोरोना के संकट को बढ़ा देने वाले तब्लीगी जमात के लोगों पर नर्सों के साथ अश्लील हरकत करने और डॉक्टरों पर थूकने को लेकर मामला दर्ज होने के बावजूद यह लोग नहीं सुधरे और शुक्रवार को भी देश के अलग-अलग राज्यों में अस्पताल कर्मियों को परेशान करने वाला रवैया जारी रहा।

बिहार में जमातियों ने मांगा प्रतिबंधित मांस: बिहार के शेखपुरा मस्जिद से तब्लीगी जमात से जुड़े होने के संदेह में पकड़कर अस्पताल में दाखिल कराए गए चार लोगों ने शुक्रवार को अस्पताल कर्मचारियों को दिनभर परेशान किया। पुलिस ने इन्हें वर्द्धमान इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज, पावापुरी (विम्स) के आइसोलेशन वार्ड में रखा है। ये लोग कभी डॉक्टर और स्वास्थ्य कर्मियों को गाली बक रहे हैं और कभी उन पर थूक फेंक रहे हैं। इससे इलाज में परेशानी हो रही है। इसके अलावा उन लोगों ने खाने में प्रतिबंधित मांस की भी मांग की है।

इंडोनेशिया के जमातियों ने भी स्वास्थ्यकर्मियों से की बदसलूकी

उत्तर प्रदेश स्थित बिजनौर के जिला अस्पताल के क्वारंटाइन वार्ड में भर्ती इंडोनेशिया के जमातियों ने शुक्रवार शाम स्वास्थ्यकर्मियों से बदसलूकी की। डीएम व एसपी ने मौका मुआयना किया। सभी के मोबाइल फोन जब्त कर लिए गए हैं। प्रभारी मंत्री कपिलदेव अग्रवाल ने डीएम से प्रकरण की जानकारी ली। यहां 13 जमाती भर्ती हैं। इनमें आठ इंडोनेशिया के रहने वाले हैं। इनके खिलाफ मुकदमा भी दर्ज कराया गया था। शुक्रवार शाम को जब दो अस्पताल कर्मी इन्हें वार्ड में खाना देने गए तो इन लोगों ने गालीगलौज करते हुए धक्का–मुक्की का प्रयास किया। सीएमएस डॉ. ज्ञानचंद की सूचना पर डीएम रमाकांत पांडेय और एसपी संजीव त्यागी मौके पर पहुंचे। इन्होंने जमातियों को सख्त लहजे में अपना आचरण सुधारने की चेतावनी दी। वार्ड के गेट समेत जिला अस्पताल में कई जगह पुलिस तैनात की गई है।

थूकने वाले चार की रिपोर्ट आई पॉजिटिव

फीरोजाबाद के आइसोलेशन वार्ड में भर्ती कराए गए बिहार के सात जमातियों ने गुरुवार रात डॉक्टर और स्टाफ को परेशान कर दिया। वह वार्ड से बाहर निकल यहां–वहां थूकते रहे। इन्हीं जमातियों में अब तक चार की रिपोर्ट शुक्रवार को पॉजिटिव आई है।

देहरादून में भी परेशान हुआ अस्पताल स्टाफ

देहरादून मेडिकल कॉलेज अस्पताल में भर्ती जमातियों ने अस्पताल प्रशासन की नाक में दम कर दिया है। यह लोग कभी खाने में नुक्स निकाल रहे हैं और कभी अपनी डाइट ज्यादा और इसकी मात्रा कम बता रहे हैं। एक जमाती ऐसा भी है जो क्वारंटाइन वार्ड में जगह–जगह थूक रहा है। अस्पताल के स्टाफ ने उन्हें समझाने का प्रयास किया तो यह लोग स्टाफ के साथ गालीगलौज करने लगे। अस्पताल के आला अधिकारियों ने भी इन्हें काफी समझाने का प्रयास किया पर वे नहीं माने। इस पर अस्पताल के डिप्टी एमएस डॉ. एनएस खत्री ने डीआइजी अरुण मोहन जोशी से फोन पर इसकी शिकायत की। डॉ. खत्री के अनुसार पुलिस में शिकायत के बाद इन्हें चेताया गया है कि अगर वे अपनी इन हरकतों से बाज नहीं आते तो कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

कोरोना वायरस कचरे पर लगाएं 'कोविड–19 कचरा' का लेबल

▶ **केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने जारी किए बायो–मेडिकल कचरा प्रबंधन नियम**

नई दिल्ली, एएनआइ : केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) ने संक्रमण के इलाज के दौरान उत्पन्न होने वाले सभी प्रकार के बायोमेडिकल कचरे पर 'कोविड-19 कचरा' लेबल लगाना अनिवार्य किया है। ये दिशानिर्देश बायो-मेडिकल कचरा (बीएमडब्ल्यू) प्रबंधन नियम 2016 के तहत जारी किए गए हैं। स्वास्थ्य बुनियादी ढांचा के अंतर्गत केंद्र ने इसे आवश्यक सेवा के रूप में माना है। स्वास्थ्य मंत्रालय के संबंधित अधिकारियों, विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) तथा भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आइसीएमआर) ने कोविड-19 के कचरा प्रबंधन पर कठोर निर्देश तैयार किए हैं। दिशानिर्देश के मुताबिक, लेबल से ऐसे कचरे की आसानी से पहचान होगी और उसका त्वरित निस्तारण हो सकेगा।

आइसोलेशन वार्ड, क्वारंटाइन सेंटर, नमूना एकत्र करने वाले केंद्र, प्रयोगशालाएं, शहरी स्थानीय निकाय, सामान्य बायोमेडिकल कचरा उपचार एवं निस्तारण सुविधाओं में लगे सभी स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं को कोविड-19 कचरे के प्रबंधन के इस दिशानिर्देश का पालन करना होगा। कोविड-19 से पैदा होने वाले बायो-मेडिकल कचरे को खतरनाक कचरे के रूप में माना जाएगा।

ऐसे कचरे के निस्तारण के लिए स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं को तीन स्तरों वाले मास्क समेत पर्सनल प्रोटेक्टिव इक्विपमेंट, स्प्लैश-प्रूफ एप्रन या गाउन, नाइट्राइल ग्लव्स और सेफ्टी गॉगल्स पहनने चाहिए। इसके साथ ही स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं को सैनिटाइजेशन के अलावा बायोमेडिकल कचरा एकत्र करने के बारे में उचित प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।

कोरोना वायरस वैक्सीन के लिए दूसरा ट्रायल शुरू करेगा डब्ल्यूएचओ

उम्मीद की किरण ▸ संक्रमण और वायरस के भविष्य के व्यवहार को समझने में मदद मिलेगी

सॉलिडरिटी ट्रायल के दौरान संभावित उपचार का किया जाएगा आकलन

नई दिल्ली, आइएएनएस : विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने शुक्रवार को कहा कि वह जल्द ही कोरोना वायरस वैक्सीन के लिए दूसरा ट्रायल शुरू करेगा। संगठन की दक्षिण-पूर्व एशिया की क्षेत्रीय निदेशक डॉ. पूनम खेत्रपाल सिंह ने एक प्रेस वक्तव्य में कहा कि डब्ल्यूएचओ जल्द ही सॉलिडरिटी ट्रायल के लिए दूसरा प्रोटोकॉल शुरू करने जा रहा है। इससे संक्रमण और वायरस के भविष्य के व्यवहार को समझने में मदद मिलेगी। कई देशों में किए जाने वाले इस परीक्षण में शामिल होने के लिए भारत, इंडोनेशिया और थाईलैंड पहले ही हस्ताक्षर कर चुके हैं। उन्होंने कहा कि ट्रायल के दौरान कोविड-19 के खिलाफ चार अलग-अलग दवाओं या दवा के संयोजन की सुरक्षा और प्रभावशीलता की तुलना की जाएगी। क्षेत्रीय निदेशक ने सॉलिडरिटी ट्रायल में भाग लेने के लिए इस क्षेत्र के देशों की सराहना की।

डॉ. खेत्रपाल ने कहा कि यह ऐतिहासिक उपक्रम है। यह कोविड-19 के उपचार में दवाओं के प्रभावी होने के बारे में नाटकीय रूप से आवश्यक समय को कम करेगा। जितने अधिक देश इसमें शामिल होंगे, उतनी ही तेजी से नतीजे आएंगे। उन्होंने सभी देशों से इस परीक्षण में शामिल होने का अनुरोध किया। इससे पहले गुरुवार को विश्व स्वास्थ्य संगठन के प्रमुख डॉ. टेड्रोस एडनोम घेब्रेयेसस ने संवाददाता सम्मेलन में कहा कि सॉलिडरिटी ट्रायल के दौरान कोविड-19 के संभावित उपचार का आकलन किया जाएगा। पहले से ही 74 देश या तो परीक्षण में शामिल हो चुके हैं या इसमें शामिल होने की प्रक्रिया में हैं। 200 से अधिक रोगियों पर दवाओं का परीक्षण किया जाएगा।

भारत बायोटेक कंपनी विकसित करेगी वैक्सीन

हैदराबाद, आइएएनएस : कोरोना वायरस से पीड़ित लोगों के लिए भारत बायोटेक कंपनी नाक के जरिये ली जाने वाली एक विशेष वैक्सीन विकसित कर रही है।

यूनिवर्सिटी आफ विस्कांसिन-मैडीसन और वैक्सीन निर्माता कंपनी फ्लूजेन के वायरोलाजिस्ट ने भारत बायोटेक के साथ मिलकर कोविड-19 के खिलाफ कोरोफ्लू नामक इस वैक्सीन को विकसित करने के लिए परीक्षण शुरू कर दिये हैं।

शुक्रवार को यह यह जानकारी देते हुए भारत बायोटेक ने बताया कि हम कोरोफ्लू वैक्सीन, फ्लूजेन कंपनी की फ्लू वैक्सीन एमटूएसआर के आधार पर विकसित कर रहे हैं। उल्लेखनीय है फ्लू की एमटूएसआर वैक्सीन यूनिवर्सिटी आफ विस्कांसिन-मैडीसन के वाइरोलाजिस्ट और वैक्सीन निर्माता कंपनी फ्लूजेन के संस्थापकों योशिरो कावाओका व गैब्रियेल न्यूमैन ने ईजाद की थी।

इस वैक्सीन के विभिन्न परीक्षणों में तीन से छह माह का वक्त लग सकता है। अमेरिका में अक्टूबर तक इसका मनुष्यों पर परीक्षण होगा। इसके बाद भारत बायोटेक कंपनी भी कुछ परीक्षण करेगी। परीक्षण सफल रहने पर कंपनी 30 करोड़ खुराक का उत्पादन करेगी।

कोरोना से कैसे लड़ें
योग विशेषज्ञ

दिलराज प्रीत कौर
योग ब्रांड एम्बेसडर
उत्तराखंड आयुर्वेद विश्वविद्यालय

प्राणायाम से बनाएं फेफड़ों को मजबूत

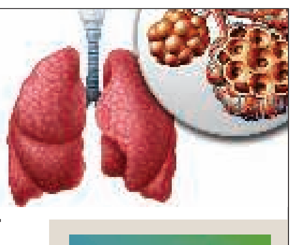

आप सभी जानते हैं कि किसी भी तरह के वायरल संक्रमण से हमारा श्वसन तंत्र, खासकर एलवियोलाई (फुफ्फुस कोशिकाएं) सर्वाधिक प्रभावित होती हैं। ऐसे में श्वास-प्रश्वास की क्रिया को मजबूत करने के लिए नियमित रूप से सुबह-शाम प्राणायाम का अभ्यास जरूरी है। ऐसा कर हम अपनी सांसों के जरिये फेफड़ों में अधिक ऑक्सीजन पहुंचाते हैं। जो लाल व श्वेत रक्त कोशिकाओं की संख्या तो बढ़ाती ही है, रोग-प्रतिरोधक क्षमता भी मजबूत करती है। शरीर के सुरक्षा तंत्र में इन रक्त कोशिकाओं की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका है। खानपान का भी कोरोना संक्रमण के इस दौर में विशेष ख्याल रखें, ताकि आपका इम्युनिटी सिस्टम मजबूत बना रहे। यह सलाह दे रही हैं उत्तराखंड आयुर्वेद विश्वविद्यालय की योग ब्रांड एम्बेसडर योगाचार्य दिलराज प्रीत कौर।

प्राण वायु के लिए भास्त्रिका प्राणायाम करें

भास्त्रिका से शरीर को प्राण वायु अधिक मात्रा में मिलती है। इससे शरीर के सभी अंगों से दूषित पदार्थ बाहर निकल आते हैं। तेज गति से श्वास लेने और छोड़ने के क्रम में हम ज्यादा मात्रा में ऑक्सीजन लेते हैं और कॉर्बन डाईऑक्साइड छोड़ते हैं। यह प्रक्रिया फेफड़ों की क्षमता तो बढ़ाती ही है, हृदय में रक्त नलिकाएं भी शुद्ध व मजबूत बनती हैं। भस्त्रिका प्राणायाम करते समय हमारा डायाफ्राम तेजी से काम करता है, जिससे पेट के अंग मजबूत होकर सुचारु रूप से कार्य करते हैं और हमारी पाचन शक्ति सुदृढ़ होती है।

कपालभाति

कपालभाति से शरीर की प्रतिरोधक क्षमता तो बढ़ती ही है, कब्ज, मोटापा, डायबिटीज जैसी बीमारियों से छुटकारा भी मिलता है। यह आतंरिक सिस्टम को मजबूत करने के साथ रोगों से लडने में भी सहायक है।

भ्रामरी

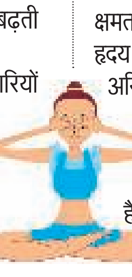

यह प्राणायाम प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के साथ ही हृदय और मानसिक रोग, अनिद्रा, डिप्रेशन व क्रोध को शांत करने में मददगार है। मन की एकाग्रता बढ़ाता है। इससे मस्तिष्क की नसों को आराम मिलता है।

दिन में तीन बार गरारे

वर्तमान परिस्थितियों में हमें अपने गले व फेफड़ों को संक्रमण से बचाने की सबसे ज्यादा जरूरत है। इसलिए गर्म पानी में नमक डालकर दिन में तीन बार गरारे अवश्य करें। गिलोय, अदरक, मुलेठी, तुलसी, बगैर चीनी और दूध की चाय पियें। इम्युनिटी बढ़ाने के लिए संतरा, आंवला, इमली व नींबू का सेवन करें। यह विटामिन-सी के स्रोत हैं। सबसे बड़ी बात सभी तरह की चिंताओं को छोड़कर रात में आठ से नौ घंटे की नींद लें। शराब व सिगरेट से पूरी तरह दूर रहें।

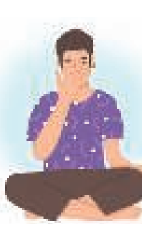

नाड़ी शोधन के लिए अनुलोम-विलोम

अनुलोम-विलोम को सबसे प्रमुख प्राणायाम माना जाता है। इसके नियमित अभ्यास से नाड़ी शोधन के साथ शरीर को पर्याप्त ऑक्सीजन भी मिलती है। इससे शरीर की प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि होने के साथ ही मन भी प्रसन्न रहता है।

ओंकार

शांत एवं शुद्ध वातावरण में किसी भी तरह के आसन पर बैठकर अंदर गहरी सांस भरते हुए ॐ का उच्चारण करें। इससे प्राणायाम करने वाले सभी चक्र जागृत हो जाते हैं। इसके अभ्यास से मन को शांति की अनुभूति होती है और तन को स्फूर्ति मिलती है।

(प्रस्तुति : देहरादून से सुकांत मंमगाईं)

अखबार पर नहीं पनपते वायरस

अखबार सुरक्षित है

हिमांशु अस्थाना, वाराणसी

डॉ. मार्शल धयाल।

डॉ प्रांजल चंद्रा। जागरण

देश में घातक कोरोना वायरस के संक्रमण को रोकने के लिए सरकारी और गैर सरकारी स्तर पर युद्धस्तर पर प्रयास किए जा रहे हैं। लोगों की जान बचाने के लिए लॉकडाउन तक किया जा चुका है। ऐसे में हम सभी का नैतिक दायित्व है कि सरकार की गाइड लाइन का पालन करें। घर में रहकर अपनी दिनचर्या को व्यवस्थित करें। स्वयं को देश-दुनिया की खबरों के साथ अपडेट रखने के लिए अखबार पढ़ें। अखबार को लेकर फैलाए जा रहे किसी भी भ्रम से दूर रहें क्योंकि अखबार से कोरोना वायरस का संक्रमण नहीं होता। विशेषज्ञ भी ऐसी किसी आशंका को लगातार गलत बता रहे हैं।

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (बीएचयू) के बायो मेडिकल इंजीनियरिंग विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. मार्शल धयाल के मुताबिक, सैनिटाइज अखबार पर 30 सेकंड के भीतर ही सभी वायरस मर जाते हैं। वहीं, सैनिटाइज न भी हुआ हो तो छपाई के चार घंटे बाद कोई वायरस उस पर जिंदा नहीं रह सकता।

बीएचयू स्थित चिकित्सा विज्ञान संस्थान (आइएमएस) के असिस्टेंट प्रोफेसर और रामानुजन फेलो डॉ. प्रांजल चंद्रा बताते हैं कि अखबार एक निर्जीव वस्तु है, जिस पर वायरस कभी नहीं पनपता। जो लोग यह अफवाह उड़ा रहे हैं कि अखबार से कोरोना वायरस का संक्रमण फैल रहा है, पूरी तरह निराधार है। उन्होंने बताया कि अखबार जब पुराने हो जाते हैं, तो बैक्टीरिया और फंफूद का खतरा जरूर रहता है, क्योंकि अखबार के कागज सेलुलोज से बने होते हैं और सेलुलोज फंगस और बैक्टीरिया के भोजन होते हैं।

उन्होंने बताया कि वायरस से अखबार को तब तक कोई नुकसान नहीं है, जब तक कोई जोर से इस पर छींक या खास नहीं देता और उसके ड्रॉपलेट व्यक्ति के हाथों के माध्यम से आंख, नाक या मुंह के रास्ते उनके शरीर में प्रवेश नहीं कर जाते। दूसरी चीजों की तरह अखबार पढ़ने के बाद भी हाथ को साबुन से धो लें।

रेलवे ने 26 हजार लीटर सैनिटाइजर और तीन लाख मास्क किए तैयार

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

चौबीसों घंटे जरूरी वस्तुएं पहुंचाने के काम में लगे अपने कर्मचारियों और अनुबंध श्रमिकों की सुरक्षा एवं उनका मनोबल बनाए रखने के लिए भारतीय रेल खुद ही बड़े पैमाने पर मास्क और सैनिटाइजर का उत्पादन कर रही है। पिछले एक सप्ताह में रेलवे की उत्पादन इकाइयों ने लगभग तीन लाख मास्क बनाने के अलावा 26 हजार लीटर सैनिटाइजर तैयार किया है।

एक अप्रैल 2020 तक रेलवे की विभिन्न उत्पादन इकाइयों ने 2,87,704 मास्क बनाने के साथ-साथ 25,806 लीटर सैनिटाइजर तैयार करने में सफलता पाई है। इस मामले में रेलवे के कुछ जोन ने सबसे अच्छा काम किया है।

उदाहरण के लिए मध्य रेलवे ने सबसे ज्यादा 22,580 मास्क तथा 2,693 लीटर सैनिटाइजर तैयार कर अन्य जोन के लिए उदाहरण पेश किया है। चूंकि कोरोना लॉकडाउन के बावजूद आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति बनाए रखने के लिए भारतीय रेल की ओर से मालगाड़ियों का लगातार संचालन किया जा रहा है, इसलिए हजारों रेलवे कर्मचारी चौबीसों घंटे काम कर रहे हैं। इन सभी कर्मचारियों तथा अनुबंध मजदूरों की सुरक्षा के साथ उनका मनोबल बनाए रखने के लिए कार्यस्थलों पर इन्हें समुचित संख्या में मास्क के अलावा पर्याप्त मात्रा में हैंड सैनिटाइजर, साबुन व पानी के अलावा हाथ धोने की हैंड फ्री सुविधाएं उपलब्ध कराई जा रही हैं। इकाइयों में उत्पादन के दौरान शारीरिक दूरी का पूरा ध्यान रखा जा रहा है। कोरोना के विरुद्ध युद्ध में मरीजों के इलाज के लिए भारतीय रेल अब तक रेलवे अस्पतालों में 5000 आइसोलेशन बेड तथा 11000 क्वारंटाइन बेड तैयार कर चुकी है।

अस्पतालों के साथ लिंक होंगे रेलवे के आइसोलेशन रैक

जासं, लखनऊ : कोरोना वायरस से मुकाबला करने के लिए रेलवे युद्ध स्तर पर तैयारियों में जुटा है। मंडल अस्पताल में वेंटिलेटर सहित 25 बेड वाले आइसोलेशन वार्ड और 45 बेड का क्वारंटाइन वार्ड बनाने के बाद रेलवे ने आइसोलेशन अस्पताल के दो रैक भी तैयार कर लिए हैं। ये रैक अलग-अलग क्षेत्रों में भेजे जाएंगे।

कोरोना से बचना है तो करें योग, पीएं गर्म पानी

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

▸ **एचआरडी की छात्रों व शिक्षकों को इम्यूनिटी को मजबूत रखने की आयुष मंत्रालय की टिप्स अपनाने की सलाह**

कोरोना वायरस के बढ़ते संक्रमण के बीच मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने यूजीसी, सीबीएसई सहित सभी प्रमुख शैक्षणिक संस्थानों को पत्र लिखकर इस खतरे से और ज्यादा सचेत रखने का सुझाव दिया है। साथ ही आयुष मंत्रालय की सलाह के मुताबिक अपनी प्रतिरोधक क्षमता (इम्यूनिटी) को मजबूत रखने के लिए गर्म पानी पीने, योग करने और च्यवनप्राश खाने की सलाह भी दी है। मंत्रालय ने संस्थानों से छात्रों, शिक्षकों और संस्थानों से जुड़े सभी कर्मचारियों व उनके परिजनों तक इसे पहुंचाने के निर्देश दिए है।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय के सचिव अमित खरे ने यूजीसी, सीबीएसई, एनसीटीई, एनआइओएस, एआईसीटीई, एनसीईआरटी और केवीएस जैसे शैक्षणिक संगठनों को लिखे पत्र में कोरोना से कैसे सुरक्षित रख सकते है, इससे जुड़े और भी सुझाव दिए हैं। इसके तहत भारत सरकार की ओर से तैयार किए गए 'आरोग्य सेतु' ऐप से भी जुड़ने की सलाह दी है। साथ ही इसे लेकर छात्रों तक भी जानकारी पहुंचाने को कहा है। उन्होंने कहा कि यह ऐंप मोबाइल के प्ले स्टोर से डाउनलोड किया जा सकता है। इससे कोरोना से खतरे से आप बच सकते है। साथ ही इससे कोरोना से जुड़ी नई-नई जानकारियां भी मिलती रहेगी। हालांकि इस बीच आयुष मंत्रालय ने कोरोना से बचने के लिए इम्यूनिटी को मजबूत रखने का सुझाव है। इसमें सामान्य तौर पर सभी से दिन भर गर्म पानी पीते रहने के साथ घर में ही रहकर योगा, प्राणायाम व ध्याान करने जैसे सुझाव दिए हैं। वहीं भोजन तैयार करने में हल्दी, जीरा, धनिया आदि का इस्तेमाल करने की भी सलाह है।

आयुष मंत्रालय के इस एडवाइजरी में कुछ आयुर्वेदिक सलाह भी दी गई है। इसमें सुबह च्यवनप्राश खाने, हर्बल चाय पीने और हल्दी वाला दूध पीने जैसी सलाह है। खास बात यह है कि मंत्रालय ने शैक्षणिक संस्थानों के जरिए छात्रों, शिक्षकों और उनके परिजनों को कोरोना के खतरे से उस समय सतर्क किया है, जब देश में यह महामारी एक ऐसे मोड़ पर है, जहां से लोगों की सतर्कता और जागरुकता से यह खत्म हो सकती है और एक छोटी सी भूल से विकराल रूप भी ले सकती है। ऐसे में मंत्रालय ने सभी को ज्यादा सचेत रहने को कहा है।

गंगा के गंगत्व में कोरोना से लड़ने की क्षमता पर शोध की जरूरत

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

▸ **सेना के रिटायर अफसरों अधिकारियों ने कोरोना के संभावित इलाज के लिए लिखा पीएम को पत्र**

गंगा की पैदल परिक्रमा करने वाले सेना के रिटायर अफसरों के संगठन का दावा है 'गंगा के गंगत्व में कोरोना जैसे अनजान वायरस की महामारी से लड़ने की क्षमता है, जिस पर शोध की जरूरत है।' इसके लिए उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और जलशक्ति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत को पत्र लिखा है। सेना के इन अफसरों का कहना है कि गंगा जल में क्यूरेटिव प्रापर्टी है जो कोरोना जैसी महामारी के इलाज में कारगर साबित हो सकती है।

उन्होंने अपने पत्र में आइआइटी रुड़की, आइआइटी कानपुर, भारतीय विष विज्ञान अनुसंधान संस्थान लखनऊ, इमटेक, सूक्ष्म जैविकीय अध्ययन केंद्र और नीरी के गंगा जल पर किए अनुसंधान के नतीजों का हवाला देते हुए कहा है कि गंगा का वायरस कुछ मामलों में बहुत असरकारक है। विभिन्न अध्ययनों में यह साबित हो चुका कि हैजा, पेचिश, मेनिन्जाइटिस और टीबी जैसी गंभीर रोगों के बैक्टीरिया भी गंगाजल में टिक नहीं पाते। आइआइटी रूड़की से जुड़े रहे वैज्ञानिक देवेंद्र स्वरूप भार्गव का शोध है कि गंगा का गंगत्व उसकी तलहटी में ही मौजूद है। कई अन्य शोधों में यह भी पाया गया कि बैक्टेरियोफाज कुछ वायरस पर भी असरकारक हैं।

रिटायर्ड कर्नल और अतुल्य गंगा के संस्थापक मनोज किश्वर का कहना है कि गंगा की क्युरेटिव प्रापर्टी को बचाना बहुत जरूरी है। गंगा ने पहले भी मानवजाति को संकट से बचाया है और बहुत कुछ संभव है कि कोरोना जैसी महामारी से हमें गंगा ही बचाने में सहायक साबित हो। गंगा का गंगत्व (वायरस खाने वाला बैक्टीरिया) ही है जिससे हमारी महान नदी सभ्यता की पहचान है। एक समय था जब दुनिया की चार बड़ी नदियों में ये बैक्टेरियोफाज पाया जाता था। समय की मार ने बाकी तीन नदियों और उनकी सभ्यताओं को मिटा दिया। अब सिर्फ गंगा ही बची है, जिसमें यह अमृत तत्व मौजूद है।

किश्वर का कहना है कि कोरोना संकट में गंगा का गंगत्व इस वायरस से बचाव में सर्वाधिक सक्षम हो सकता है। इसलिए रेसिस्टेंट बैक्टीरिया से लड़ने में गंगा जल की क्षमता को मापने वाले अनुसंधान कार्य जरूर कराये जाएं। इससे भविष्य में होने वाली अनदेखी बीमारियों से लड़ने मिलेगी।

पूर्व सैन्य अधिकारियों ने गंगा नदी की गंदगी का सफाया करने की मुहिम छेड़ी है जिसका नाम अतुल्य गंगा है। सात पूर्व सैन्य अधिकारियों का दल गंगा उद्गम स्थल गोमुख से बंगाल की खाड़ी तक गंगा के किनारे को पैदल नापेंगे। इस यात्रा का उद्देश्य पर्यटन नहीं बल्कि गंगा नदी को स्वच्छ और निर्मल बनाना है। यात्रा में पूर्व सैन्य अधिकारियों का सहयोगी गूगल और आइआइटी दिल्ली भी बन रहा है। गंगा नदी में हर जगह प्रदूषण का स्तर और पानी का बहाव जैसे तमाम बिंदुओं की जांच होगी। इसकी जिओ टैगिंग भी की जाएगी। इस साल से शुरू होने वाली यह मुहिम अगले 11 वर्षों तक चलेगी। आइआइटी के विशेषज्ञ और वैज्ञानिक जैसे तमाम लोग भी पूर्व सैनिकों का साथ देंगे।

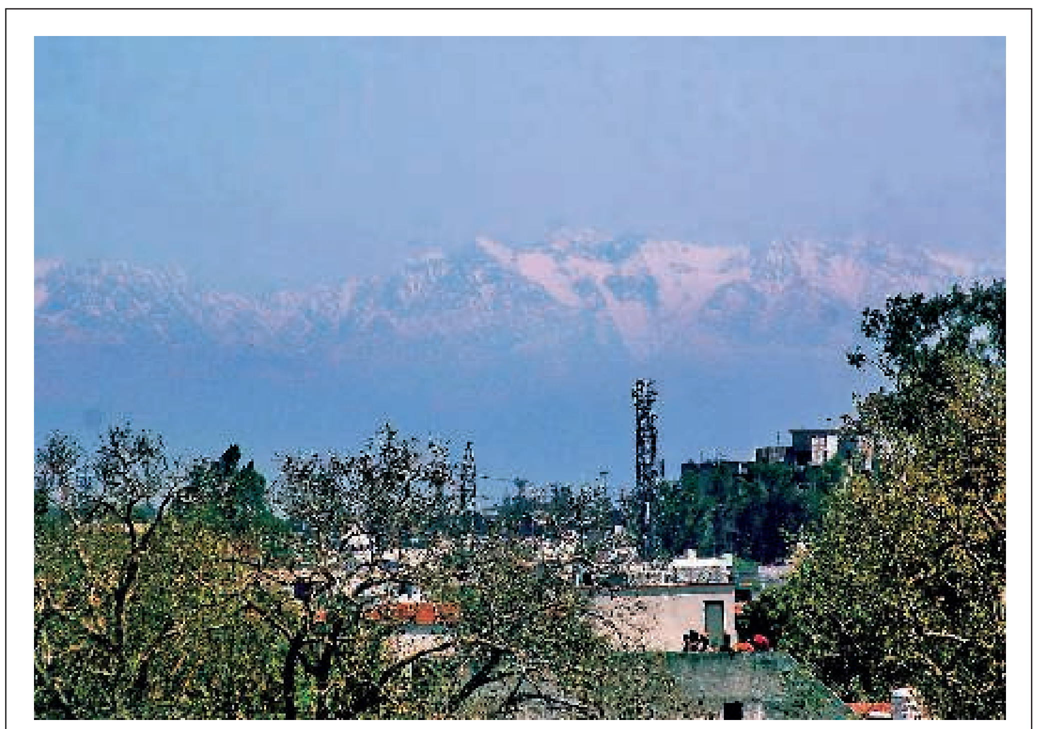

अद्‌भुत, सवा सौ किलोमीटर दूर से दिखे बर्फ से लकदक पहाड़...

पंजाब में शुक्रवार की सुबह जालंधर व आसपास के लोग सो कर उठे तो प्रकृति का मनोरम नजारा देखकर दंग रह गए। नीला आसमान और उत्तर पूर्व हिमाचल में धौलाधार की बर्फ से ढकी पर्वत शृंखलाएं। यह छटा इसलिए निखरी क्योंकि जनता कर्फ्यू ने प्रदूषण का 'लॉकडाउन' कर दिया है। 22 मार्च से धुआं उगलने वाली फैक्ट्रियों की चिमनियां बंद हैं। सड़कों पर वाहनों की आवाजाही भी ना के बराबर है। शहर में तीस साल बाद एक्यूआइ (एयर क्वालिटी इंडेक्स) 41 पर आ गया है। बताते हैं कि करीब चार दशक पहले तक यहां से यह पहाड़ नजर आते थे। सड़क मार्ग से यह पर्वतमाला करीब सवा 200 किलोमीटर है। गूगल मैप के मुताबिक एरियल डिस्टेंस सवा सौ किलोमीटर है।

विजय शर्मा

पतंजलि ने किया आयुर्वेद से कोरोना के सफल इलाज का दावा

अनूप कुमार, हरिद्वार : पतंजलि योगपीठ ने आयुर्वेदाचार्य आचार्य बालकृष्ण ने दावा किया है कि आयुर्वेदिक की दवाओं से न सिर्फ कोविड-19 का शत-प्रतिशत इलाज संभव है, बल्कि इसके संक्रमण से बचने को इन दवाओं का बतौर वैक्सीन भी इस्तेमाल किया जा सकता है। आचार्य बालकृष्ण ने बताया कि पतंजलि अनुसंधान संस्थान में इस पर तीन माह तक चले शोध और चूहों पर कई दौर के सफल परीक्षण के बाद यह निष्कर्ष सामने आया है।

आचार्य बालकृष्ण ने कहा कि अश्वगंधा, गिलोय, तुलसी और स्वासारि रस का निश्चित अनुपात में सेवन करने से कोरोना संक्रमित व्यक्ति को पूरी तरह स्वस्थ किया जा सकता है। 12 से अधिक शोधकर्ताओं ने आयुर्वेदिक गुणों वाले 150 से अधिक पौधों के 1550 कंपाउंड पर दिन-रात शोध कर यह सफलता हासिल की। यह शोधपत्र अमेरिका के वायरोलॉजी रिसर्च मेडिकल जर्नल में प्रकाशन के लिए भेजा गया है। जबकि, अमेरिका के ही इंटरनेशनल जर्नल 'बायोमेडिसिन फार्मोकोथेरेपी' में इसका प्रकाशन हो चुका है। पतंजलि अनुसंधान संस्थान के प्रमुख एवं उपाध्यक्ष डॉ. अनुराग वार्ष्णेय ने बताया कि कोविड-19 के इलाज की सारी विधि महर्षि चरक के प्रसिद्ध ग्रंथ 'चरक संहिता' और आचार्य बालकृष्ण के वर्तमान प्रयोगों एवं सोच पर आधारित है। बताया कि कोविड-19 कोरोना फैमिली का सबसे नया एवं खतरनाक वायरस है। इसकी प्रकृति इससे पहले आए इसी फैमिली के 'सॉर्स' वायरस से काफी मिलती-जुलती है। डॉ. वार्ष्णेय ने बताया कि उनकी टीम को कोविड-19 के इलाज और दवा की खोज के लिए सॉर्स वायरस पर हुए शोधों से काफी मदद मिली। इसके बाद सॉर्स वायरस और कोविड-19 की कार्यप्रणाली पर शोध किया गया। इसमें दोनों की समानता और अंतर को तय करने के साथ ही कोविड-19 की मानव शरीर में कार्यप्रणाली एवं मारक क्षमता का विस्तृत अध्ययन किया गया।

डॉ. वार्ष्णेय ने बताया कि बाबा रामदेव की सलाह एवं निर्देश पर आचार्य बालकृष्ण के सानिध्य में जनवरी 2020 से इस पर शोध आरंभ हुआ। शोध में पांच महिलाओं समेत कुल 14 विज्ञानियों की टीम शामिल थी। करीब तीन माह तक चले सघन शोध के बाद ये नतीजे हासिल किए गए।

दूर देश से

मिलान में शोध कर रहीं कानपुर की संजना वीडियो कॉल कर मां को सिखा रही हैं विदेशी डिश बनाना

कोरोना को नहीं लेकर आना था अपने देश

मनु त्यागी, नई दिल्ली

▸ **देश और परिवार की स्वास्थ्य सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए घर आने से कर दिया था इन्कार**

संजना तिवारी (वीडियो ग्रैब)। सौ. स्वयं

मुझे यही ठीक लगा कि इटली से अपने देश नहीं जाऊं...भारतीय दूतावास ने मुझे 13 मार्च को संदेश भी भेजा था और फोन भी आया था, कि भारतीयों को ले जाने के लिए विमान आया है, कोई शुल्क भी नहीं लगेगा। बस आपको 14 दिन आइसोलेशन में रहना होगा। लेकिन मैंने अपने परिवार और आसपास संक्रमण फैलने के डर से आने से इन्कार कर दिया। पहले परिवार को भी मेरा निर्णय ठीक नहीं लगा, लेकिन जब समझाया तो उन्हें एहसास हुआ कि हमारी बेटी का फैसला सही है। यह कहना है इटली के मिलान में रह रहीं 23 वर्षीय संजना तिवारी का।

संजना मूल रूप से कानपुर निवासी हैं और अभी मिलान शहर में एक विश्वविद्यालय से समाजशास्त्र में शोध करने के लिए अक्टूबर 2019 में ही वहां गई थीं। दैनिक जागरण से फोन पर हुई बातचीत में वह बताती हैं कि सब कुछ ठीक था, आराम से रोज यूनिवर्सिटी जा रही थी। मैं क्या, किसी को भी अंदाजा नहीं था कि कोरोना वायरस का संक्रमण इस हद तक बढ़ चुका है। सभी ने इसे हलके में लिया और आज पूरा देश भयावह हालात से गुजर रहा है। पूरे विश्व ने देखा है कि कोरोना का संक्रमण फैलने का सबसे बड़ा कारण...इधर-उधर घूमना ही रहा। इटली में तो उसी वक्त मिलान फैशन वीक हुआ। चीन में फरवरी में नव वर्ष मनाया गया था। दुनिया भर के लोग आए और संक्रमण चुपचाप एक से दो, दो से चार में और फिर लाखों में फैलता चला गया।

मैंने इटली में बिगड़ते हालात देखे : संजना बता रही थीं कि भारत नहीं आने का फैसला इसीलिए किया क्योंकि इटली में संक्रमण के कारण बिगड़ते हालात देख रही थी। सबसे पहले इटली के नार्थ में ही यह वायरस फैला था। 8 मार्च को पूरी तरह लॉकडाउन की जैसे ही बात हुई तो लोग नॉर्थ से निकल कर साउथ की तरफ चले गए और ये उधर भी फैल गया। दरअसल, यह वायरस फैला ही इधर-उधर घूमने से है। एक देश से दूसरे देश चले गए। यह बहुत गलत हुआ। यदि मैं भी ऐसा करती तो कितनी जगहों से गुजरकर आती और इसी बीच कितने लोगों के संपर्क में आने के बाद घर पहुंचती, तो यह मेरे देश और परिवार दोनों के लिए ठीक नहीं था। अब इटली में 15 अप्रैल तक का लॉकडाउन है, बहुत सख्ती है। अभी के हालात देखकर लगता है कि इसकी सीमा और न बढ़ानी पड़ जाए। वैसे, मैं अपने किराए के घर में सुकून से हूं।

शुक्र है मां ने दाल-चावल दिए : वह कहती हैं कि मॉम को बहुत शुक्रिया करती हूं जो उन्होंने बहुत सारे भारतीय खाद्य के सामान साथ दिए। आजकल दाल-चावल बनाकर खाती हूं। वैसे भी शाकाहारी खाना पसंद है। परिवार में भाई और मम्मी-पापा से रोज वीडियो कॉल पर बात करती हूं। मम्मी को वीडियो कॉल पर कई विदेशी डिश बनानी सिखाईं और उनसे भारतीय जायकों के बारे में पूछकर खुद बनाती हूं। इसी तरह पूरा दिन ऑनलाइन पढ़ाई, रसोई और योग, व्यायाम करके ही बीत जाता है। इस एकांतवास में अंदर से अलग ही ऊर्जा महसूस कर रही हूं, आत्मविश्वास भी बढ़ा है। पूरी दुनिया यदि सोच ले तो कोरोना जैसा वायरस चंद दिन में चित हो जाए।

राजस्थान में जरूरी उद्योग खोलने की अनुमति

मनीष गोधा, जयपुर : लॉकडाउन अवधि में जरूरी उपभोक्ता सामान, दवाइयों आदि की आपूर्ति बनाए रखने के लिए राजस्थान सरकार ने इनकी फैक्ट्रियां चालू करने की अनुमति देने लगी है। इसके लिए प्रक्रिया को यहां तक आसान बनाया गया है कि आवेदन के छह घंटे में लाइसेंस जारी किया जा रहा है। अब तक 900 से ज्यादा इकाइयों को काम शुरू करने की अनुमति दी जा चुकी है। इसके साथ ही खाद्य प्रसंस्करण इकाईयों को किसानों से कृषि जिंसों की सीधी खरीद की अनुमति भी दे दी गई है।

जैसे-जैसे लॉकडाउन का समय बीत रहा है, जरूरी उपभोक्ता सामान की आपूर्ति प्रभावित होने लगी है। इसे देखते हुए सरकार ने सभी तरह के जरूरी उपभोक्ता सामान की इकाइयां चालू करने की अनुमति देना शुरू किया है। इसके साथ ही प्रसंस्करण इकाइयों को सीधे किसानों से खरीद की अनुमति भी दी जा रही है।

छत्तीसगढ़ की पहली कोरोना संक्रमित युवती हुई स्वस्थ

नईदुनिया, रायपुर : छत्तीसगढ़ में पहली कोरोना संक्रमित युवती ने वायरस को हरा कर जिंदगी की जंग जीत ली है। रायपुर की युवती को शुक्रवार को एम्स से छुट्टी दे दी गई है।

राज्य में अभी तक कोरोना संक्रमित नौ मरीज पाए गए। इसमें चार स्वस्थ हो चुके हैं। विदेश से लौटने पर युवती की तबीयत बिगड़ी थी। जांच में कोरोना पॉजिटिव पाए जाने की पुष्टि के बाद एम्स में भर्ती कराया गया था। राज्य में इससे पहले जो तीन मरीज ठीक होकर अस्पताल से घर लौटे, उसमें दो बुजुर्ग भी शामिल थे।

दीया जलाने की अपील को सीएम बघेल ने बताया अनुचित : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की पांच अप्रैल को नौ बजे दीया जलाने की अपील को मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने अनुचित बताया है। मीडिया से चर्चा में बघेल ने कहा कि भारत में हर घर में दीपक भगवान राम के वनवास काटकर और लंका विजय प्राप्त कर घर वापस आने पर जलाये गए थे। दिवाली में दीये जलाए जाते हैं। सामान्य तौर पर खुशी के मौके पर दीया जलाया जाता है। इन दिनों कोरोना को लेकर ऐसा कोई माहौल नहीं है।

खुद न हारें, कोरोना को हराएं

कोरोना के विजेता

खुद पर विश्वास हो और अपनों का साथ हो तो कोई भी जंग लड़ी ही नहीं जीती भी जा सकती है, जीवन की हर परीक्षा पास की जाती है। लगातार ऐसे उदाहरण सामने आ रहे हैं, जो आत्मविश्वास और सावधानी से कोरोना को हरा रहे हैं। आज कहानी पटना के राहुल की, जिन्होंने डॉक्टरों की सलाह और सकारात्मक ऊर्जा से कोरोना को हराया। खुद बता रहे हैं कि इस जंग में उन्होंने जीवन को कैसे जिताया :

काली टी-शर्ट में अपने माता-पिता के साथ राहुल ● जागरण

अस्पताल में खुद को रखा व्यस्त

अस्पताल में भर्ती रहने के दौरान मैंने मोबाइल की मदद से खुद को व्यस्त रखा। घर वालों के साथ पटना से लेकर स्कॉटलैंड तक के दोस्तों के संपर्क में रहा। सबने मेरा हौसला बढ़ाया। दोस्त फोन पर बने रहे तो परिवार प्रेरणा के लिए मददगार साबित हुआ।

चिकित्सकों के निर्देशों का पूरी तरह किया पालन

स्कॉटलैंड से लौटने के बाद बीस मार्च को पटना एम्स पहुंचा था। 21 मार्च को जांच हुई। 22 मार्च को कोरोना रिपोर्ट पॉजिटिव आई। उसी दिन मुझे एनएमसीएच के संक्रामक रोग अस्पताल (आइडीएच) में भर्ती किया गया। पहले डर लगा पर धीरे-धीरे सब ठीक लगने लगा। डॉक्टरों की पूरी टीम ने बहुत मेहनत की, मनोबल भी बढ़ाया। अस्पताल में एक ही काम किया कि जो चिकित्सकों ने कहा, मैंने सब कुछ फॉलो किया।

अभी और सावधानी रखूंगा

दस दिन बाद नालंदा मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल की एंबुलेंस से सीधे फुलवारीशरीफ के बभनपुरा स्थित घर लौटा। पिता कुमार मृत्युंजय, मां पूनम देवी, भाई दीपक व निशांत को देखकर अच्छा लगा। कुछ दिन और लोगों से मुलाकात नहीं करूंगा और आराम करूंगा। स्थिति सुधरने के बाद स्कॉटलैंड लौटकर कंप्यूटर सॉफ्टवेयर इंजीनियरिंग की दो साल की शेष पढ़ाई पूरी करूंगा।

घर पर रहें, स्वस्थ रहें

अभी कई लोग कोरोना से जंग लड़ रहे हैं। मैं उनसे कहना चाहूंगा कि वे हिम्मत नहीं हारें बल्कि कोरोना को हराने के लिए मजबूत बनें। खाने-पीने पर ध्यान दें ताकि रोगों से लड़ने की प्रतिरोधक क्षमता विकसित हो। डब्लूएचओ की गाइडलाइन का पालन करें। डॉक्टर की बात मानें। लॉकडाउन का पालन करते हुए खुद को घर में ही सुरक्षित रखें।

● प्रस्तुति : **पटना से अहमद रजा हाशमी**

कोरोना से जंग लड़ रहे अग्रिम पंक्ति के योद्धाओं को रेडियो सिटी का सलाम

जेएनएन, नई दिल्ली : दैनिक जागरण के सहयोगी रेडियो नेटवर्क रेडियो सिटी ने कोरोना वायरस की वैश्विक के खिलाफ जंग लड़ रहे अग्रिम पंक्ति के योद्धाओं को सलाम करने के लिए एक अभियान शुरू किया है। 'रेडियो सिटी का सलाम कोरोना फाइटर्स के नाम' नामक इस अभियान में रेडियो सिटी के आरजे (रेडियो जॉकी) कोरोना से जंग लड़ रहे डॉक्टरों, नर्सों व अन्य चिकित्साकर्मियों के साथ ही साथ ही पुलिसकर्मियों व सैनिकों के अथक प्रयासों को जन-जन तक पहुंचाने के साथ ही उनके परिजनों के अनुभव भी साझा कर रहे हैं।

देश का पहला एफएम रेडियो ब्रॉडकास्टर होने के साथ ही साथ 17 वर्षों से रेडियो प्रसारण के क्षेत्र में जमे जागरण प्रकाशन लिमिटेड का यह सहयोगी उपक्रम रेडियो सिटी नेटवर्क 39 शहरों में अपनी मौजूदगी के जरिए श्रोताओं को इस महामारी को लेकर लगातार अपडेट कर रहा है। रेडियो सिटी के चीफ क्रिएटिव ऑफिसर कार्तिक कल्ला ने कहा, 'रेडियो सिटी का सलाम कोरोना फाइटर्स के नाम' उन नायकों के प्रयासों को सलाम करने की हमारी एक छोटी कोशिश है, जो हमारी सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए दिन-रात काम में जुटे हैं।

योगी ने 87 लाख लाभार्थियों के खाते में पहुंचाए 871 करोड़

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

▶ **वृद्धावस्था, निराश्रित महिला, दिव्यांग व कुष्ठावस्था पेंशन पाने वालों को अग्रिम भुगतान**

कोरोना के कारण लॉकडाउन होने से आर्थिक संकट झेल रहे गरीबों और निराश्रितों के दर्द को समझते हुए उप्र के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शुक्रवार को सरकारी खजाना खोल दिया। उन्होंने जरूरतमंदों की 871 करोड़ रुपये की आर्थिक मदद की। मुख्यमंत्री के एक क्लिक से कुछ ही मिनटों में 86.71 लाख गरीबों के खातों में यह राशि पहुंची।

मुख्यमंत्री ने संकट की इस घड़ी में वृद्धों, निराश्रित महिलाओं, दिव्यांगों और अशक्तों के खाते में दो महीने की अग्रिम पेंशन भेजी है। उन्होंने शुक्रवार को अपने सरकारी आवास पांच कालिदास मार्ग में आयोजित एक कार्यक्रम में जरूरतमंद गरीबों के खाते में पेंशन की रकम भेजी। इसके बाद वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिये वाराणसी, प्रयागराज, गोरखपुर, मुरादाबाद व सीतापुर सहित कई जिलों के लाभार्थियों से सीधे बात की। योगी ने कहा- मैं सभी को धन्यवाद देता हूं। गरीब कल्याणकारी योजनाओं का लाभ हर गरीब और वंचित तक जब समयबद्ध ढंग से प्रशासनिक मशीनरी पहुंचाती है, तो स्वाभाविक रूप से वह अपनी पीड़ा भूलकर, समाज और देश की लड़ाई में सहभागी बनता है। हम गरीबों, वंचितों और निराश्रितों को अनाथ नहीं छोड़ सकते। सरकार संबल के साथ उनके साथ खड़ी है। सरकार ने वृद्धावस्था पेंशन, निराश्रित महिला पेंशन व दिव्यांग पेंशन के लाभार्थियों के खाते में एक-एक हजार रुपये भेजे हैं।

कुष्ठावस्था पेंशन पाने वाले लाभार्थियों के खाते में पांच-पांच हजार रुपये भेजे गए हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि आम लोगों के लिए यह धनराशि बहुत छोटी हो सकती है, लेकिन एक गरीब के लिए यह क्या महत्व रखती है, यह उनके चेहरे की चमक देखकर पता चलता है। योगी कुछ दिनों पहले ही 88 लाख मनरेगा श्रमिकों के खाते में 611 करोड़ रुपये की मजदूरी भेज चुके हैं।

उप्र में अब एफआइआर की होगी होम डिलीवरी

जागरण संवाददाता, मुजफ्फरनगर

लॉकडाउन का उल्लंघन कर गली-मोहल्लों में अकारण घूमने वाले व पुलिस को देखकर छिप जाने वालों के विरुद्ध नए तरीके से कार्रवाई की जाएगी। पुलिस सादी वर्दी में पहुंचकर ऐसे लोगों की वीडियो बना लेगी। वीडियो में पहचान कर एफआइआर की होम डिलीवरी कराएगी। मुकदमा दर्ज कर उसकी जानकारी आरोपित के मकान के बाहर चस्पा कर दी जाएगी। लॉक डाउन के बावजूद गली-मोहल्लों में युवा टोलियां बनाकर खड़े रहते हैं, जबकि कुछ स्थानों पर क्रिकेट और दूसरे खेल भी खेले जा रहे हैं। इनकी गैरजिम्मेदाराना हरकतों से संक्रमण का खतरा मंडरा रहा है।

मुजफ्फरनगर के एसएसपी अभिषेक यादव ने बताया कि अब पुलिस सादी वर्दी में गली-मोहल्लों में जाएगी तथा वहां टोलियां लगाए खड़े और खेल रहे लोगों का वीडियो बना लेगी। इसके बाद वीडियो से लॉकडाउन का उल्लंघन करने वालों के विरुद्ध एफआइआर की जाएगी, जिसकी आरोपित के घर होम डिलीवरी कर दी जाएगी। जिस व्यक्ति के खिलाफ एफआइआर होगी, उसकी सूचना उसके घर के बाहर चस्पा कर दी जाएगी। एसएसपी ने शुक्रवार को शहर की गलियों में घूमकर यह सब घोषणा की।

एडीआरडीई का कमाल, तैयार किया अत्याधुनिक सूट

अमित दीक्षित, आगरा

पैराशूट निर्माण के क्षेत्र में नए कीर्तिमान स्थापित करने वाले हवाई वितरण अनुसंधान और विकास संस्थापन (एडीआरडीई) ने एक और कमाल कर दिया। कोरोना से जंग लड़ने के लिए अत्याधुनिक सूट तैयार किया है। इस सूट की खासियत यह है कि इसकी धुलाई की जा सकती है। सभी ट्रायल में पर्सनल प्रोटेक्टिव इक्विपमेंट (पीपीई) नामक सूट सफल रहा है। कोरोना वायरस से संक्रमित मरीजों के इलाज में डॉक्टरों और पैरामेडिकल स्टाफ को विशेष सतर्क रहना पड़ता है। आइसोलेशन वार्ड में जाने से पहले सभी एहतियाती कदम उठाते हैं। जो सूट पहनकर डॉक्टर व पैरामेडिकल स्टाफ प्रवेश करता है। इसकी कीमत दो हजार रुपये प्रति सूट है। इस सूट का प्रयोग एक बार ही किया जा सकता है।

मौजूदा हालात को देखते हुए रक्षा अनुसंधान एवं विकास संस्थान के चेयरमैन डॉ. जी. सतीश रेड्डी ने मार्च के अंतिम सप्ताह में एडीआरडीई को अत्याधुनिक सूट तैयार करने के आदेश दिए। गगनयान प्रोजेक्ट के निदेशक गौरव सिंह और अखिलेश कश्यप सहित अन्य वैज्ञानिकों ने तीन दिनों में ही ये सूट तैयार कर दिया। एडीआरडीई के निदेशक और उत्कृष्ट वैज्ञानिक डॉ. एके सक्सेना ने बताया कि इस सूट के आधा दर्जन से अधिक परीक्षण किए गए। ड्रग रिसर्च इंस्टीट्यूट, ग्वालियर व न्यूक्लियर इंस्टीट्यूट, दिल्ली में भी सूट का परीक्षण कराया गया। परीक्षण सफल रहे। उन्होंने बताया कि सूट का वजन तीन सौ ग्राम है। इसकी कीमत आठ सौ रुपये है। इस सूट की पांच बार धुलाई की जा सकती है।

पैराशूट में जिस सामग्री का इस्तेमाल किया जाता है, वह छिद्र रहित होती है। वैज्ञानिकों ने पर्सनल प्रोटेक्टिव इक्विपमेंट (पीपीई) में खास फैब्रिक सहित अन्य मैटेरियल का प्रयोग किया। जिससे पैराशूट से भी अधिक मजबूती मिल सके। विश्व स्वास्थ्य संगठन की गाइडलाइन का पालन किया गया। इसके साथ एक ड्रेस, कैप, जूते का कवर शामिल है। इनके पांच टेस्ट किए गए जिसमें सभी सफल रहे।

पीएम केयर्स को छह केंद्र शासित प्रदेश, केंद्रीय पुलिस संगठन देंगे 89 करोड़

नई दिल्ली, आइएएनएस : गृह मंत्रालय ने घोषणा की है कि केंद्र शासित प्रदेश और केंद्रीय पुलिस संगठन संयुक्त रूप से अपना एक दिन का वेतन करीब 89 करोड़ रुपये पीएम-केयर्स फंड में दान करेंगे। यह फंड कोरोना वायरस के खिलाफ संघर्ष के लिए तैयार किया गया है।

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मदद की अपील का उल्लेख करते हुए यह घोषणा की है। प्रधानमंत्री मोदी ने कोरोना वायरस यानी कोविड-19 संकट के बीच सरकार की मदद करने की अपील की है। अमित शाह ने योगदान का उल्लेख करते हुए ट्वीट किया है, 'प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आह्वान पर गृह मंत्रालय और केंद्रीय पुलिस संगठनों के साथ ही बिना विधानसभा वाले छह केंद्र शासित प्रदेशों के अधिकारी और कर्मचारी पीएम-केयर्स फंड में एक दिन का वेतन (कुल करीब 89 करोड़ रुपये) दान करेंगे।'

कश्मीर में घर-घर की जाएगी रोजमर्रा की वस्तुओं की सप्लाई

राज्य ब्यूरो, श्रीनगर

कश्मीर घाटी में लॉकडाउन के दौरान आम लोगों की दिक्कतें कम करने के लिए प्रशासन ने रोजमर्रा की वस्तुएं घर पर ही उपलब्ध कराने का फैसला किया है। इसके लिए किराना स्टोर मालिकों को घरों में होम डिलीवरी करवाने की छूट दी गई है।

अकेले कश्मीर घाटी में कोविड-19 से प्रभावित 57 मामलों की पुष्टि हो चुकी है। इनमें से दो मरीजों की मौत हो चुकी है। पूरे प्रदेश में कोरोना से प्रभावित मरीजों की संख्या 75 है। घाटी खासकर श्रीनगर में प्रशासन ने वादी में 18 मार्च से ही निषेधाज्ञा लागू करते हुए सभी व्यापारिक प्रतिष्ठानों, शिक्षण संस्थानों,सार्वजनिक वाहनों, निजी वाहनों की आवाजाही पर पूरी तरह रोक लगा रखी है। इसके बावजूद वादी में कई जगह लोग भीड़ की स्थिति पैदा कर रहे हैं। प्रशासन वादी में राशनकार्ड धारकों, गैर राशनकार्ड धारक उपभोक्ताओं, बाहरी श्रमिकों व अन्य लोगों के लिए खाद्य आपूर्ति विभाग के जरिए घर-घर राशन की आपूर्ति सुनिश्चित कर रहा है।

कोरोना से मिलकर लड़ेंगे देशभर के 425 रिसर्च स्कॉलर और साइंटिस्ट

कोरोना के योद्धा

देशभर के 425 से अधिक रिसर्च स्कॉलर और साइंटिस्ट कोरोना से मिलकर लड़ने के लिए आगे आए हैं। इन रिसर्च स्कॉलर और साइंटिस्ट ने देशभर में कोरोना टेस्ट के लिए वालंटियर्स के रूप में अपनी सेवाएं देने का ऑफर दिया है। इसके लिए देशभर की यूनिवर्सिटी और साइंस रिसर्च इंस्टीट्यूट की लैब कोरोना टेस्ट के लिए ओपन करने के लिए प्रधानमंत्री को पत्र लिखा है। पंजाब यूनिवर्सिटी के माइक्रो बायोलॉजी डिपार्टमेंट के रिसर्च स्कॉलर नीरज पंत और फरवरी में ही चीन के वुहान इंस्टीट्यूट ऑफ वायरलोजी से लौटे रिसर्च स्कॉलर विजय ने डेढ़ दिन में ही देशभर के 425 रिसर्च स्कॉलर और साइंटिस्ट को अपने साथ जोड़ लिया है।

टेस्टिंग होगी आसान

गूगल फोरम के जरिए तैयार करने वाले इस ग्रुप के रिसर्च स्कॉलर नीरज पंत के अनुसार देश में इस समय सबसे बड़ी चुनौती कोविड 19 की टेस्टिंग है। देशभर की यूनिवर्सिटी और रिसर्च इंस्टीट्यूट्स की रिसर्च लैब में आरटी पीसीआर और एलिजा रीडर जैसे उपकरण टेस्टिंग के लिए मौजूद है। इन रिसर्च लैब का प्रयोग कोविड-19 की टेस्टिंग के लिए हो सकता है।

हर जिले में हो यह प्रयास

नीरज पंत और विजय के अनुसार देशभर के रिसर्च स्कॉलर एक वालंटियर्स के रूप में टेस्टिंग के लिए अपनी सेवाएं देने को तैयार हैं। देश के हर बड़े जिले में यह लाइफ बन सकती है। चंडीगढ़ और इसके आसपास के इलाकों में ही कई रिसर्च इंस्टिट्यूट मौजूद हैं। पंजाब यूनिवर्सिटी के अतिरिक्त नाइपर, आइसर, इमटैक, सीएसआइओ जैसे रिसर्च इंस्टीट्यूट में भी लैब हैं।

रिसर्च स्कॉलर विजय और नीरज पंत

(प्रस्तुति : चंडीगढ़ से राजेश ढल्ल)

यूनिवर्सिटी की लैब को टेस्टिंग के लिए खोल देना चाहिए

विजय ने कहा कि देश में संसाधन भी है और स्किल्ड मैनपावर भी। ऐसे में सरकार को सभी यूनिवर्सिटी और रिसर्च इंस्टीट्यूट की लैब टेस्टिंग के लिए ओपन कर देनी चाहिए। देश के लिए सभी फ्री में सेवा देने को तैयार है।

पहली कथा वाले वृक्ष के नीचे रह रहे हैं मोरारी बापू

ऐसे बिताया दिन

प्रसिद्ध राम कथा वाचक संत मोरारी बापू ने 21 दिन के लॉकडाउन को 21 दिवसीय राष्ट्रीय अनुष्ठान नाम दिया है। बापू इसे तपस्या पर्व कह रहे हैं। अपने सभी कार्यक्रम रद कर इन दिनों मोरारी बापू गुजरात के भावनगर जिला स्थित अपने गांव तलगाजरडा में अपनी कुटिया में हैं। ये कुटिया उस स्थान पर वट वृक्ष (बरगद) के नीचे बनी है जहां बापू ने लगभग 59 साल पहले 1961 में सिर्फ 14 वर्ष की आयु में अपनी पहली रामकथा की थी। इस राम कथा को सुनने वाले गांव के दो-चार गांव के लोग थे जो अपनी गाय भैंस चराने के लिए आते थे। कुछ वर्ष पहले तक बापू महुआ तालुका में रहते थे मगर पैतृक गांव और दादा गुरु त्रिभुवनदास जी से जुड़ी स्मृतियों के कारण 2010 से फिर से गांव तलगाजरडा में ही रह रहे हैं। बापू का ये निवास 'कैलाश' इस तरह से बनाया गया है कि इसके खुले हिस्से में वो पेड़ और कुटिया भी आ गए हैं। परिवार के अन्य सभी लोग मकान के अंदर रहते हैं लेकिन बापू कुटिया में।

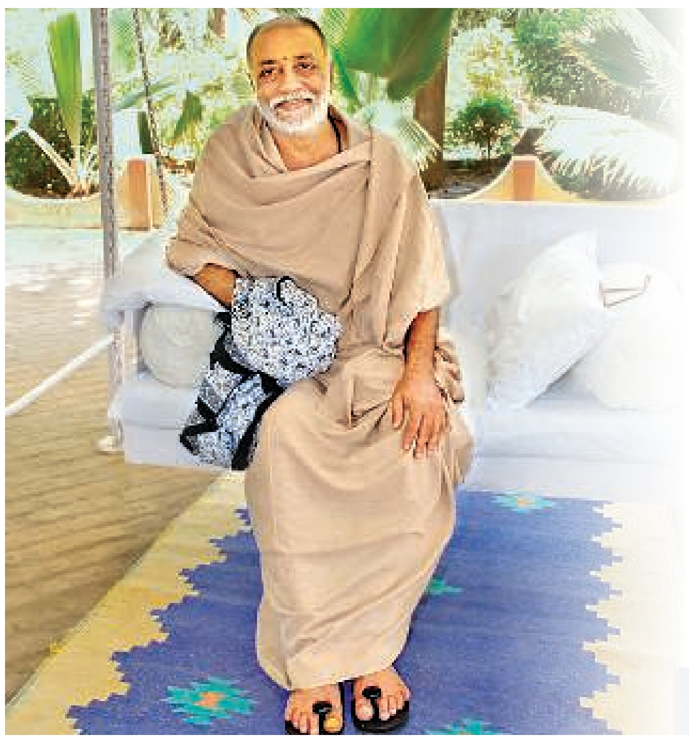

<< अपनी कुटिया के बाहर झूले पर बैठे मोरारी बापू।

बापू के महत्वपूर्ण संदेश

- नहाते वक्त नित्य रुद्राष्टक का पाठ करें।
- तुलसी जी को जल दें और फिर प्रार्थनामय चित से तुलसी जी के पत्तों का सेवन करें।
- डरें नहीं, धैर्य रखते हुए राम नाम का आश्रय करें।
- घर रह कर वो काम करें जिनसे सदविचारों में वृद्धि हो।
- अब तक जो भूल हुई हैं, ये उन्हें सुधार लेने का वक्त है।
- हमारा स्वभाव प्रकृति और परमात्मा के अनुकूल हो तो ताकत मिलेगी।
- ये विपत्ति जैसे आई है, वैसे ही एक दिन चली भी जाएगी।
- पुरुषार्थ करें, फिर पुकार करें और फिर बस प्रतीक्षा करें।

सूर्य नमस्कार से दिन की शुरुआत : नौ दिवसीय कथा के बाद बापू जब अपने गांव आते हैं तो इसी कुटिया में रहते हैं। इन दिनों भी बापू इसी कुटिया में हैं। सिर्फ भोजन के लिए वो मकान के अंदर जाते हैं। दिन की शुरुआत सूर्य नमस्कार से करते हैं। वो सूर्य को जल देकर कम से कम पांच मिनट धूप में रहते हैं। सुबह हवन करते हैं। उसके बाद हल्का नाश्ता करते हैं। हमेशा की तरह इन दिनों भी बापू बेहद गर्म चाय कई बार पी रहे हैं। हां, चाय की मात्रा बहुत कम होती है।

वीडियो रिकॉर्डिंग के माध्यम से दे रहे संदेश : इन दिनों बाबू की दिनचर्या में एक नई बात शामिल हुई है। वो प्रतिदिन एक वीडियो रिकॉर्डिंग के माध्यम से लोगों को कोरोना से बचाव के संदेश दे रहे हैं। जो महत्वपूर्ण बातें रामचरितमानस, गीता, वेद, पुराण और उपनिषदों में बताई गई हैं, उन्हें सरल भाषा में बापू बता रहे हैं। इसकी रिकॉर्डिंग सुबह करीब दस बजे सोशल डिस्टेंसिंग के नियम का पालन करते हुए होती है। इसमें लगभग एक घंटा लग जाता है। इसके बाद दोपहर बारह बजे तक इसे चित्रकूटधाम यूट्यूब चैनल पर डाउनलोड कर दिया जाता है।

साहित्यकारों से रहते हैं संपर्क में : बापू फोन कर कवियों, शायरों, साहित्यकारों, कलाकारों, गायकों आदि का हालचाल ले रहे हैं। इससे कला क्षेत्र से जुड़े हुए लोग अपने आप को बहुत उत्साहित महसूस कर रहे हैं। बापू का कहना है कि शास्त्रों में जो कुछ लिखा गया है, उसकी व्याख्या अपने-अपने तरीकों से करने में शायरों व कवियों का भी बहुत योगदान है।

● प्रस्तुति : **गुजरात के भावनगर से राज कौशिक**

प्रेरक

तुर्की के वायरल वीडियो को देखकर बगरू थाने के इंस्पेक्टर ने की पहल, होम्योपैथी डॉक्टर की मदद से बनवाया विशेष सैनिटाइजर, चैंबर से गुजरकर कोई भी व्यक्ति पूरी तरह हो सकता है सैनिटाइज

राजस्थान में पुलिसकर्मी ने बनवाया सैनिटाइजेशन चैंबर

राज्य ब्यूरो, जयपुर

कोरोना के संकट के बीच देशभर में पुलिसकर्मी पूरी तरह अलग भूमिका में दिख रहे हैं। सामान्य ड्यूटी के साथ कोई गीत गाकर लोगों को जागरूक कर रहा है तो कोई बेजुबान पशुओं को चारा खिलाता दिख रहा है। अपनी कठिन ड्यूटी के साथ ये पुलिसकर्मी समाज के लिए जो बेहतर कर रहे हैं, उसके कई उदाहरण सामने आ रहे हैं। कुछ ऐसा ही जयपुर के पास बगरू थाने में तैनात एक पुलिस इंस्पेक्टर ब्रजभूषण अग्रवाल ने किया है। उन्होंने एक सैनिटाइजेशन चैंबर बनवाया है, जिससे गुजरकर कोई भी व्यक्ति पूरी तरह सैनिटाइज हो सकता है।

दरअसल, इन दिनों सोशल मीडिया पर तुर्की का एक वीडियो वायरल हो रहा है। इसमें एक ऐसा चैंबर दिखाया गया है, जिससे गुजरते ही उसमें सैनिटाइजर की बौछार होती है। इनसे पूरा शरीर सैनिटाइज हो जाता है। इस वीडियो को देखकर अग्रवाल को लगा कि ऐसा कुछ यहां भी किया जा सकता है। इसी सोच के साथ उन्होंने अपने इंजीनियर साथी और बगरू थाने की पुलिस मित्र टीम के सहयोग से इस तरह का चैंबर बनवाने की पहल की। उन्होंने इंजीनियरों की मदद से महज तीन दिन के भीतर एक सैनिटाइजेशन चैंबर तैयार करवा दिया। इसमें शरीर पर छिड़काव के लिए उन्होंने सैनिटाइजर के रूप में होम्योपैथी के डॉक्टर से विशेष दवा बनवाई है। अग्रवाल ने बताया कि यह दवा नीम, तुलसी, स्प्रिट, गेंदे के फूल और प्यूरीफाइड पानी के मिश्रण से तैयार की गई है। उन्होंने बताया कि इसे डॉक्टरों की मदद से सभी तरह के मापदंडों का पालन करते हुए बनाया गया है। गुरुवार को आमजन के लिए इस सैनिटाइजेशन चैंबर को बगरू कस्बे के मुख्य स्थान पर रखवा दिया गया है। इस अनूठी पहल में सबसे पहले सैनिटाइज होने के लिए जयपुर पुलिस कमिश्नरेट के अतिरिक्त पुलिस कमिश्नर अशोक कुमार पहुंचे। उन्होंने कहा कि यह बहुत अच्छा प्रयास है। यह यहां सफल रहता है तो हम ऐसे और चैंबर भी बनवाएंगे। मशीन लगाने के बाद वहां स्थानीय निवासियों ने इसका लाभ भी उठाया। दिनभर में काफी लोग चैंबर में सैनिटाइज किए गए।

जयपुर के पास बगरू कस्बे के इस सैनिटाइजेशन चैंबर में वाहन के साथ भी निकला जा सकता है। पांच सेकंड रुकने की जरूरत होती है। सौ. बगरू पुलिस

22 साल बाद ममता बनर्जी के खाने में चावल शामिल

राज्य ब्यूरो, कोलकाता

▶ **बंगाल की मुख्यमंत्री ने रोटी और चावल खाना छोड़ दिया था**

बंगाल की मुख्यमंत्री व तृणमूल कांग्रेस की प्रमुख ममता बनर्जी (दीदी) ने अपने खाने में करीब 22 साल बाद उबला चावल शामिल किया है। ऐसा कोरोना के चलते किया है। उनका कहना है कि रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए उन्होंने डॉक्टर की सलाह पर ऐसा करने का निर्णय लिया है।

चावल ही नहीं, दीदी के खाद्य पदार्थों की सूची से रोटी भी गायब थी। वह चावल से तैयार होने वाला चिउड़ा ही खाती थीं, लेकिन कोरोना वायरस के प्रकोप की वजह से 22 साल बाद उन्होंने दैनिक भोजन की सूची में उबला चावल खाना शुरू कर दिया है। दैनिक आहार में बदलाव की जानकारी देते हुए उन्होंने कहा कि चिकित्सकों की सलाह पर चावल-दाल का सेवन शुरू किया है। अब मैं प्रत्येक दिन एक बड़ा चम्मच चावल, थोड़ी दाल और उबला हुआ आलू खा रही हूं। हालांकि, मैंने चिउड़ा खाना नहीं छोड़ा है। अन्य खाद्य पदार्थ, जो पहले खा रही थी, उन्हें भी छोड़ा नहीं है।

ममता बनर्जी। फाइल

दैनिक जागरण

तलवार का घाव भर सकता है, लेकिन तीखे शब्दों का घाव नहीं

संदिग्ध मरीजों की पहचान

कोरोना वायरस की चपेट में आए लोगों की बढ़ती संख्या को देखते हुए यह आवश्यक हो जाता है कि संदिग्ध मरीजों के परीक्षण के सिलसिले को गति दी जाए। यह इसलिए और जरूरी हो गया है, क्योंकि एक तो अनपेक्षित इलाकों में कोरोना वायरस से संक्रमित लोग मिलने लगे हैं और दूसरे, तब्लीगी जमात वालों ने खतरा और बढ़ा दिया है। दिल्ली के निजामुद्दीन इलाके में तब्लीगी जमात के एक कार्यक्रम में शामिल होने आए लोगों ने देश के विभिन्न इलाकों में कोरोना का संक्रमण फैला कर मुश्किलों को और बढ़ाया ही है। चूंकि इस जमात में शामिल होकर अपने गांव-शहर लौटे कई लोगों को तलाश नहीं हो पाई है इसलिए उनके जरिये अन्य अनेक व्यक्तियों में संक्रमण का खतरा गहरा गया है। इस खतरे के गहराने का एक कारण यह भी है कि कोरोना के संदिग्ध मरीज माने जा रहे कई जमाती स्वास्थ्य परीक्षण में असहयोग करने के साथ ही ऐसी बेहूदगी करने में लगे हुए हैं कि स्वास्थ्य कर्मियों की चुनौती भी बढ़ती जा रही है और संक्रमण का अंदेशा भी। ऐसे जाहिल लोगों से सख्ती से निपटा जाना उतना ही जरूरी है जितना कि अधिक से अधिक संदिग्ध मरीजों तक पहुंचकर उन्हें बाकी लोगों से अलग करके उनका उपचार करना।

यह राहत की बात अवश्य है कि विशाल आबादी वाले अपने देश में अभी तक कोरोना वायरस से संक्रमित लोगों की संख्या ढाई हजार के करीब ही पहुंची है, लेकिन यह एक सवाल तो है ही कि कहीं इसका कारण संदिग्ध मरीजों का कम संख्या में स्वास्थ्य परीक्षण किया जाना तो नहीं है? ध्यान रहे कि अभी तक एक लाख से भी कम लोगों का स्वास्थ्य परीक्षण किया जा सका है। वक्त की मांग और जरूरत यह है कि यथासंभव उन सब लोगों की जांच तेजी से किया जाना सुनिश्चित किया जाए जिनके बारे में यह संदेह है कि वे कोरोना वायरस से संक्रमित हो सकते हैं। यह ठीक है कि उन ठिकानों की पहचान की जा रही है जहां अधिक संख्या में कोरोना मरीज हैं, लेकिन इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती कि ऐसे ठिकाने बढ़ते जा रहे हैं और अस्पतालों एवं स्वास्थ्य कर्मियों को जरूरी संसाधनों से लैस करने में समय लग रहा है। इस पर प्राथमिकता से ध्यान देना ही होगा कि देश का स्वास्थ्य तंत्र कोरोना वायरस के संक्रमण की पहचान करने वाली परीक्षण किट, अन्य आवश्यक उपकरणों, दवाओं आदि के अभाव का सामना न करने पाए। निःसंदेह कोरोना वायरस के संक्रमण से बचे रहने का कारगर उपाय सार्वजनिक मेल-मिलाप से सख्त परहेज है, लेकिन इसी के साथ एक अन्य उपाय संदिग्ध मरीजों का बड़ी संख्या में परीक्षण भी है।

सहयोग करें, जीतेगा बिहार

राज्य में तेजी से कोरोना संदिग्धों की बढ़ती संख्या चिंता बढ़ाने लगी है। संक्रमितों की संख्या भी प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। ऐसी परिस्थिति में सरकारी निर्देशों का अनुपालन निहायत ही जरूरी है, क्योंकि इसी में सभी की भलाई है। केंद्र तथा राज्य सरकार इस बीमारी पर काबू पाने की हरसंभव कोशिश कर रही है। यह कोशिश तबतक कामयाब नहीं होगी जब तक आमलोग जागरूक होकर सरकार का साथ नहीं देंगे। इस कड़ी में लॉकडाउन का पालन नहीं करने, बाहर से आने पर स्थानीय प्रशासन को सूचित नहीं करने, स्वास्थ्य कर्मचारियों के साथ अभद्र व्यवहार करने व क्वारंटाइन सेंटर से भाग जाने की खबरें विचलित करने वाली हैं। वह भी तब जब यह जगजाहिर हो चुका है कि कोरोना वायरस कितना खतरनाक है। दिल्ली के निजामुद्दीन स्थित तब्लीगी मरकज से आए लोग बड़ी परेशानी का सबब बन गए हैं। जाहिर है इनलोगों ने अपनी ओर से चूक न की होती तो डर और आशंका का बादल नहीं घिरता। प्रदेश में भी विदेशों से आए लोगों ने मुसीबत बढ़ाई है। राज्य सरकार ने गांव स्तर पर निगरानी की व्यवस्था बनाई है। आशा, जीविका दीदी व चौकीदारों को जिम्मेदारी दी गई है ताकि बाहर से आए लोगों का पता चल सके और समय पर उनकी जांच की जा सके। बाहर से आए लोगों को यह समझना होगा कि अगर उन्हें गांव में प्रवेश न देकर क्वारंटाइन सेंटर में रखा जा रहा है तो इसमें उनकी और उनके स्वजनों की ही भलाई है। भागने से समस्या का समाधान संभव नहीं है। ग्रामीणों को भी क्वारंटाइन सेंटर बनाने में सहयोग करना होगा। सरकार बार-बार कह रही कि किसी को परेशानी नहीं होने दी जाएगी। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने तो प्रवासी बिहारियों तक को एक-एक हजार तक देने की घोषणा कर दी है। पूरे प्रदेश में जहां-जहां भी क्वारंटाइन सेंटर बनाए गए हैं वहां लोगों के लिए हरसंभव व्यवस्था की जा रही है। लॉकडाउन के दौरान लोगों को धैर्य रखना होगा। शारीरिक दूरी बनाए रखना ही कोरोना की गिरफ्त से बचने का मूल मंत्र है।

> लोगों को सरकार के आदेशों व निर्देशों का पालन करना होगा, क्योंकि इससे उन्हीं का भला होने वाला है। भागना या बचना कोरोना के खिलाफ जंग का समाधान नहीं

दुराग्रह से बाज न आता पश्चिमी मीडिया

ए. सूर्यप्रकाश

पश्चिमी मीडिया का भारत के प्रति दुराग्रह इतना प्रबल है कि वह देश में कोरोना संक्रमण को रोकने के अनुकरणीय प्रयासों से भी आंखें मूंदे है

पश्चिमी मीडिया के एक बड़े हिस्से का भारत के प्रति दुराग्रह छिपा नहीं। उसने कभी हमारे देश की सामर्थ्य को स्वीकार नहीं किया। किसी ने यह कल्पना नहीं की होगी कि कोविड-19 महामारी की रोकथाम के लिए भारत द्वारा उठाए गए सख्त कदमों को लेकर पश्चिमी मीडिया का एक हिस्सा दुराग्रही हो जाएगा और वह भी तब जब उनके अपने देशों में हालात बद से बदतर होते जा रहे हैं। मंगलवार को अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के स्वास्थ्य सलाहकारों ने कहा कि वहां कोरोना के कारण एक से दो लाख लोगों की मौत हो सकती है। ट्रंप ने भी कहा कि अगले एक-दो हफ्ते बहुत भारी साबित होने वाले हैं। माना जा रहा है कि शुरुआती लापरवाही के चलते ही अमेरिका में हालात काबू से बाहर हो गए। इसके बावजूद ट्रंप प्रशासन लॉकडाउन से परहेज कर रहा है जबकि कोरोना वायरस के प्रसार को रोकने के लिए यह बेहद जरूरी है। इटली और स्पेन में मौतों का आंकड़ा दस हजार को पार कर चुका है। ईरान, फ्रांस और ब्रिटेन के अलावा तमाम अन्य देश भी इसकी चपेट में हैं।

भारत सरकार ने शारीरिक दूरी को लेकर जागरूकता और व्यापक स्तर पर संदिग्ध कोरोना मरीजों की छानबीन का अभियान छेड़कर निर्णायक पहल की। 22 मार्च को प्रधानमंत्री ने जनता कर्फ्यू के रूप में एक तरह का मॉक ड्रिल कराया और फिर 24 मार्च को राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन का फैसला लिया। केंद्र सरकार ने राज्य सरकारों, राष्ट्रीय संस्थानों और मीडिया के साथ मिलकर हाथ धोने, शारीरिक दूरी, संदिग्ध मरीजों की छानबीन को लेकर अभियान छेड़ा। सरकार ने हफ्तों पहले ही फैसला कर लिया था कि कोरोना वायरस के प्रसार को रोकने के लिए सख्त कदम उठाए जाएंगे। उसने भारत आने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए 14 दिन का क्वारंटाइन अनिवार्य किया। इसके साथ ही इटली और ईरान जैसे कोरोना हॉटस्पॉट वाले देशों से आने वाले लोगों को अर्धसैनिक बलों द्वारा चलाए जा रहे शिविरों में भेजा गया। आंकड़ों से तस्वीर और स्पष्ट होती है। दुनिया भर में कोरोना संक्रमितों की संख्या दस लाख का आंकड़ा पार कर चुकी है और भारत की 130 करोड़ की आबादी में इसके लगभग 2000 मामले ही सामने आए हैं। इसके उलट अमेरिका की आबादी 33 करोड़ है, लेकिन वहां संक्रमितों की संख्या तीन लाख के करीब पहुंच चुकी है। यह अंतर बहुत कुछ स्पष्ट करता है। यूरोपीय देशों की स्थिति भी इतनी ही भयावह है।

कोरोना संक्रमण की रोकथाम के मामले में भारतीय नीति निर्माता चीन, दक्षिण कोरिया और हांगकांग के तौर-तरीकों से अधिक प्रभावित दिखते हैं। दूसरी ओर अमेरिका में तमाम लापरवाहियों की बात सामने आ रही है। न्यूयॉर्क राज्य के गवर्नर एंड्रयू क्यूमो स्वास्थ्यकर्मियों के लिए उपकरण और मरीजों के लिए वेंटिलेटर मांगने के मामले में गिड़गिड़ा रहे हैं। कुछ दिन पहले ही उन्होंने कहा था कि मरीजों को वेंटिलेटर साझा तक करना पड़ा। न्यूयॉर्क शहर में हालात बेहद भयावह हो गए हैं। इस परिदृश्य को देखते हुए भारत को आईना दिखाने वाला द न्यूयॉर्क टाइम्स जैसे अखबार अपने खुद के शहर को लेकर बेखबर दिखते हैं। इस अखबार को भारत के 21 दिनों के लॉकडाउन में खोट ही खोट नजर आ रही है।

उसका कहना है कि इस फैसले से पहले से सुस्त अर्थव्यवस्था और तबाह हो जाएगी। अखबार ने जेएनयू के एक प्रोफेसर के हवाले से लिखा कि इससे असंगठित क्षेत्र के 50 प्रतिशत कामगार बर्बाद हो जाएंगे। पश्चिमी मीडिया की भारत के प्रति दुराग्रह की भावना इतनी मजबूत है कि देश में कोरोना संक्रमण को रोकने के लिए केंद्र, राज्य और विभिन्न संस्थानों द्वारा किए जा रहे अनुकरणीय प्रयासों पर भी वह आंखें मूंदे हुए है। 130 करोड़ की आबादी में कोरोना संदिग्ध लोगों की तलाश सागर में अंगूठी तलाशने जैसी है। इसके बावजूद देश की विभिन्न एजेंसियां पूरे मनोयोग से इस मुहिम में जुटी हुई हैं। यह उन तमाम विकसित देशों के लिए सबक है जिनके शिथिल रवैये से वहां हालात नियंत्रण से बाहर हो गए। पश्चिमी मीडिया भारत में लॉकडाउन से प्रवासी मजदूरों की भूख से मौत होने की आशंका की जो तस्वीर दिखा रहा है वह बकवास ही है।

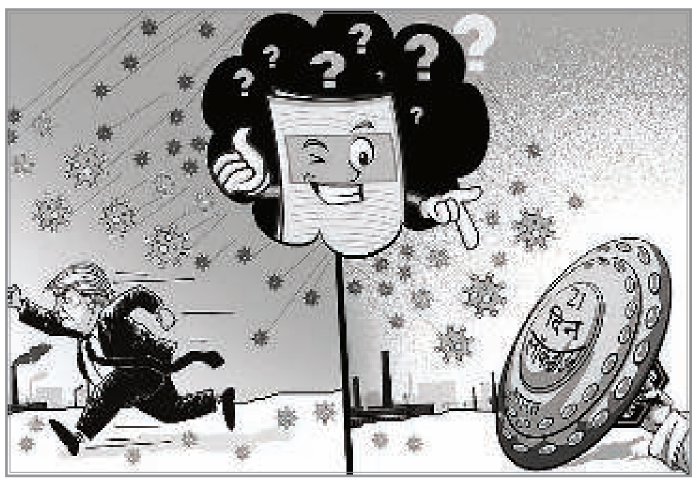

अवधेश राजपूत

भारत के खिलाफ दुष्प्रचार करने वाले न्यूयॉर्क टाइम्स के संवाददाताओं से यह अपेक्षा की जाती है कि वे कम से कम अपने अखबार की संपादकीय टिप्पणियां ही पढ़ लें, जिसमें ट्रंप पर हमलावर होकर लगातार लिखा जा रहा है कि इस महामारी का सबसे भयावह मंजर सामने आना अभी शेष है। स्वास्थ्यकर्मियों की सलाह सुनी जाए, क्योंकि यह राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन का समय है। तमाम अमेरिकी जानकारों के अनुसार अमेरिका ट्रैकिंग कर वायरस को रोकने का मौका पहले ही गंवा चुका है। यही अखबार कहता है कि अमेरिकी प्रशासन का ढुलमुल रवैया मददगार नहीं होगा।

मोदी के 21 दिवसीय लॉकडाउन पर न्यूयॉर्क टाइम्स की सभी रपट नकारात्मक रही हैं। इसके अलावा वाशिंगटन पोस्ट और अन्य पश्चिमी न्यूज एजेंसियां भी सरकारी फैसलों की व्यापक रूप से आलोचक रही हैं। ऐसे में सरकार करे तो क्या करे? यही मीडिया संस्थान खौफ फैला रहे कि यदि भारत ने एहतियात नहीं बरती तो देश में करोड़ों लोग इस वायरस के शिकार बन सकते हैं। अफसोस की बात है कि भारत में भी मीडिया का एक तबका इसी एजेंडे पर काम कर रहा है क्योंकि वह मौजूदा प्रधानमंत्री से बैर रखता है। वास्तव में इनमें से तमाम शायद मन ही मन यही आस लगा रहे हैं कि भारत इस आपदा से निपटने में नाकाम हो जाए ताकि उन्हें प्रधानमंत्री पर अंगुली उठाने का मौका मिल जाए।

कुल मिलाकर हम किसी गफलत में न रहें। भारत के बारे में पश्चिमी मीडिया के अपने राजनीतिक एजेंडे पर काम करने वाले संवाददाताओं की तुलना में केंद्र एवं राज्यों का राजनीतिक नेतृत्व और अन्य संस्थान ज्यादा बेहतर सोच सकते हैं। अमेरिकियों को अपने ग्रह-नक्षत्रों को धन्यवाद अदा करना चाहिए कि ये पत्रकार उनकी सरकार को सलाह नहीं दे रहे हैं। हमें प्रधानमंत्री मोदी की उस टिप्पणी को याद करना चाहिए कि अगर ये 21 दिन नहीं संभले तो हम 21 साल पीछे चले जाएंगे। इसके साथ ही हमें पश्चिमी मीडिया से कहना चाहिए कि भारत सुरक्षित हाथों में है और आप अपना ख्याल रखें।

(लेखक राजनीतिक विश्लेषक एवं वरिष्ठ स्तंभकार हैं)

response@jagran.com

और जरूरी साबित होता एनपीआर

रमेश कुमार दुबे

एनपीआर आपदा प्रभावित लोगों की तलाश करने और उन्हें राहत पहुंचाने में भी कारगर होता

जो लोग मोदी सरकार की जनधन बैंक खाते, राशन कार्डों को आधार संख्या से जोड़ने, प्रत्यक्ष नकदी हस्तांतरण जैसी योजनाओं का निजता के हनन के नाम पर विरोध कर रहे थे उन्हें आज यह बताना चाहिए कि यदि ये उपाय न किए गए होते तो कोरोना आपदा के समय करोड़ों लोगों के बैंक खातों तक तुरंत मदद कैसे पहुंच पाती? कोरोना महामारी से निपटने के लिए प्रधानमंत्री द्वारा घोषित 21 दिन के लॉकडाउन के बाद एक ओर जहां महानगरों से कामगारों का पलायन शुरू हो गया तो दूसरी ओर उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने तत्काल 27.50 लाख मनरेगा श्रमिकों के खातों में 611 करोड़ रुपये की धनराशि हस्तांतरित कर दी। इसी तरह केंद्र सरकार ने 1.70 लाख करोड़ रुपये के पैकेज की घोषणा की जिसमें राशन कार्ड धारकों, उज्ज्वला लाभार्थियों, महिला जनधन खाता धारकों, बुजुर्गों, विधवाओं, विकलांगों, किसानों को त्वरित राहत पहुंचाई गई। इससे देश की बहुसंख्यक आबादी लॉकडाउन के दुष्प्रभावों से बच गई और उनमें महानगरों के कामगारों की भांति अफरातफरी नहीं मची। प्रवासी कामगारों में अफरातफरी मची तो इसी कारण कि सरकार के पास उनका डिजिटल रिकॉर्ड नहीं है। यदि राष्ट्रीय जनसंख्या रजिस्टर और राशन कार्डों को आधार संख्या से जोड़ने जैसे उपाय पूरे कर लिए गए होते तो इन मजदूरों तक भी तुरंत नकद और खाद्यान्न सहायता पहुंचाई जा सकती थी।

यदि मोदी सरकार ने डिजिटल इंडिया के तहत नकदी हस्तांतरण की बिचौलिया मुक्त व्यवस्था न की होती तो क्या इतनी बड़ी आबादी को तुरंत सहायता पहुंचा पाना संभव होता? हरगिज नहीं, क्योंकि देश में आपदा के समय राहत सामग्री हड़पने और कल्याणकारी योजनाओं में बंदरबाट करने वालों की कमी नहीं है। भ्रष्ट नेताओं, नौकरशाहों, ठेकेदारों की तिकड़ी ने जनकल्याण के बजाय अपना घर भरने को प्राथमिकता दी है। यहां पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी का कथन प्रासंगिक है कि दिल्ली से एक रुपया भेजते हैं तो गांवों तक 15 पैसे ही पहुंचता है, 85 पैसा बिचौलिए हड़प लेते हैं। यदि देश में गरीबी, बेकारी, असमानता, नक्सलवाद की जड़ तलाशी जाए तो वह इसी संगठित लूट में ही मिलेगी।

बिचौलिया मुक्त व्यवस्था बनाने में की दिशा में मोदी सरकार का पहला ठोस कदम था सभी भारतीयों का बैंक खाता। इसके लिए 2014 में जनधन योजना शुरू की गई और इस योजना के तहत 38 करोड़ बैंक खाते खोले गए। इन नए बैंक खातों में से 53 प्रतिशत खाते महिलाओं द्वारा खोले गए। विश्व बैंक ने इस मुहिम की प्रशंसा करते हुए कहा था कि इससे देश की करोड़ों महिलाओं को औपचारिक बैंकिंग तंत्र से जुड़ने का मौका मिला। जनधन योजना ने गांवों और शहरों के बीच की खाई को भी पाटने का काम किया। विश्व बैंक की रिपोर्ट के अनुसार इस योजना के तहत देश में जितने बैंक खाते खोले गए उसमें से 58 प्रतिशत ग्रामीण एवं कस्बाई इलाकों में स्थित बैंक शाखाओं में खुले। इन सबका नतीजा यह हुआ कि आज 80 प्रतिशत से अधिक बालिगों के पास बैंक खाता है, जबकि 2014 में यह अनुपात महज 50 प्रतिशत था। पूरे देश में ई-गवर्नेंस, ई-हेल्थ, ई-एजुकेशन, ई-बैंकिंग, स्मार्ट फोन, इंटरनेट जैसी सुविधाएं मुहैया कराने के लिए मोदी सरकार ने 2015 में डिजिटल इंडिया योजना की शुरुआत की। इसका उद्देश्य हर स्तर पर कागज रहित प्रक्रिया को अपनाना था, ताकि बिचौलियों की सत्ता खत्म हो जाए।

कोरोना आपदा ने राष्ट्रीय जनसंख्या रजिस्टर (एनपीआर) और राष्ट्रीय नागरिकता रजिस्टर (एनआरसी) की प्रासंगिकता को एक बार फिर उजागर कर दिया। यदि केंद्र एवं राज्य सरकारों के पास जनसंख्या संबंधी प्रामाणिक डाटाबेस होता तो वे उसी आधार पर संक्रमण की जांच कर पातीं और आपदा की स्थिति में प्रभावित लोगों तक तुरंत मदद पहुंचा देतीं। यहां दक्षिण कोरिया का उदाहरण प्रासंगिक है जहां पहचान, जांच और इलाज अर्थात ट्रिपल टी फॉर्मूले के जरिये कोरोना मरीजों की संख्या रोकने में मदद मिली। दक्षिण कोरिया में चौबीसों घंटे, सातों दिन चलने वाले ऐसे आधुनिक केंद्र बनाए गए जहां लोग गाड़ी में बैठे-बैठे टेस्ट करा सकते हैं। यह प्रक्रिया 10-15 मिनट में पूरी हो जाती है।

भारत के संदर्भ में सबसे दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति यह है कि यहां की आबादी का कोई डाटाबेस नहीं है जिससे यह नहीं पता चल पाता कि कौन देश में आ रहा है और कौन जा रहा है? इसी का फायदा उठाकर लाखों बांग्लादेशी घुसपैठिए देश के नागरिक बन चुके हैं। इसी का अनुसरण म्यांमार के रोहिंग्या कर रहे हैं। घुसपैठियों, शरणार्थियों के अलावा देश में दुनिया भर के हजारों ऐसे लोग रह रहे हैं जिनका कोई पता-ठिकाना नहीं है। एनपीआर होता तो शायद निजामुद्दीन स्थित तब्लीगी जमात में दुनिया के कई देशों से आए लोगों की जानकारी समय रहते हो जाती। कोरोना संकट को देखते हुए भले ही सरकार ने जनगणना 2021 और एनपीआर तैयार करने के कार्य को अगले आदेश तक स्थगित कर दिया हो, लेकिन एनपीआर की जरूरत को झुठलाया नहीं जा सकता। एनपीआर डाटा बेस में जनसांख्यिकी एवं बायोमीट्रिक जानकारी रहेगी। एनपीआर का उद्देश्य है देश के सभी नागरिकों की पहचान को व्यापक डाटाबेस के साथ जोड़ा जाए ताकि सरकारी योजना का लाभ सही व्यक्ति तक पहुंचे। एनपीआर से आपदा के समय प्रभावित लोगों की ट्रैकिंग और उन तक राहत सामग्री पहुंचाने का काम आसान हो जाएगा। इसके साथ-साथ इससे आंतरिक सुरक्षा सुदृढ़ करने और आतंकी गतिविधियों को रोकने में भी सहायता मिलेगी।

(लेखक केंद्रीय सचिवालय सेवा के अधिकारी हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

उदारता

मृदा (मिट्टी) होना गुरु होना है। उसमें गुरुता भी है, गुरुत्व भी और गुरुत्वाकर्षण भी। उसमें मृत्यु भी है, जीवन भी। जड़ता भी है, चेतनता भी। कठोरता भी है, मृदुता भी। उर्वरता भी है, बांझपना भी। रसमयता भी है, नीरसता भी। राग भी है, वैराग भी। ज्ञान भी है, विज्ञान भी। भूगोल भी है, इतिहास भी। दर्शन भी है, प्रदर्शन भी। मृदा की इस अकूत संपदा की व्युत्पत्तिस्थल है पवित्र वसुंधरा। विश्व के समूचे दर्शन, ज्ञान, विज्ञान, सृजन, चिंतन, साधना, आस्था, विश्वास एवं संपूर्ण जीव-जगत के जीवन की आधारशिला मात्र यही दिव्य धरा है।

यह उदारमना वसुंधरा राजा या रंक, ऊंच या नीच, उदार या कृपण, संपन्न या विपन्न, सक्षम या अक्षम, शक्तिशाली या शक्तिहीन, स्वस्थ या रुग्ण, परिश्रमी या परिश्रमहीन और जड़ या चेतन के मध्य किसी भी प्रकार का भेद नहीं करती। वह तो प्रदाता है, वितरक है, उत्पादक है, निर्मात्री है और उद्गमस्थली है उर्वरता तथा सृजनशीलता की। जिसमें जितनी शक्ति है, वह उससे जितना चाहे ग्रहण करे। चाहे वह ज्ञान-संपदा हो, धन-धान्य अथवा खनिज संपदा। वह सभी को उसी उत्साह एवं उदारता से अपनी संपदा के उपयोग तथा उपभोग करने की स्वतंत्रता प्रदान करती है। उनके लालन-पालन में किसी प्रकार की कोताही अथवा भेदभाव नहीं करती।

गुरु एवं ज्ञान उस दुग्ध अथवा मृदा के समान हैं जो कभी पानी के संग मिलकर दही, मक्खन, घी अथवा मृदा-पात्रों की सामग्री, मृदा पात्र बन जाते हैं। जन्म-जन्मांतरों के पुण्य प्रभाव से ही सद्गुरु एवं पुण्य-प्रतापी वसुंधरा की प्राप्ति संभव है और तभी जिज्ञासा, प्रभुकृपा एवं सद्प्रेरणा से संपूर्ण सृष्टि का कल्याण संभव है। सद्गुरु की असीम कृपा, सच्चे स्नेह एवं पुण्य धरा की उदारता तथा जीव के सद्चिंतन-कर्म से मानव जीवन का कल्याण और सच्चे अर्थों में आत्ममुक्ति संभव है।

प्रो. दिनेश चमोला 'शैलेश'

मोटापा बढ़ने का खतरा

सुधीर कुमार

प्रतिष्ठित स्वास्थ्य पत्रिका लैंसेट में प्रकाशित एक रिपोर्ट के मुताबिक भारत में मोटापे से ग्रस्त लोगों की संख्या बड़ी तेजी से बढ़ रही है। इस मामले में भारत मोटापे के शिकार 135 मिलियन आबादी के साथ चीन तथा अमेरिका के बाद दुनिया का तीसरा, जबकि बच्चों में मोटापा के मामले में चीन के बाद दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा देश बन चुका है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण के अध्ययन की मानें तो देश में ज्यादा वजन वाले लोगों की आबादी पिछले एक दशक में दोगुनी हो गई है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के मुताबिक दुनिया का हर छठा व्यक्ति मोटापे की समस्या से जूझ रहा है। मोटापे की वजह से हर साल करीब 28 लाख लोगों की जान चली जाती है। मोटापा एक ऐसी बीमारी है, जो स्त्री, पुरुष एवं बच्चे किसी को भी हो सकती है। आमतौर पर मोटापा अनियमित एवं अनियंत्रित खानपान, फास्ट फूड का अधिक सेवन, व्यायाम से दूरी तथा सेहत के प्रति लापरवाही के चलते शरीर में अतिरिक्त वसा के संकेंद्रण के रूप में जन्म लेता है। अमेरिका और ब्रिटेन जैसे कुछ देशों में मोटापा को बीमारी के तौर पर लिया जाता है। कई देशों में 'फैट टैक्स' और 'शुगर टैक्स' लगाकर लोगों को मोटापे से दूर रखने के लिए प्रयास किए जा रहे हैं। इसके बरक्स भारत में मोटापा को लेकर लोगों में जागरूकता न के बराबर है। देश में लगभग 60 फीसद लोग 6 से 7 साल केवल यह सोचने में लगा देते हैं कि बढ़ते मोटापे के इलाज के लिए डॉक्टरी सलाह लें अथवा नहीं। गौरतलब है कि मोटापा न सिर्फ अपने आप में एक बड़ी बीमारी है, बल्कि इसे नजरअंदाज करने से मधुमेह, हृदय रोग, श्वसन रोग, कैंसर, प्रजनन संबंधी विसंगति, तनाव एवं चिड़चिड़ापन सहित 53 बीमारियों का खतरा भी बढ़ जाता है। एक तरफ देश में कुपोषण की समस्या चरम पर है तो दूसरी तरफ बढ़ता मोटापा भी नासूर बनता जा रहा है। मोटापे की वजह से लोगों की क्रियाशीलता में कमी आती है, जो सकल घरेलू उत्पाद को प्रभावित करती है। मोटापे की वजह से होने वाली बीमारियों के ऊपर खर्चे का बढ़ता ग्राफ भी चिंता का विषय बना हुआ है।

कोरोना महामारी के चलते देश इन दिनों 'लॉकडाउन' के कठिन दौर से गुजर रहा है। लोगों का अधिकांश समय घर पर ही गुजर रहा है। लिहाजा शारीरिक श्रम के अभाव में मोटापा बढ़ने की संभावना प्रबल है। ऐसे में इन दिनों सेहत का ध्यान रखना बेहद जरूरी है। नियमित रूप से व्यायाम करें। घरेलू कामों में हाथ बटाएं। फल एवं हरी सब्जियों का अधिक सेवन करें। पौष्टिक तथा संतुलित आहार लें। फास्ट फूड से दूरी बनाएं। पर्याप्त नींद लें। सकारात्मक सोचें। इस तरह की संतुलित दिनचर्या का नियमित रूप से पालन करके मोटापा तथा उससे जन्म लेने वाली बीमारियों से बचा जा सकता है।

(लेखक बीएचयू में अध्येता हैं)

> इस समय लोगों का अधिकांश समय घर पर ही गुजर रहा है। लिहाजा शारीरिक श्रम के अभाव में मोटापा बढ़ने की संभावना है

मेलबाक्स

कामगारों का रखा है ध्यान

विवेक कौल ने अपने आलेख 'लॉकडाउन के अनदेखे असर' में आरोप लगाया है कि असंगठित क्षेत्र के कामगारों और श्रमिकों पर लॉकडाउन का क्या प्रभाव पड़ेगा, इसका सरकार को पूर्वानुमान होना चाहिए था, मगर अफसोस कि ऐसा नहीं हुआ। लेखक स्मरण करें, 24 मार्च को लॉकडाउन घोषित किया गया और अगले दिन ही 170000 करोड़ रुपये की राहतों का एलान वित्त मंत्री ने किया। इन राहतों का मुख्य लक्ष्य संगठित एवं असंगठित क्षेत्र के श्रमिक ही थे। मोदी सरकार की इस मामले में तत्परता की प्रशंसा विश्व स्वास्थ्य संगठन के अध्यक्ष तक ने की है। उनका कहना है कि अन्य देशों को भारत का अनुकरण करना चाहिए। जब युद्ध शुरू होते ही रातों में ब्लैक-आउट किया जाता है तो पूरा देश अंधेरे में डुबो दिया जाता है। कारखाने ठप, दुकानें अचानक से बंद, बाजारों में अफरातफरी, अस्पतालों में ऑपरेशन स्थगित जैसी मुसीबतें आ जाती हैं। युद्ध लड़ना है तो सहसा आने वाले इस घटनाक्रम को न चाहते हुए भी अपनाना पड़ता है। कोरोना ने भी युद्ध की स्थिति उत्पन्न की है। इसलिए खास तौर पर प्रारंभिक अवस्था में कुछ कमियां दिख सकती हैं। उन पर समय के साथ काबू भी पा लिया जाएगा, इसमें मोदी जैसा नेतृत्व हो तो भरोसा और बढ़ जाना चाहिए।

पूनम मित्तल, मोहनपुरी, मेरठ

खतरे में मानवता

कोरोना वायरस के कहर से आज पूरी दुनिया बुरी तरह कराह रही है। इस तरह की महामारी और प्राकृतिक आपदाएं पहले भी देश और दुनिया में आती रही हैं जिसका मानव ने डटकर मुकाबला भी किया है। बड़ी बेरहमी से प्राकृतिक संसाधनों पर हमला जिसमें पेड़ों, पर्वतों और जीव-जंतुओं आदि के तेजी से व्यापक खात्मे और बड़े स्तर पर उद्योगीकरण आदि से उत्पन्न प्राकृतिक असुंतलन के साथ मांसाहार भी इसका प्रमुख कारण है। इसके लिए किसी एक देश या धर्म को दोषी ठहराना भी उचित नहीं है, क्योंकि यह कहीं और कभी भी हो सकता है। यह किसी स्थान और समय से बंधा नहीं होता। इसलिए इसका सभी को मिलकर मुकाबला करना ही हितकर है। इसी तरह से इसे आसानी से रोका जा सकता है। मगर खेद है कि कुछ कट्टरपंथी तत्व इसमें गलत तरीके से पेश आ रहे हैं जो सभी के साथ खुद अपने पैरों में भी खुद कुल्हाड़ी मार रहे हैं। हम सभी को भाईचारे और प्रेम से मिलकर इससे लड़ना है। सभी धर्मों से बड़ा धर्म तो मानवता ही है। हम सबकी थोड़ी सी लापरवाही और अज्ञानता से अब तक की सारी तपस्या बेकार हो सकती है। इसलिए इसे बड़ी गंभीरता से लेने की जरूरत है।

वेद मामूरपुर, नरेला

डॉक्टरों के साथ दुर्व्यवहार

जिस डॉक्टर को भगवान के रूप में देखा जाता है, उस भगवान के साथ बुरा बर्ताव करना कहां तक सही है? इसका आकलन खुद से करना चाहिए, वो भी ऐसे समय में जब कोरोना वायरस से भारत ही नहीं, पूरा विश्व परेशान है। ऐसे भीषण संकट में डॉक्टर लोग अपने प्राण की परवाह किए बिना पीड़ित इंसान को स्वस्थ करने में रात-दिन एक किए हुए हैं। लेकिन जिस प्रकार से देश के अलग-अलग जगहों से डॉक्टरों और पुलिस-प्रशासन के लोगों के साथ दुर्व्यवहार की शिकायत आ रही है ये वास्तव में बहुत दुःखद और शर्म की बात है। जो डॉक्टर सिर्फ इसलिए अपने प्राणों को दांव पर लगा दे रहा कि किसी भी दशा में पीड़ित इंसान ठीक हो जाए, उसके साथ गलत व्यवहार करना इंसानियत का गला घोंटना है।

नीरज कुमार पाठक, नोएडा

मिलकर लड़ें

भारत अभी भी दूसरे देशों की तुलना में कोरोना की जंग में काफी अच्छी स्थिति में है। कोरोना से जंग किसी एक वर्ग की नहीं, बल्कि पूरे देश की है। ऐसे में पूरे देश को साथ आना होगा। यह समय राजनीति करने का नहीं, बल्कि देश में सभी पार्टियों एवं नेताओं को साथ मिलकर कोरोना जैसी खतरनाक बीमारी को भारत से खत्म करने का है।

फैसल, कर्दमपूरी, दिल्ली

इस स्तंभ में किसी भी विषय पर राय व्यक्त करने अथवा दैनिक जागरण के राष्ट्रीय संस्करण पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए पाठकगण सादर आमंत्रित हैं। आप हमें पत्र भेजने के साथ ई-मेल भी कर सकते हैं।

अपने पत्र इस पते पर भेजें :
दैनिक जागरण, राष्ट्रीय संस्करण,
डी-210-211, सेक्टर-63, नोएडा
ई-मेल : mailbox@jagran.com

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त. पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन. संपादकीय निदेशक-महेन्द्र मोहन गुप्त. प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 * इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त।

10 लाख एन-95 मास्क मांगे थे बिहार ने केंद्र से, लेकिन मिले 50 हजार। जांच के लिए आवश्यक पांच लाख पीपीइ किट में से अभी तक चार हजार ही मिली हैं और 100 वेंटिलेटर की मांग भी अभी तक पूरी नहीं हुई है।

आजकल

अनंत मित्तल
वरिष्ठ पत्रकार

कोरोना से बचाव की सामाजिक चुनौतियां

भारत की एक अरब तीस करोड़ से अधिक आबादी इन दिनों कोरोना वायरस के संक्रमण से बचने के लिए अपने-अपने घरों में बंद है। इसके सामाजिक प्रभाव बड़े पैमाने पर दिखाई दे रहे हैं। इनमें सबसे अधिक प्रभावित जहां गरीब तबका है, वहीं घर चलाने वाली और कामकाजी महिलाओं के कंधों पर भी बोझ बढ़ गया है। जाहिर है जब समाज पूरी तरह से घरों में बंद हो तो फिर सबके लिए चुनौतियां भी बढ़ जाती हैं, लेकिन हम सबको मिलकर इस चुनौती से निपटना होगा

वर्तमान समय में देश भर में घरों में बंद लोगों के लिए चारदीवारी के भीतर समय काटना मुश्किल हो रहा है। खासकर एकाकी जीवन बिता रहे लोगों तथा बुजुर्गों के लिए इस समय मानसिक अवसाद से बचने की सामाजिक चुनौती सबसे गंभीर है। बच्चों को व्यस्त रखने की चुनौती मांओं पर भारी पड़ रही है। बच्चों की खाने-पीने से लेकर साथ खेलने तक फरमाइशें मांओं और किसी हद तक पिता को भी उन्हें खुश करने और बाहर निकलने से रोकने के लिए पूरी करनी पड़ रही हैं। घर में बंद होने से बच्चे हलकान हैं, जो स्कूल के साथियों की तो बात ही छोड़िए अपने पड़ोस के हमजोलियों के साथ खेलने से भी वंचित हैं। उनके पास समय काटने का सहारा या तो टीवी-इंटरनेट रह गया अथवा घर के भीतर भाई-बहनों के बीच खेले जाने लायक खेल ही हैं। वीडियो गेम्स विक्रेताओं की मानें तो लॉकडाउन के आरंभिक हफ्ते में ही उनके गेम्स की मांग में 25 से 30 फीसद इजाफा हो चुका है। हालांकि ऐसे समय में दूरदर्शन ने रामायण और महाभारत जैसे धारावाहिकों का फिर से प्रसारण करके घर में बैठे लोगों को स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने की अच्छी पहल की है।

कामकाजी पति-पत्नी के लिए तो यह समय और भी कठिन है, क्योंकि उन्हें जहां घर की चारदीवारी के भीतर ही अपना पेशेवर काम रोजाना नियत समय के भीतर पूरा करना है वहीं बच्चों को व्यस्त रखकर माहौल को शांतिपूर्ण बनाए रखने की भी चुनौती है। घर के भीतर से ही अपना पेशेवर काम करने की चुनौती ने दफ्तर के सारे तनावों को भी घर की चारदीवारी के भीतर ला खड़ा किया है। कामकाजी मांओं को घर में रहते हुए ही अपना पेशेवर काम करके परिवार की जरूरतें भी पूरी करनी हैं। उन्हें यह दोहरी जिम्मेदारी इस पूरे महीने बिना किसी सहायक के निभानी है। इससे उन पर शारीरिक और मानसिक दबाव बढ़ रहा है।

बच्चों को चूंकि स्कूल नहीं जाना इसलिए उनकी पढ़ाई को घर पर जारी रखना भी चुनौती है। उन्हें दिन भर घर के भीतर बांधे रखना तभी संभव होगा जब उन्हें किसी उपयोगी एवं मनोरंजक गतिविधि में व्यस्त रखा जाए। इसलिए उनको घर के काम में हाथ बंटाने के लिए प्रशिक्षित करने का यह सबसे उपयुक्त समय है। घर के सभी सदस्य अगले कम से कम दस दिनों तक तो चौबीसों घंटे घर के भीतर ही रहने वाले हैं इसलिए उनमें सामंजस्य आवश्यक है। बड़े-बुजुर्गों की देखभाल, उनकी खुराक और कोरोना की छूत से बचाए रखने तथा व्यायाम संबंधी जरूरतों का ख्याल भी उतनी ही जरूरी है।

यदि किसी घर में कोरोना की छूत से ग्रस्त कोई मरीज है अथवा उसके लक्षणों से ग्रस्त घर के किसी सदस्य को 14 दिन क्वारंटाइन यानी घर में सबसे अलग-थलग रखना है तो सामाजिक चुनौती और भी विकराल है। छूतग्रस्त परिवारों में घर के सभी बालिगों को खुद तो बेहद सावधानी बरतनी ही पड़ रही है, बच्चों और बुजुर्गों का भी विशेष ख्याल रखना पड़ रहा है। ऐसे परिवारों के सामने आर्थिक चुनौती भी बढ़ रही है, क्योंकि कोरोना की प्राथमिक जांच ही सरकार ने 4,500 रुपये तय की है। कोरोना कर्मवीरों के सामने एक नई समस्या सामने आई है। कोरोना की चपेट में आए या आशंकित लोग व उनके परिजन स्वास्थ्यकर्मियों की मदद करने के बजाय उन पर कई तरीकों से हमले कर रहे हैं। बीते तीन-चार दिनों से देश भर में कई जगहों से स्वास्थ्यकर्मियों पर पथराव करने और उनके साथ दुर्व्यवहार करने की अनेक शिकायतें आई हैं जो निश्चित रूप से निंदनीय कृत्य है। ऐसे लोग समाज के अपराधी हैं और उन्हें इसकी सजा मिलनी ही चाहिए। मध्य प्रदेश समेत कई राज्य सरकारों ने ऐसे लोगों के साथ सख्ती से पेश आने की बात कही है जिसे जल्द से जल्द अमल में लाया जाना अनिवार्य है। इस निहायत अमानवीय रवैये की शिकायत मिलने पर सरकार तो कार्रवाई करेगी ही, मगर क्या समुदाय और समाज के रूप में हम इतने खोखले हो गए हैं कि मानवता के इन सेवकों पर हम इसलिए पथराव कर रहे हैं, क्योंकि वे हमारी जान बचाने के लिए अपनी जान जोखिम में डाल रहे हैं?

हमें यह समझना होगा कि देश भर में अभी तक ऐसा एक भी मामला सामने नहीं आया कि कोरोना की छूत लगने के डर से कोई अस्पतालकर्मी नौकरी छोड़ कर भागा हो अथवा कोई पुलिसकर्मी वर्दी खूंटी पर टांग कर अपने घर पर बैठ गया हो या फिर किसी दवा दुकानदार अथवा मदर डेयरी-सफल सब्जी-फल बूथ संचालक ने दुकान खोलने तथा जनता को उनकी रोजमर्रा की जरूरत की खुराक देने से मना कर दिया हो। इसके बावजूद कोरोना महामारी से लड़ने के लिए सामाजिक एवं औद्योगिक संगठनों तथा विभिन्न हस्तियों ने आर्थिक एवं महामारी से निपटने के साजो-सामान की सहायता का खुले दिल से एलान किया है। अनेक सार्वजनिक उद्योगों ने हजारों मास्क दान में दिए हैं। रोज इस तरह की खबरें आ रही हैं कि देश भर की जेलों में और समाजसेवियों द्वारा मास्क तैयार किए जा रहे हैं और वितरित किए जा रहे हैं।

हालांकि आज विभिन्न समाजसेवी संगठन और व्यक्ति अपने-अपने स्तर से लोगों की मदद करने में जुटे हैं, फिर भी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा कोरोना से किसी न किसी तरह से आर्थिक रूप से प्रभावित लोगों की मदद के लिए जो पीएम केयर्स फंड का गठन किया है उसमें दान देने के लिए लोग व्यापक संख्या में आगे आ रहे हैं। भले ही आरंभ में इसमें आने वाली रकम प्रभावित लोगों को मुहैया कराई जाने वाली रकम के अनुपात में कम प्रतीत हो रही हो, लेकिन अच्छी बात यह है कि इसमें उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है। टाटा से लेकर अंबानी तक ने सरकार को अनेक तरीकों से मदद मुहैया कराने की पेशकश की है। और कर भी रहे हैं।

कोरोना से बचाने को करीब 50 देशों की सरकारों ने ढाई अरब से ज्यादा लोगों को जनबंदी के तहत अपने घरों में सीमित कर रखा है। दुनिया भर में 50,000 से अधिक लोगों की जान जा चुकी है। भारत में वैसे तीन-चार दिन पहले तक ऐसा लग रहा था कि 14 अप्रैल तक जारी लॉकडाउन की अवधि में उस लक्ष्य को हासिल कर लिया जाएगा जिस मकसद से ऐसा किया गया था, लेकिन बीते तीन-चार दिनों में जिस तरह से लगातार मामले बढ़ते जा रहे हैं, वैसी दशा में शायद 14 अप्रैल तक इस लक्ष्य को हासिल करना मुश्किल दिख रहा है। देश में कोरोना प्रभावितों की संख्या दो हजार तक पहुंच चुकी है, जबकि मरने वालों की संख्या भी पचास से अधिक हो चुकी है। हालांकि बड़े पैमाने पर लोगों की जांच नहीं होने के कारण कोरोना पीड़ितों की सही संख्या इससे कहीं ज्यादा होने की आशंका स्वास्थ्य विशेषज्ञ जता रहे हैं। अब सरकार के सामने जनता के बीच जाकर बड़ी संख्या में उनकी जांच करने की चुनौती है। देश में उपलब्ध इलाज सुविधाओं के बूते चूंकि कोरोना पीड़ितों की आशंकित संख्या का इलाज संभव नहीं था इसलिए अस्थाई स्वास्थ्य सुविधा तैयार की जा रही है। इसकी जांच में इतालवी सरकार की आपराधिक लापरवाही से सबक लेना जरूरी है। देखना यही है कि भारत सरकार कोरोना की छूत का घर-घर विस्फोट होने पर घुटती सांसें थामे नागरिकों के अस्पताल दौडने का इंतजार करेगी या फिर उनकी बड़े पैमाने पर जांच करके उसकी छूत से बेखबर दूसरों को मौत बांटने वालों को चिन्हित करके उनकी जान बचाने के कर्तव्य का चुस्ती से निर्वाह करेगी?

आमजन की मुसीबतों को कम करने की कोशिश

लॉकडाउन को सख्ती से लागू करने को जहां पुलिस प्रशासन मुस्तैद है वहीं लोगों को जरूरी सामान मुहैया कराने का जिम्मा जिला प्रशासन और नगर निकायों के हाथ में है। मदर डेयरी और राज्यों की सरकारी डेयरियां दूध, दही, घी आदि की आपूर्ति कर रही हैं। दिल्ली में घर-घर राशन पहुंचाने की जवाबदेही नागरिक आपूर्ति विभाग की है। सेना और अर्धसैनिक बलों द्वारा रातों-रात सैकड़ों बिस्तर वाले निगरानी एवं इलाज कक्ष तैयार किए जा रहे हैं।

सरकारी स्कूलों में दोपहर भोजनशालाओं में खाना पकाकर जरूरतमंदों में बांटा जा रहा है। सरकारी बैंकों के जनधन खातों में कमजोर तबकों के लिए सरकार द्वारा नकद राशि जमा की जा रही है। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने इस संबंध में सराहनीय पहल करते हुए मनरेगा समेत तमाम पंजीकृत मजदूरों के खाते में राहत रकम भेजने की शुरुआत की जिसके बाद अनेक राज्यों के मुख्यमंत्रियों ने भी यह काम शुरू किया। इस तरह कोरोना वायरस की जानलेवा छूत से नागरिकों को बचाने-संभालने और उनकी जांच-निगरानी तथा इलाज आदि में चारों ओर सरकारी तंत्र ही मुस्तैद नजर आ रहा है। इससे स्पष्ट है कि भारत जैसे विशाल आबादी और बहुस्तरीय आर्थिक स्थिति वाले देश में सरकारी तंत्र बेहद अहम है।

कोरोना का सबसे बड़ा सामाजिक असर नागरिकों की दिनचर्या में सरकारी तंत्र की महत्वपूर्ण भूमिका के रूप में सामने आया है। वर्ष 1991 में अर्थव्यवस्था के उदारीकरण और वैश्वीकरण के बाद से सार्वजनिक क्षेत्र में सरकारी तंत्र की भूमिका समेटने और निजी हाथों में तमाम सामाजिक-आर्थिक गतिविधियां सौंप देने का जुमला बार-बार सुनाया जा रहा था। इसी सिद्धांत के तहत टेलीकॉम से लेकर नागरिक उड्डयन, बंदरगाह प्रबंधन, राजमार्ग निर्माण और रखरखाव, स्थानीय निकायों के अनेक कार्यों आदि का निजीकरण किया जा चुका है। अब तो रेलवे की अनेक सेवाएं भी निजी कंपनियों को सौंपी जा रही हैं, पर इस महामारी से नागरिकों को बचाने की मुहिम में सरकारी तंत्र ही अग्रणी भूमिका में है। कोरोना वायरस की जांच, निगरानी और इलाज का काम ज्यादातर सरकारी प्रतिष्ठानों में ही हो रहा है।

लॉकडाउन के प्रतिकूल सामाजिक प्रभाव से निपटने को बैंकों का कर्ज सस्ता करने तथा कर्ज की किस्तों की वसूली तीन महीने टालने का एलान तथा भारतीय स्टेट बैंक द्वारा उस पर अमल भी हुआ है। केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा गरीबों, किसानों, कामगारों, महिलाओं, बुजुर्गों को सहारा देने के लिए एक करोड़ सत्तर लाख रुपये के राहत पैकेज का एलान पहले ही किया जा चुका है। अनेक राज्य सरकार भी अपनी ओर से अनेक कल्याणकारी उपाय लागू कर रहे हैं ताकि आमजन की मुसीबतों को कम किया जा सके।

खरी-खरी

गो कोरोना, कोरोना गो!

ओम वर्मा

उन्होंने अपने आठ-दस लग्गू-भग्गू इकट्ठे किए और जोर से नारा लगाया-गो कोरोना, गो! गो कोरोनाए गो! सारे पिछलग्गुओं ने यह एक स्वर में दोहराया। यह क्रम तब तक चलता रहा जब तक अंतिम कैमरामैन अपनी दुकानदारी समेटकर चला नहीं गया। सर, नारे लगाने से कोरोना कैसे चला जाएगा? मैंने बुद्धिजीवियों की तरह सवाल किया।

अरे कइसे नहीं जाएगा भाई! तनिक नारों का इतिहास पढ़के आइए। बापू का किए थे? नारा ही तो दिए थे न! जब बापू ने, अंगरेजों भारत छोड़ो, का नारा दिया तो फिरंगी चले गए थे अपने देश। लेकिन सर, उनके साथ तो बहुत सारे अनुयायी थे! ये हमरे पीछे देख रहे हो। कौन हैं ये, अनुयायी ही तो हैं। दाल-भात का इंतजाम करते हैं हम इनका। और यह लगाते हैं हमरे लिए नारा।

सर, लेकिन ये तो नारों का परिवर्तित स्वरूप है ना! देखो भई, परिवर्तन तो संसार का नियम है, तो फिर नारे क्या चीज हैं। अब देखो, जब पूर्व पीएम ने गरीबी हटाओ का नारा दिया, तो गरीबों की गरीबी हट गई का? नहीं न? फिर उनके अपने लोगों ने नारे में तनिक परिवर्तन किया और गरीबों की जगह खुद की गरीबी हटा ली। तब जाकर गरीबी हटी। और तबसे लगे ही हुए हैं गरीबी हटाने में। इसलिए परिवर्तन जरूरी है। पर कोरोना तो वायरस है। वह नारों से कैसे भागेगा? अरे भई, साइमन गो बैक कहने से सा मन चला गया था क्या? छाती पर मूंग दली थी कि नहीं उसने। लेकिन लालाजी के बाद भी जनता ने नारा देना बंद तो नहीं किया था न! नारा तो देना पड़ता है भाईसाब, बहुतै जरूरी है। अब इस वायरस को साइमन समझ लो और हमको लालाजी। जरा सिचुएशन को समझो। जो शक्ति नारों में होती है, वह तलवार में भी नहीं होती।

लेकिन मुझे तो ये बात जरा भी समझ नहीं आ रही कि खतरनाक वायरस नारा सुनकर भाग जाएगा। तुम वायरस से भी ज्यादा जिद्दी हो। अभी हम अपने पीछे खड़े इन छुटभइयों को छू कर देंगे, तो तुम यहां से भागोगे कि नहीं? बस, समझ लो वायरस भी वैसे ही भाग जाएगा। अब तुम माइक समेटो और हमारे साथ नारा लगाओ, गो कोरोना गो, वरना मेरे ये अनुयायी तुम्हें यहीं के यहीं क्वारंटाइन कर देंगे।

ट्वीट-ट्वीट

पिछली बार देश के तमाम लोगों ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा शंख, घंटी, ताली और थाली बजाने के आह्वान का मखौल उड़ाया था, लेकिन जब उन्हें यह मालूम पड़ा कि ब्रिटेन समेत दुनिया के कई देशों में ऐसा हुआ तब उनकी बोलती बंद हो गई। अब वही लोग फ्लैशलाइट वाली प्रधानमंत्री की पहल का उपहास उड़ाएंगे और एकजुटता की कवायद में मीनमेख निकालेंगे।

राहुल कंवल@rahulkanwal

विकट संकट की इस घड़ी में देश के लोगों में एकजुटता बढ़ाने की कोशिश के प्रत्येक उपाय की सराहना की जानी चाहिए, लेकिन यह भी सच है कि ये कोरोना के खिलाफ कारगर लड़ाई का विकल्प नहीं हो सकते। इसके लिए हमें सुविचारित रणनीति की दरकार होगी जो वैज्ञानिक साक्ष्यों और सबसे बेहतरीन तौर-तरीकों पर आधारित हो।

प्रशांत किशोर@PrashanKishor

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आह्वान पर देश के कुछ अभिजात्य लोगों के पेट में उठती मरोड़ की वजह साफ समझी जा सकती है। लेकिन उन्हें यह समझना चाहिए कि प्रधानमंत्री उनसे नहीं, बल्कि उन करोड़ों लोगों से मुखातिब होते हैं जिनको उन्हें इस युद्ध में हौसला देना है। अपने सिपाहियों का उत्साह बढ़ाना किसी भी सेनापति का दायित्व होता है।

संदीप घोष@SandipGhosh

जागरण जनमत कल का परिणाम

क्या मौजूदा स्थिति को देखते हुए आठवीं कक्षा तक के सभी बच्चों को पास करने का सरकार का फैसला सही है?

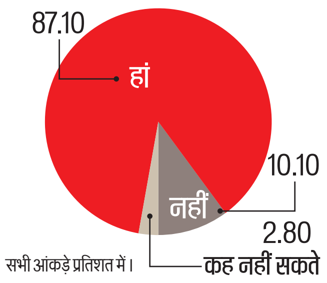

सभी आंकड़े प्रतिशत में।

आज का सवाल

क्या सोनिया गांधी का यह कहना सही है कि 21 दिनों का देशव्यापी लॉकडाउन बिना तैयारी के लागू किया गया?

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है।

जनपथ

नंगे होकर घूमते उन्हें न आती लाज,
भूल गए शायद मियां ये है योगी राज।
ये है योगी राज अगर छाएगी मस्ती,
तो कानूनी लट्ठ मिटा डालेगी हस्ती।
सुधर गए जो लोग किया करते थे दंगे,
अब सुधरोगे आप अगर घूमोगे नंगे।

– ओमप्रकाश तिवारी

आलोक मिश्रा
स्थानीय संपादक,
बिहार

बिहार डायरी

काबू होते हालात में तब्लीगियों का ढेला

कोरोना के कहर से बचने के लिए लॉकडाउन का हथियार ही असरदार है। बोलते आंकड़े इस हकीकत को बयां कर रहे हैं, लेकिन इसी बीच तब्लीगी मरकज की हरकत ने सबको सकते में डाल दिया। देश के अधिकांश हिस्से की तरह बिहार भी इससे हिला है। सब कुछ ठीक चल रहा था। बाहर से जो आ रहे थे, वह धीरे-धीरे आगोश में समाते जा रहे थे, लेकिन अचानक बंद दरवाजों के भीतर इनकी मौजूदगी ने मानो ठहरे पानी में हलचल मचा दी। हर दिन नया खुलासा हो रहा है। हर जिले से इनकी मौजूदगी की खबरें आ रही हैं। कितनी संख्या है मालूम नहीं, कौन इनमें कोरोना संक्रमित है मालूम नहीं, किसने कहां वायरस बांटा मालूम नहीं? अभी तक के काबू हालात इनकी मौजूदगी से किस करवट पलटेंगे, अब इसी पर सभी की निगाहें हैं।

कुछ दिन पहले पटना के कुर्जी में एक मस्जिद में 12 विदेशियों के छुपे होने की जानकारी जब सामने आई तब तक तब्लीगियों की कारगुजारी पर्दे के पीछे थी। इसके खुलासे के बाद जिस जिले में देखो वहीं इनके जत्थे मिल रहे हैं। बिहार आने वालों की संख्या कितनी है, अभी तक यह बताने की स्थिति में कोई नहीं है। हर दिन सूची अपडेट होती है और दूसरे दिन बदल जाती है। इनकी जमात में 400 से ज्यादा कोरोना पॉजिटिव मिलने से बिहार भी चिंतित है, क्योंकि सघन आबादी वाले बिहार की स्थिति अभी काफी हद तक काबू में कही जा सकती है। कुल 29 मरीज अब तक मिले हैं, जिसमें मौत सिर्फ एक ही है यानी तीन फीसद से कुछ ज्यादा। जिसकी मौत हुई उसकी दोनों किडनियां फेल थीं। अगर इस तथ्य को ध्यान में रखकर देखा जाए तो बिहार में मौत का आंकड़ा शून्य ही कहा जाएगा। इसमें 3 लोग ठीक होकर घर भी चले गए हैं। जबकि लॉकडाउन की अवधि के बीच बिहार ने सरकारी आंकड़ों के मुताबिक अपने दामन में 1.60 लाख उन अपनों को भी समेटा, जो दूसरे देशों व राज्यों में पढ़ाई व रोजी की तलाश में गए थे। वैसे यह आंकड़ा दो लाख से ज्यादा ही होगा, क्योंकि बाहर से आने वाली भीड़ का एक बड़ा हिस्सा सरकारी निगाहों में आए बिना दाएं-बाएं से निकल गया। घर में लॉकडाउन की व्यवस्था को बनाए रखने और बाहर से आने वालों की जांच के दोहरे मोर्चे को झेल रही नीतीश सरकार अब कुछ आश्वस्त है कि जल्दी ही कोरोना पर काबू पा लिया जाएगा। उसके भरोसे का एक कारण यह भी है कि अभी तक जो मरीज सामने आए हैं, वे या तो विदेश से आए थे या उनके संपर्क में आए थे। ऐसे मरीज सीवान, गोपालगंज, छपरा, मुंगेर, बेगूसराय जैसे जिलों में ही मिले, जहां के लोग रोजी के लिए खाड़ी देशों की तरफ ज्यादा जाते हैं।

किशनगंज में तब्लीगी जमात के सदस्यों को एंबुलेंस से ले जाते स्वास्थ्यकर्मी। फाइल फोटो

मुख्यमंत्री नीतीश कुमार मोर्चा संभाले हुए हैं। आर्थिक दृष्टि से प्रदेश उतना संपन्न नहीं है कि ऐसी किसी आपदा को वह अपने बूते झेल सके। संसाधनों की काफी कमी है इसलिए लॉकडाउन के अलावा केंद्र की मदद भी सहारा है। गुरुवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से बातचीत में नीतीश ने अपनी जरूरतों पर खुलकर चर्चा की। बिहार ने केंद्र से 10 लाख एन-95 मास्क मांगे थे, लेकिन मिले 50 हजार। जांच के लिए आवश्यक पांच लाख पीपीआइ किट में अभी तक चार हजार ही मिलीं और 100 वेंटिलेटर की मांग अभी तक पूरी नहीं हुई है। बाहरी लोगों के बढ़े दबाव और उनके संपर्क में आने वालों की जांच आवश्यक है। प्रदेश सरकार की चिंता यही है कि अगर समय पर संसाधन न मिले तो अभी तक काबू स्थिति कहीं हाथ से निकल न जाए। इसलिए गांव-गांव मुखिया व जीविका दीदी को लगाया गया है कि वे आने वाले हर बाहरी की जानकारी इकट्ठा करें और गांव के बाहर स्कूलों में बनाए गए क्वारंटाइन केंद्रों में रखे जाने वालों को वहीं रोके रखें। इसी से फिलहाल बचाव का रास्ता निकल सकता है।

सरकार को प्रदेश के साथ ही अन्य प्रदेशों में रह रहे बिहार के लोगों की भी चिंता है। उनके लिए संबंधित राज्य सरकारों से समन्वय स्थापित किया गया है कि वे यहां के लोगों के रहने एवं खाने का इंतजाम करें। जो लोग रोज कमाते एवं खाते हैं, उनके लिए इंतजाम किए गए हैं। 18 लाख से ज्यादा लोगों के खातों में एक हजार की रकम डाल दी गई है ताकि वे निश्चिंत होकर घर में रह सकें।

लॉकडाउन का आधा समय गुजर गया है, अब जरूरी यह है कि लोग सख्ती से इसका पालन करें। इसके लिए स्वअनुशासन जरूरी है, जिसका कहीं-कहीं अभाव दिख रहा है। खरीदारी करने वाले भीड़ लगा रहे हैं और कुछ लोग बेवजह ही बाहर गाड़ियां दौड़ा रहे हैं। इन पर कार्रवाई भी हो रही है, लेकिन कार्रवाई के बजाय खुद समझने की जरूरत है। अगर लोग पूरी तरह से लॉकडाउन का पालन कर लें तो बिहार के आंकड़े इसी तरह काबू में रहेंगे और नीतीश का भरोसा कि जल्दी काबू पा लेंगे, हकीकत में बदल सकता है।

मंथन

डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक'
केंद्रीय मानव संसाधन
विकास मंत्री

कोरोना संकट और शिक्षा जगत

भारत समेत दुनिया भर के देशों के शीर्ष विश्वविद्यालय और शोध संस्थान कोरोना वायरस के खिलाफ लड़ाई में एक सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं

कोरोना वायरस के संक्रमण से पैदा हुई बीमारी कोविड-19 से चीन, फ्रांस, अमेरिका, स्पेन, इटली समेत पूरा विश्व स्वास्थ्य आपातकाल के साथ आर्थिक और सामाजिक संकट से जूझ रहा है। इस कठिन घड़ी में शिक्षा जगत भी एक बड़ी चुनौती का सामना कर रहा है। विश्व की एक बड़ी आबादी किसी न किसी प्रतिबंध के तहत अपने घरों में बंद है। इस महामारी की विकरालता को देखते हुए ही विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कोविड-19 के प्रकोप को महामारी घोषित किया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने सभी प्रभावित देशों से उन सभी बचाव प्रयासों को जारी रखने की अपील की है जो इस वायरस के प्रसार को धीमा करने में प्रभावी रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के भी आह्वान पर पूरा देश संक्रमण रोकने के लिए लॉकडाउन का पालन कर रहा है। जाहिर है आपदा की इस घड़ी ने सबको झकझोर कर रख दिया है। देश भर में लोगों का दैनिक जीवन ठहर सा गया है। हवाई, रेलमार्ग और सड़क मार्गों पर आवाजाही बंद है।

संकट के इन पलों में उम्मीद की किरण के रूप भारत समेत दुनिया भर के देशों के शीर्ष विश्वविद्यालय, शोध संस्थान कोरोना वायरस के खिलाफ लड़ाई में एक सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। हमारे संस्थान भी सार्वजनिक भलाई में योगदान दे रहे हैं। भारत के शीर्ष शिक्षण संस्थान अपनी शक्ति अनुसार आगे आकर पूरी तन्मयता से इस चुनौती से मुकाबला करने में जुटे हैं। हमें इस बात का ध्यान रहना चाहिए कि हम एक असाधारण और अभूतपूर्व सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट से जूझ रहे हैं। इसने दुनिया के दस लाख से अधिक लोगों को अपनी चपेट में ले लिया है। हजारों लोगों की इस महामारी के कारण मृत्यु हो चुकी है। करीब 200 देश इस महामारी से प्रभावित हुए हैं। इस रोग का मुकाबला करने के लिए जागरूकता एवं शारीरिक दूरी अत्यंत आवश्यक हैं। इसके दृष्टिगत इस बड़े संकट से उबरने के लिए भारत के 1000 विश्वविद्यालयों और 45000 से अधिक महाविद्यालयों, 16 लाख से अधिक स्कूलों, एक करोड़ से अधिक अध्यापकों तथा 34 करोड़ विद्यार्थियों के नेटवर्क का बेहतर उपयोग करने का प्रयास कर रहे हैं।

सरकार, समाज और व्यापार के साथ हम सार्थक भागीदारी और सहयोग सुनिश्चित कर अग्रणी कार्य कर सकते हैं। हमारे 34 करोड़ विद्यार्थी जहां लोगों की जागरूकता में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। वहीं हमारे वैज्ञानिक, शोधार्थी, इंजीनियर, प्रौद्योगिकीविद्, प्रोफेसर अपनी प्रतिभा और क्षमता के अनुसार कोविड-19 महामारी से उत्पन्न तत्काल सार्वजनिक स्वास्थ्य चुनौतियों के समाधान हेतु प्रयासरत हैं। इस कठिन समय में यह संतोषजनक है कि देश के शिक्षा संस्थानों में इस चुनौती से निपटने के लिए एक सकारात्मक माहौल बना हुआ है।

देश में 20 से अधिक शोध संस्थान कोरोना वायरस के उपचार के लिए टीके विकसित करने के लिए कार्य कर रहे हैं। इसमें हमारे श्रेष्ठ शैक्षणिक और शोध संस्थाओं के अतिरिक्त नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ वायरोलॉजी (एनआइवी) पुणे और इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च भी बढ़कर हिस्सा ले रहे हैं। कोविड-19 से लड़ने के लिए सरकारी संस्थानों एवं कई निजी कंपनियों को हजारों तकनीक-आधारित प्रस्ताव मिले हैं। हमारे आइआइटी पोर्टेबल वेंटिलेटर के अनुसंधान और विकास पर कार्य कर रहे हैं। हमारे संस्थानों में जीनोम अनुक्रमण और रक्त के नमूनों से कोरोनो वायरस के स्ट्रेन के पृथक्कीकरण पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, दिल्ली के शोधकर्ता कोविड-19 का पता लगाने के लिए एक विधि विकसित करने में जुटे हैं जो परीक्षण लागत को काफी कम करेगी।

हमारे देश के विश्वविद्यालय, डीम्ड विश्वविद्यालय अपनी प्रयोगशालाओं में चिकित्सा उपकरण बनाने हेतु आपस में सहयोग कर रहे हैं। हमारे विश्वविद्यालय, इंजीनियरिंग, मेडिकल कॉलेजों, अन्य संस्थानों ने अपने आस पास के क्षेत्रों में जहा विशेष जागरूकता अभियान चलाया है वहीं हमारे कई संस्थान टेस्टिंग किट विकसित करने के साथ ही ऐसी इलाज पद्धतियों पर कार्य कर रहे हैं जो इस महामारी के प्रति प्रभावी हो सकते हैं।

विषम भौगोलिक परिस्थितियों वाले हमारे उत्तर-पूर्व एवं अन्य हिमालयी प्रांतों में संभावित कोरोना वायरस मरीजों के लिए आइसोलेशन केंद्र स्थापित करने के लिए हमारे कई शैक्षणिक संस्थान आगे आए हैं। यह प्रसन्नता का विषय है कि देश के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों के मेडिकल कॉलेजों जिनमें कई निजी विश्वविद्यालय शामिल हैं, ने अपने यहां पर कोरोना जांच के लिए विशेष केंद्र स्थापित किए हैं। देश में सैनिटाइटर कमी के बीच हमारे संस्थान न केवल स्वयं के सैनिटाइटर बना रहे हैं, बल्कि सरकारी कर्मचारियों एवं पुलिस को भी सैनिटाइटर मुफ्त दे रहे हैं। भारत के कई शोध संस्थान निजी क्षेत्र की प्रौद्योगिकी कंपनियों के साथ मिलकर कोरोना के मरीजों को ट्रैक करने के लिए प्लेटफॉर्म विकसित कर रहे हैं एवं दवा की खोज पर भी महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं।

आज आवश्यकता है कि हम सब अनुशासन में रहकर शारीरिक दूरी के महत्व को समझें। आज पूरा देश एकजुट होकर इस महामारी से लड़ने के लिए संकल्पबद्ध है। मुझे विश्वास है कि संपूर्ण विश्व में कोहराम मचाने वाले इस वायरस की चुनौती से भारत अवश्य पार पा लेगा।

राष्ट्रीय संस्करण
शनिवार 4 अप्रैल 2020
दैनिक जागरण
www.jagran.com

सोमवार को ओपेक देशों की बैठक संभव

वियना, एएफपी : सऊदी अरब के नेतृत्व वाले ऑयल उत्पादक समूह ओपेक के सदस्य देश अगले सप्ताह सोमवार को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से मुलाकात करेंगे। सूत्रों के मुताबिक इसका मकसद कच्चे तेल के दाम को मजबूती देने के उपाय तलाशना है। इस वर्ष की शुरुआत से अब तक कच्चे तेल के दाम में दो-तिहाई गिरावट हो चुकी है। इसी सप्ताह गुरुवार को सऊदी अरब ने ओपेक और सहयोगी सदस्य देशों को बैठक के लिए अचानक फोन कॉल किए थे।

भारत सरकार ने कोरोना से लड़ने के लिए कई कदम उठाए हैं। हमें पूरी उम्मीद है कि अन्य देशों के मुकाबले इसकी इकोनॉमी में तेज सुधार होगा।

– यासुयुकी सवादा
मुख्य अर्थशास्त्री, एडीबी

बिगड़ गया तेल का खेल

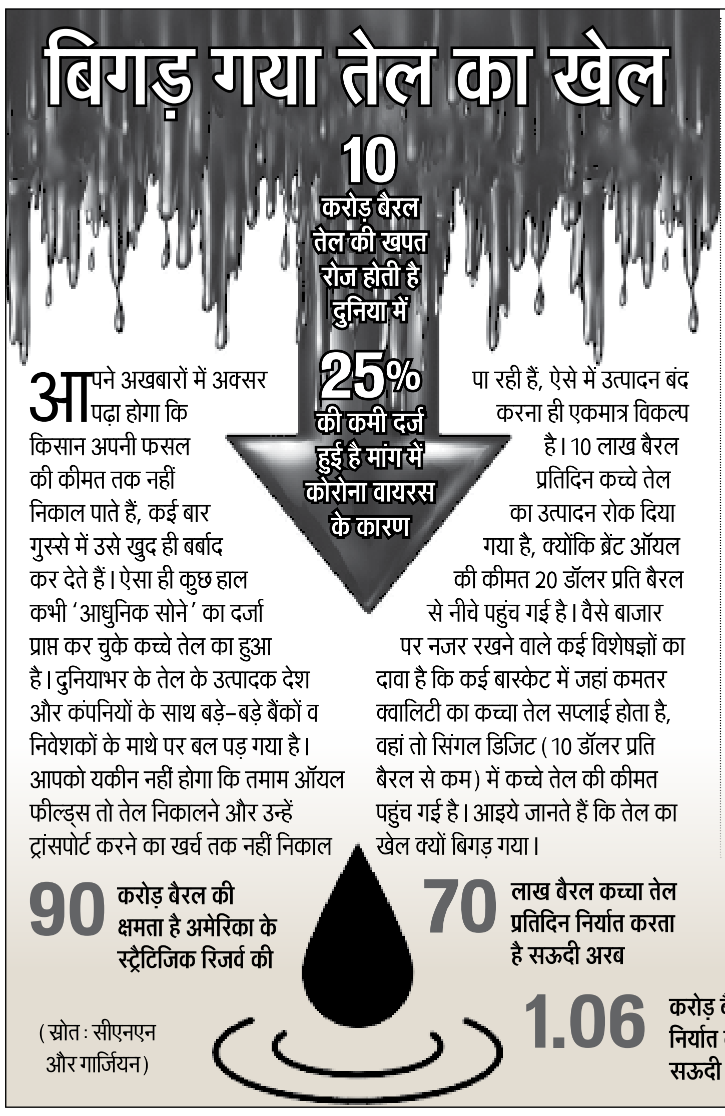

10 करोड़ बैरल तेल की खपत रोज होती है दुनिया में

25% की कमी दर्ज हुई है मांग में कोरोना वायरस के कारण

आपने अखबारों में अक्सर पढ़ा होगा कि किसान अपनी फसल की कीमत तक नहीं निकाल पाते हैं, कई बार गुस्से में उसे खुद ही बर्बाद कर देते हैं। ऐसा ही कुछ हाल कभी 'आधुनिक सोने' का दर्जा प्राप्त कर चुके कच्चे तेल का हुआ है। दुनियाभर के तेल के उत्पादक देश और कंपनियों के साथ बड़े-बड़े बैंकों व निवेशकों के माथे पर बल पड़ गया है। आपको यकीन नहीं होगा कि तमाम ऑयल फील्ड्स तो तेल निकालने और उन्हें ट्रांसपोर्ट करने का खर्च तक नहीं निकाल पा रही हैं, ऐसे में उत्पादन बंद करना ही एकमात्र विकल्प है। 10 लाख बैरल प्रतिदिन कच्चे तेल का उत्पादन रोक दिया गया है, क्योंकि ब्रेंट ऑयल की कीमत 20 डॉलर प्रति बैरल से नीचे पहुंच गई है। वैसे बाजार पर नजर रखने वाले कई विशेषज्ञों का दावा है कि कई बास्केट में जहां कमतर क्वालिटी का कच्चा तेल सप्लाई होता है, वहां तो सिंगल डिजिट (10 डॉलर प्रति बैरल से कम) में कच्चे तेल की कीमत पहुंच गई है। आइये जानते हैं कि तेल का खेल क्यों बिगड़ गया।

90 करोड़ बैरल की क्षमता है अमेरिका के स्ट्रैटिजिक रिजर्व की

70 लाख बैरल कच्चा तेल प्रतिदिन निर्यात करता है सऊदी अरब

1.06 करोड़ बैरल तेल प्रतिदिन निर्यात करने का लक्ष्य है सऊदी अरब का

(स्रोत : सीएनएन और गार्जियन)

80% अपनी मांग का भारत करता है आयात

36 लाख बैरल से अधिक है भारत का स्ट्रैटिजिक रिजर्व

87.7 अरब डॉलर की कीमत का तेल भारत ने 2018-19 में आयात किया था

3 सबसे बड़ा ऑयल कंज्यूमर है भारत दुनिया का

कोरोना ने डरा दिया

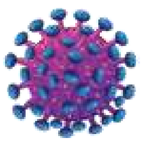

कोरोना वायरस के कारण दुनिया मानो छुट्टी पर है। ज्यादातर देशों ने लॉकडाउन कर दिया है, जिसके कारण अंतरराष्ट्रीय विमानन, घरेलू ट्रांसपोर्ट के साथ शिपिंग इंडस्ट्री मानो ठप सी पड़ गई है। सारे एडवांस सौदे ठप पड़ गए हैं। सिर्फ पुराने करार के आधार पर तेल की सप्लाई हो रही है। बाजार के विश्लेषकों का अनुमान है कि कोरोना वायरस के कारण मांग में 30 फीसद की कमी आई है, जबकि उठान में 25 फीसद की कमी दर्ज की गई है। बड़े-बड़े समुद्री जहाजों को बीच समुद्र में ही रोक दिया गया है, ताकि लागत कम रखी जा सके।

रूस और सऊदी अरब का झगड़ा

रूस सऊदी अरब के जरिये अमेरिका पर दबाव बनाना चाहता है, ताकि उसे अमेरिकी प्रतिबंधों से ढील मिल जाए। इसके लिए उसने कच्चे तेल का उत्पादन बहुत तेजी से बढ़ा दिया है। उसने एक करोड़ बैरल कच्चे तेल का उत्पादन का लक्ष्य 2018 में हासिल कर लिया था। इससे कम उत्पादन को वह तैयार नहीं है, जबकि सऊदी अरब जल्द से जल्द डेढ़ करोड़ बैरल कच्चे तेल का उत्पादन रोज करना चाहता है। रूस और सऊदी अरब की रेस से अमेरिकी तेल इंडस्ट्री बैठी जा रही है। विशेषज्ञों का कहना है कि 40 डॉलर प्रति बैरल से कम कीमत पर शैल तकनीक के जरिये तेल निकालना घाटे का सौदा है। इसी कारण राष्ट्रपति ट्रंप ने अमेरिकी तेल इंडस्ट्री को सस्ते दर पर कर्ज देने का फैसला किया है।

ग्रीन टेक्नोलॉजी का दबाव

पर्यावरणीय कारणों से तेल आधारित उद्योगों और ट्रांसपोर्ट सिस्टम को दुनियाभर में नफरत का शिकार होना पड़ रहा है। कोई भी देश आधिकारिक रूप से इस टेक्नोलॉजी को प्रमोट नहीं कर रहा है। सोलर एनर्जी के साथ हवा और समुद्र की लहरों से ऊर्जा के उत्पादन पर जोर दिया जा रहा है। ग्रीन टेक्नोलॉजी से कार्बन फुटप्रिंट कम होता है। कार्बन फुटप्रिंट के बदले आपको करोड़ों डॉलर का लाभ भी होता है, ऐसे में देश और कंपनियां ग्रीन टेक्नोलॉजी पर फोकस कर रही है।

55 डॉलर प्रति बैरल की उम्मीद ध्वस्त

कच्चे तेल के बाजार के विशेषज्ञों का मानना था कि 2023 में तेल की मांग सबसे अधिक होगी और इसके बाद यह धीर-धीरे कम हो जाएगी। उन्होंने 2020 के लिए औसतन 55 डॉलर प्रति बैरल की कीमत मिलने की भविष्यवाणी की थी लेकिन, आज के हालात में कीमतें 15 डॉलर तक गिरने की बात कही जा रही है, जो इतिहास में सबसे कम होंगी। वर्ष 2020 के पहले क्वार्टर में ही 25 फीसद कम करार हुए हैं।

भविष्य नहीं है उज्जवल

संक्रमण पर कितने समय में दुनिया विजय पाएगी यह स्पष्ट नहीं है। विशेषज्ञों का मत है कि दुनिया को एक तरह से जीरो से ही शुरू करना होगा, ऐसे में तेल की मांग में अचानक तेज वृद्धि नहीं होगी। मांग कम होगी लेकिन, उत्पादन ज्यादा होगा। बड़े देशों के साथ छोटे उत्पादक देश भी तेल ज्यादा से ज्यादा निकालेंगे। कोई देश इस समय कैश खर्च नहीं करना चाहता है। ऐसे में कच्चे तेल की कीमत कम ही रहेगी।

होमलैस ऑयल

शायद यह शब्द आपने पहली बार सुना होगा। जी हां, इस समय दुनिया में इतना ज्यादा तेल है कि कई देश उसे स्वीकार करना नहीं चाहते हैं। आज लगभग छह लाख बैरल कच्चा तेल प्रतिदिन होमलैस ऑयल की श्रेणी में डाला जाता है। इस तेल का कोई देश मालिक नहीं है। इस तेल में देशों की समुद्रीय सीमा से दूर समुद्रों के बीच में रखा गया है। उम्मीद है कि जल्द ही प्रतिदिन सात लाख बैरल कच्चे तेल को होमलैस माना जाएगा।

भर चुके हैं सारे गोदाम

दुनिया में चाहे सरकारी कच्चे तेल के गोदाम हों या प्राइवेट, सभी पूरी तरह भर चुके हैं। पाइपलाइनों में उनकी पूरी क्षमता का तेल पंप कर दिया गया है। और तो और वेरी लार्ज क्रूड कैरियर (वीएलसीसी) को गोदाम में तब्दील किया जा रहा है। दुनियाभर के 20 फीसद वीएलसीसी को तेल से भरकर समुद्र में रोक दिया गया है, ताकि भविष्य में तेल जल्द से जल्द सप्लाई किया जा सके।

क्या होता है बैरल

बैरल धातु का बना एक ड्रम होता है। इस ड्रम में अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुसार 158.98 लीटर कच्चा तेल आता है। सारे सौदे बैरल को आधार मानकर किए जाते हैं। जब ऑयल रिफाइनरी में एक बैरल तेल को प्रोसेस किया जाता है तो उससे पेट्रोल, डीजल, जेट फ्यूल, प्रोपेन (गैस) और तारकोल व सल्फर जैसे पदार्थ मिलते हैं। अमेरिका के मानकों के अनुसार एक बैरल तेल के प्रोसेस से लगभग 73 लीटर पेट्रोल, 36 लीटर डीजल, 20 लीटर जेट फ्यूल, छह लीटर प्रोपेन और 34 लीटर अन्य उत्पाद (तारकोल, सल्फर आदि) का उत्पादन होता है।

भारतीय इकोनॉमी की बुनियाद मजबूत : एडीबी

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

- एजेंसी ने कहा – चालू वित्त वर्ष में भी चार फीसद से नीचे नहीं जाएगी विकास दर
- अगले वित्त वर्ष के लिए जताया 6.2 फीसद तक की विकास दर का अनुमान

प्रतीकात्मक

कोरोना संकट के चलते दुनिया की अर्थव्यवस्था के महामंदी की ओर जाने की आशंकाएं जताई जा रही हैं। वहीं, भारतीय अर्थव्यवस्था पर इसका वैसा गंभीर असर नहीं दिख रहा है।

एशियाई विकास बैंक (एडीबी) ने अनुमान जताया है कि वैश्विक स्तर की कोरोना महामारी की रोकथाम के उपायों की वजह से चालू वित्त वर्ष 2020-21 में भारत की विकास दर चार फीसद के स्तर तक रह सकती है। हालांकि इसी दौरान एशिया क्षेत्र की विकास दर महज 2.2 फीसद रहेगी। बैंक ने अगले वित्त वर्ष (2021-22) में भारत की विकास दर 6.2 फीसद तक पहुंचने का भी अनुमान लगाया है।

एडीबी की तरफ से जारी रिपोर्ट में कहा गया है कि भारतीय अर्थव्यवस्था के फंडामेंटल्स मजबूत होने की वजह से अगले वित्त वर्ष (2021-22) के दौरान भारत की विकास दर में अच्छी तेजी देखी जा सकती है। बैंक के मुताबिक भारत में कोरोना का व्यापक प्रभाव नहीं है। फिर भी, सरकार की तरफ से इसे रोकने के व्यापक कदम उठाने के साथ कॉरपोरेट और इनकम टैक्स में कटौती जैसी कई वित्तीय सुधार किए गए हैं। इन सबकी वजह अगले वित्त वर्ष में भारत की विकास दर 6.2 फीसद रहेगी।

एडीबी ने अपने अनुमान में कहा है कि कोविड-19 की वजह से इस साल की पहली तिमाही में चीन के उद्योग, रिटेल बिक्री और निवेश में भारी कमी आई है जिस कारण इस साल चीन की विकास दर 2.3 फीसद तक रह सकती है। लेकिन अगले वित्त वर्ष में चीन की विकास दर 7.3 फीसद रहेगी।

कोरोना संकट की वजह से टूरिज्म पर आधारित पूर्वी एशिया और दक्षिण एशिया के देशों पर खासा असर दिखेगा। एडीबी ने कहा कि इस वर्ष कच्चे तेल की औसत कीमत 35 डॉलर प्रति बैरल रहेगी। पिछले वर्ष यह कीमत 64 डॉलर की थी।

रिपोर्ट इसलिए महत्वपूर्ण

एडीबी का यह अनुमान इस लिहाज से बेहद महत्वपूर्ण है, क्योंकि शुक्रवार को ही फिच रेटिंग्स ने चालू वित्त वर्ष में भारत की विकास दर महज दो फीसद पर सिमटने का अनुमान लगाया है। अगर ऐसा होता है, तो यह पिछले तीन दशकों में देश की सबसे कम जीडीपी विकास दर होगी। पिछले सप्ताह मूडीज ने इस कैलेंडर वर्ष में भारत की विकास दर 2.5 फीसद रहने का अनुमान जारी किया था। हालांकि फिच ने इससे पहले भारत के लिए चालू वित्त वर्ष में 5.1 फीसद की विकास दर का अनुमान लगाया था। फिच रेटिंग की तरफ से जारी रिपोर्ट में कहा गया है कि कोविड-19 की वजह से पूरी दुनिया मंदी की चपेट में आ रही है और पूरे साल यह मंदी जारी रहेगी। इस कारण भारत में एमएसएमई के साथ सेवा क्षेत्र काफी हद तक प्रभावित होंगे। वहीं उपभोक्ताओं की खपत में भी भारी कटौती देखी जा सकती है। इन कारणों से भारत की विकास दर चालू वित्त वर्ष में दो फीसद रह सकती है।

कोरोना का 44 फीसद कंपनियों पर दिखेगा मामूली असर

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

कोरोना महामारी से 44 फीसद कंपनियों पर खास असर नहीं होगा, जबकि 36 फीसद कंपनियों पर इसका मध्यम असर देखने को मिलेगा। हालांकि 20 फीसद कंपनियां काफी अधिक प्रभावित हो सकती हैं। मूडीज की तरफ से जारी सर्वे में यह खुलासा किया गया है। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि कोरोना फैलने की वजह से इंटरनेट सर्विस कंपनियों से लेकर ऑनलाइन रिटेल व गोल्ड माइनिंग तक पर सकारात्मक असर पड़ने की संभावना है।

रिपोर्ट के मुताबिक कोरोना से सबसे अधिक प्रभावित होने वाली 20 फीसद कंपनियां एयरलाइंस, ऑटोमोटिव, गेमिंग, रिटेल व हॉस्पिटैलिटी, ऑयल एंड गैस व ग्लोबल शिपिंग क्षेत्र की हैं। कोरोना वायरस से मध्यम रूप प्रभावित होने वाले क्षेत्रों में प्रॉपर्टी, मेटल व माइनिंग, स्टील, प्रोटीन व एग्रीकल्चर, कॉमर्शियल प्रॉपर्टीज, ऑयल फील्ड सर्विस, बेवरेज, केमिकल्स, रिफाइनिंग, नेचुरल प्रोडक्ट्स शामिल हैं। वहीं, मध्यम रूप से प्रभावित होने वाली 36 फीसद कंपनियां इन्हीं क्षेत्रों से ताल्लुक रखती हैं। जिन 44 फीसद कंपनियों पर कोरोना का खास असर नहीं दिखने वाला है, वे मुख्य रूप से आइटी, टेलीकॉम व मीडिया, कंस्ट्रक्शन व इंजीनियरिंग, कंज्यूमर प्रोडक्टक्स, आइएचएस, पैकेजिंग व पैकेज्ड गुड्स क्षेत्रों की हैं।

मूडीज के मुताबिक सबसे अधिक प्रभावित 20 फीसद कंपनियों में सबसे बुरा हाल एयरलाइंस का होने वाला है। आइएटीए के मुताबिक वर्ष 2020 में एयरलाइंस के यात्रियों की संख्या में पिछले साल के मुकाबले 19 फीसद की गिरावट होगी। कोरोना के वैश्विक महामारी बनने के बाद कई देशों ने अपनी हवाई सीमा को बंद कर दिया है।

फिच की रिपोर्ट से सहमे बैंकिंग स्टॉक्स ने शेयर बाजारों को किया मायूस

- सेंसेक्स 674 अंक गिरा, निफ्टी 8,000 के स्तर से नीचे गिरते-गिरते बचा
- बीएसई बैंकेक्स में दर्ज की गई पांच फीसद से अधिक की गिरावट

मुंबई, प्रेट्र : बैंकिंग शेयरों में ताबड़तोड़ बिकवाली के चलते सप्ताह के आखिरी कारोबारी सत्र में बीएसई-सेंसेक्स और एनएसई-निफ्टी पर खासा दबाव दिखा। शुक्रवार को बीएसई का 30-शेयरों वाला प्रमुख सूचकांक सेंसेक्स 674.36 अंक यानी 2.39 प्रतिशत फिसलकर 27,590.95 के स्तर पर बंद हुआ। नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) के 50-शेयरों वाले निफ्टी में 170 अंकों यानी 2.06 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई और यह 8,083.80 अंक पर बंद हुआ। इंट्रा-डे में निफ्टी किसी तरह 8,000 के स्तर पर बने रहने में कामयाब हुआ।

मूडीज द्वारा गुरुवार को भारतीय बैंकिंग तंत्र का आउटलुक नेगेटिव करने के चलते शुक्रवार को बैंकों के शेयरों में निवेशकों ने ताबड़तोड़ बिकवाली की। आरबीएल बैंक के शेयर 15.5 प्रतिशत तक टूट गए। एक्सिस बैंक में भी 9.16 प्रतिशत की गिरावट आई। इंडसइंड बैंक, आइसीआइसीआइ बैंक, एसबीआइ, सिटी यूनियन बैंक, फेडरल बैंक, कोटक महिंद्रा बैंक और एचडीएफसी बैंक के शेयर 1.95 प्रतिशत तक टूट गए। बीएसई के बैंकेक्स में 5.39 प्रतिशत की गिरावट आई।

जानकारों के मुताबिक एशियाई विकास बैंक और मूडीज द्वारा भारत की विकास दर में भारी गिरावट के अनुमानों के चलते निवेशक सहमे दिखे। इसके साथ ही डॉलर के मुकाबले रुपये में बड़ी गिरावट का असर भी शेयर बाजारों पर दिखा। अन्य एशियाई बाजारों की स्थिति भी बहुत अच्छी नहीं दिखी। शंघाई और हांगकांग के बाजार लाल निशान पर बंद हुए, जबकि सियोल और टोक्यो के शेयर बाजारों में थोड़ी बढ़त दिखी। यूरोपीय शेयर बाजारों की शुरुआत भी खराब रही।

इस सप्ताह सेंसेक्स में 2,224.64 अंक यानी 7.46 प्रतिशत और निफ्टी में 576.45 अंक यानी 6.65 प्रतिशत की गिरावट देखी गई। इससे पहले बुधवार को सेंसेक्स में 1,203.18 अंकों की गिरावट दर्ज की गई थी। बुधवार और शुक्रवार के कारोबारी सत्रों को मिलाकर बीएसई में निवेशकों को 4,82,033.63 करोड़ का नुकसान हुआ।

मनी मार्केट में ट्रेडिंग अवधि घटी

मुंबई, प्रेट्र : भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआइ) ने मनी मार्केट के उतार-चढ़ाव पर काबू पाने के लिए दैनिक ट्रेडिंग अवधि घटा दी है। अगले सप्ताह मंगलवार से 17 अप्रैल तक इस बाजार में नई अवधि के हिसाब से कामकाज होगा।

आरबीआइ ने ज्यादातर मनी मार्केट में कामकाज का समय घटाकर सुबह 10 बजे से दोपहर दो बजे तक कर दिया है। अब तक इस बाजार में सुबह नौ बजे से लेकर शाम पांच बजे तक कारोबार होता था। आरबीआइ के मुताबिक बाजार में गतिविधियां कम होने के कारण नकदी की स्थिति प्रभावित हो रही है। इससे अस्थिरता बढ़ी है। यह जोखिम कम करने के लिए ही मनी मार्केट की टाइमिंग घटाने का फैसला किया गया है। हालांकि आरबीआइ के मुताबिक ग्राहकों को आरटीजीएस और एनईएफटी जैसी सेवाएं पहले की तरह मिलती रहेंगी।

सिर्फ 'पीएमकेयर्स ऐट एसबीआइ' असली, बाकी सब आइडी फर्जी

जेएनएन, नई दिल्ली

कोरोना संकट से लड़ने के लिए सरकार ने 'पीएम-केयर्स' नाम से एक फंड गठित किया है। लोग यूपीआइ के माध्यम से भी इसमें योगदान कर सकते हैं, जिसके लिए सरकार ने 'पीएमकेयर्स@एसबीआइ' नाम से एक यूपीआइ आइडी जारी की है। एक तरफ देशभर की कंपनियां, संस्थाएं, प्रख्यात हस्तियां और आम जनता तक भारत सरकार द्वारा गठित इस फंड में योगदान दे रही हैं। दूसरी तरफ, संकट की ऐसी घड़ी को भी चंद साइबर ठग अपनी नाजायज कमाई का मौका बनाने से नहीं चूक रहे हैं। इस बारे में कई शिकायतें मिलने के बाद सरकार ने दानदाताओं को सतर्क करते हुए कहा है कि वे सिर्फ और सिर्फ 'पीएमकेयर्स@एसबीआइ' पर ही दान दें।

सरकार के साइबर सेक्योरिटी नियामक सर्ट-इन ने लोगों से कहा है कि साइबर ठगों ने पंजाब नेशनल बैंक (पीएनबी), एचडीएफसी बैंक, एसबीआइ, आइसीआइसीआइ बैंक और यस बैंक पर फर्जी यूपीआइ आइडी बना लिए हैं। विभिन्न बैंकों के साथ ये आइडी 'पीएमकेयर' और 'पीएमकेयर्स' नाम से जारी किए गए हैं, जिनसे दानदाता अक्सर धोखा खा जाते हैं। सर्ट-इन के मुताबिक सरकार ने जो राहत फंड गठित किया है, उसके लिए सिर्फ 'पीएमकेयर्स@एसबीआइ' नामक यूपीआइ आइडी सही है। नियामक ने कहा कि इसके साथ ही दानदाता यूपीआइ के माध्यम से राहत कोष में रकम ट्रांसफर करते वक्त यह भी सुनिश्चित कर लें कि इसके साथ रजिस्टर्ड अकाउंट नाम 'पीएम केयर्स' दिखाई देता हो। अगर यूपीआइ आइडी के साथ पंजीकृत नाम कोई अन्य दिखे, तो वह आइडी फर्जी है।

ये सब फर्जी आइडी

पीएमकेयर@एसबीआइ
पीएमकेयर्स@पीएनबी
पीएमकेयर्स@एचडीएफसी बैंक
पीएमकेयर@यसबैंक
पीएमकेयर@वाईबीएल
पीएमकेयर@यूपीआइ
पीएमकेयर@आइसीआइसीआइ

राष्ट्रीय

कब्रिस्तान से लौटा दिया शव, हिंदुओं की पहल पर हुआ दाह संस्कार

राज्य ब्यूरो, मुंबई

मुंबई में कोविड-19 पीड़ित एक व्यक्ति की मृत्यु होने पर जब उसके धर्म के कब्रिस्तान में उसे दफनाने की अनुमति नहीं मिली तो उसके शव को निकट के हिंदू श्मशान में दाह संस्कार किया गया।

65 वर्षीय एक मुस्लिम की बुधवार को जोगेश्वरी के अस्पताल में इलाज के दौरान मृत्यु हो गई थी। चूंकि वह कलेक्टर कंपाउंड मालवणी का निवासी था, इसलिए उसके परिजन उसे मलाड-मालवणी के कब्रिस्तान में दफनाने ले गए। लेकिन कोविड-19 से मृत्यु होने के कारण कब्रिस्तान के न्यासियों ने उसे वहां दफनाने की अनुमति नहीं दी। इसके बाद कुछ सामाजिक कार्यकर्ताओं के हस्तक्षेप से निकट के हिंदू श्मशान गृह में उसका दाह संस्कार किया गया।

मृतक के पुत्र का कहना है कि उसके पिता की बुधवार रात मौत हो गई थी। इसके बाद महानगरपालिका प्रशासन ने उन्हें उनके घर के नजदीक स्थित कब्रिस्तान में सुबह चार बजे शव दफनाने की अनुमति दी थी। लेकिन समय को लेकर कब्रिस्तान के न्यासियों के राजी न होने पर सुबह 10 बजे शव का दाह संस्कार करना पड़ा।

स्थानीय विधायक एवं राज्य सरकार में मंत्री असलम शेख का कहना है कि सरकारी नियमों के अनुसार, कोविड-19 के मृतक को उसके निधन स्थल के नजदीकी कब्रिस्तान में ही दफनाया जा सकता है। उन्होंने सवाल उठाया कि शव को दूसरे इलाके में ले जाने की अनुमति कैसे दी गई? इसके लिए उन्होंने जिम्मेदार अधिकारियों पर सख्त कार्रवाई की भी मांग की है।

स्थानीय समाजवादी पार्टी की पार्षद रुखसाना सिद्दीकी ने भी यही सवाल उठाया है कि जब कोविड-19 से रोगी की मृत्यु जोगेश्वर (पूर्व) में हुई, तो उसे मलाड (पश्चिम) में लाया ही क्यों गया? पार्षद ने मलाड-मालवणी कब्रिस्तान के न्यासियों द्वारा शव को दफनाने की अनुमति न देने पर आश्चर्य भी जाहिर किया है। उन्होंने मामले की जांच कराने की मांग भी की।

डोमिसाइल पर जम्मू-कश्मीर के लोगों की भावनाएं भड़काने की साजिश

राज्य ब्यूरो, श्रीनगर

- प्रशासन ने अलगाववादी संगठनों और पत्थरबाजों की निगरानी शुरू की
- सियासी संगठन भी डोमिसाइल के नियमों को पचा नहीं पा रहे

केंद्र शासित जम्मू-कश्मीर में डोमिसाइल के मुद्दे की आड़ में आम लोगों को भड़काने की साजिश रची जा रही है। माहौल बिगाड़ने की इस साजिश को भांपते हुए प्रशासन सक्रिय हो गया है। इसलिए अलगाववादी संगठनों से जुड़े लोगों और हाल में रिहा हुए पत्थरबाजों की गतिविधियों की निगरानी शुरू कर दी गई है। सभी थाना प्रभारियों को निर्देश हैं कि वह अपने इलाकों में किसी भी शरारती तत्व को सिर न उठाने दें। सोशल मीडिया पर भी नजर रखी जा रही है।

गृह मंत्रालय ने दो दिन पूर्व ही प्रदेश में डोमिसाइल के नए नियम तय किए हैं। कई राजनीतिक संगठन इसे स्वीकार नहीं कर पा रहे हैं। इन नियमों को प्रदेश के लोगों के साथ अन्याय बता रहे हैं। नेशनल कांफ्रेंस, पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी, कांग्रेस और माकपा ही नहीं, हाल ही में गठित जम्मू-कश्मीर अपनी पार्टी भी इससे नाखुश है। पैंथर्स पार्टी को कड़ा एतराज है। ऑल पार्टी हुर्रियत कांफ्रेंस ने भी नए नियम को जम्मू-कश्मीर विशेषकर कश्मीर घाटी के मुस्लिम बहुल चरित्र को बदलने की नई दिल्ली की साजिश का हिस्सा बताया है। इन राजनीतिक दलों को लामबंद होते देख ही प्रशासन सक्रिय हुआ है। सुरक्षा एजेंसियों को आशंका है कि यह मामला बीते आठ माह से लगभग समाप्त हो चुके राष्ट्रविरोधी प्रदर्शनों और पत्थरबाजी के मामलों को फिर से हवा दे सकता है। यहां कोरोना वायरस के संक्रमण को लेकर पहले ही स्थिति काफी गंभीर है, अगर ऐसा कुछ हुआ तो स्थिति बेकाबू हो जाएगी।

पहचान को लेकर भावुक होते हैं लोग : कश्मीर मामलों के विशेषज्ञ और सामाजिक कार्यकर्ता सलीम रेशी ने कहा कि इस समय चाहे अलगाववादी हों या मुख्यधारा के राजनीतिक संगठन, वे मुद्दों को तलाश रहे हैं। डोमिसाइल के मुद्दे पर वह अपना मंसूबा पूरा होते देख रहे हैं। नागरिकता और स्थानीय पहचान को लेकर लोग भावुक होते हैं। इसे आसानी से भुनाया जा सकता है। इसलिए यह मामला कश्मीर में हालात बिगाड़ सकता है। पहले ही यहां लोग कोरोना से परेशान हैं।

> हालात पर लगातार नजर रखे हैं। हम किसी को भी कश्मीर में हालात बिगाड़ने का मौका नहीं देंगे। अगर यहां कोई आम लोगों को डोमिसाइल के मुद्दे पर भड़काते या प्रदर्शन के लिए उकसाता नजर आया, तो उसके खिलाफ तुरंत सख्त कार्रवाई होगी। उसे गिरफ्तार कर जेल में भेजा जा सकता है।
>
> **–विजय कुमार, आइजीपी कश्मीर**

पाक ने राजौरी-पुंछ में की भारी गोलाबारी, छह जवान घायल

जागरण संवाददाता, राजौरी

बार-बार मुंह की खाने के बाद भी पाकिस्तान हरकतों से बाज नहीं आ रहा है। इन दिनों जहां पूरा देश कोरोना से लड़ रहा है तो वहीं पाक सेना सीमा पर हालात खराब करने में जुटी है। शुक्रवार सुबह पाक सेना ने राजौरी जिले के सुंदरबनी सेक्टर और पुंछ के कृष्णा घाटी सेक्टर में भारी गोलाबारी की। इसमें सेना के चार व सीमा सुरक्षा बल के दो जवान घायल हो गए। सभी जवानों को सैन्य अस्पताल में भर्ती करवाया है। वहीं, भारतीय सेना भी पाक सेना को मुंह तोड़ जवाब दे रही है। बावजूद सरहद पार से गोलाबारी जारी रही।

जानकारी के अनुसार, शुक्रवार तड़के सुंदरबनी सेक्टर में पाक ने भारी गोलाबारी शुरू कर दी। अग्रिम चौकियों के अलावा रिहायशी क्षेत्रों में मोर्टार शेल दागे जाने लगे। माला पोस्ट के पास तैनात सेना के चार और सीमा सुरक्षा बल के दो जवान घायल हो गए। अन्य जवानों ने गोलाबारी के बीच सभी घायलों को सैन्य अस्पताल पहुंचाया। शुरू के करीब दो घंटे तक गोलाबारी तेज हुई। जवाब मिलने के बाद रुक-रुक होने लगी। दोपहर को पुंछ जिले के कृष्णा घाटी सेक्टर में भी पाक सेना ने गोलाबारी की। यहां से भारतीय सेना ने करारा जवाब दिया। पाक सेना ने गोलाबारी की रेंज को भी बढ़ा दिया है। नियंत्रण रेखा से सटे गांवों में मोर्टार शेल दागे जा रहे हैं। उल्लेखनीय है कि पाक सेना ने गुरुवार को पुंछ के बालाकोट सेक्टर में भारी गोलाबारी की थी। इसमें भारतीय सेना के दो जवान घायल हो गए थे। जवाबी कार्रवाई में भारतीय सेना ने तीन पाकिस्तानी सैनिकों को ढेर कर दिया था।

हीरानगर में गोलाबारी : जम्मू संभाग के हीरानगर सेक्टर में अंतरराष्ट्रीय सीमा पर गुरुवार रात को भी पाक रेंजरों ने गोलीबारी की। रात 10 बजे पाक रेंजरों ने अचानक बीका चक पोस्ट से मनयारी व पानसर गांवों के बीच मोर्टार और छोटे हथियारों से गोलीबारी की। भारतीय क्षेत्र में कोई जानी नुकसान नहीं हुआ। बीएसएफ ने भी पाक को मुंह तोड़ जवाब दिया।

राष्ट्रीय संस्करण
www.jagran.com
दैनिक जागरण
शनिवार 4 अप्रैल 2020

932 लोगों की मौत हो चुकी है पिछले 24 घंटों में स्पेन में। इसी के साथ यहां मृतकों की तादात 10,935 और संक्रमितों की संख्या बढ़कर 1,17,710 हो गई है।

काम पर जाना चाहते हैं, तो 'इम्युनिटी पासपोर्ट' तैयार रखिए

गुरुवार को प्रधानमंत्री ने सभी राज्यों के मुख्यमंत्रियों से सलाह मांगी की कैसे लॉकडाउन को खत्म करके धीरे-धीरे सामान्य जनजीवन बहाल किया जाए। पूरी दुनिया में इस बात की चिंता है कि एकबार कोरोना वायरस के खिलाफ लड़ाई जीतने के बाद कैसे सामान्य जनजीवन बहाल किया जाए, ताकि कोरोना वायरस का संक्रमण फिर से न फैले। चीन से संकेत मिल चुके हैं कि सही हो चुके मरीजों में कोरोना संक्रमण के लक्षण फिर से उभर आए। जर्मनी ने इस दिशा में पुख्ता पहल की है और ब्रिटेन ने आधिकारिक रूप से इस योजना में रुचि दिखाई है। योजना है 'इम्युनिटी पासपोर्ट'। आपको सामान्य पासपोर्ट के बारे में शायद सबकुछ पता होगा। आप दूसरों को सलाह भी इस मुद्दे पर देते होंगे। यह आपको विदेश यात्रा का पहला अधिकार और योग्यता देता है। इसके बाद वीजा और इमिग्रेशन जैसी शर्तें होती हैं, जिन्हें पूरा करके ही आप विदेश यात्रा कर सकते हैं। जैसे विदेश यात्रा के लिए पासपोर्ट जरूरी होता है वैसे ही कोरोना वायरस के बाद की दुनिया में इम्युनिटी पासपोर्ट होगा, जो आपको काम करके का अधिकार देगा। जी हां, आपने सही पढ़ा है काम करने का अधिकार है।

कैसे तैयार किया जा रहा है इम्युनिटी पासपोर्ट

जर्मनी ने मानव शरीर में मौजूद एंटी बॉडी को लेकर शुरुआती शोध पूरी कर लिया है। अप्रैल के मध्य तक एक लाख लोगों पर इसका प्रयोग किया जाएगा। कोरोना वायरस के प्रति इनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता को नापा और मापा जा रहा है। इसके बाद इस टेस्ट को बड़ी आबादी पर किया जाएगा। जिन लोगों की एंटी बॉडीज कोरोना वायरस के खिलाफ लड़ने में कामयाब रहेंगी उन्हें एक सर्टिफिकेट दिया जाएगा, जो इम्युनिटी पासपोर्ट कहलाएगा। लॉकडाउन के बाद ये लोग ही सबसे पहले अपने काम पर लौटेंगे।

पांच साल लागू रह सकती है योजना

ब्रिटेन के सांसद और सर्जन डॉ. फिलिप विदफोर्ड ने बताया कि इससे मुश्किल काम में लगे लोगों को आसानी से वापसी का मौका मिलेगा। खासकर हेल्थ सिस्टम और हेल्थ सिस्टम के सहयोग में लगे लोगों को। उन्होंने बताया कि हम अब भी कोरोना वायरस के बारे में बहुत कुछ नहीं जानते हैं, ऐसे में सतर्क रहना ही होगा। ब्रिटिश सरकार के स्वास्थ्य सलाहकार प्रो. ओपनशॉ का कहना है कि इम्युनिटी पासपोर्ट योजना पांच साल तक अमल में लाई जा सकती है। यह हमें नए वायरसों के प्रभाव के बारे में भी जानने का मौका देगी। यदि हम समय पर किसी भी वायरस के प्रभाव का आकलन कर लेते हैं तो उसके उपचार की राह भी आसान हो सकती है।

योजना की जरूरत क्यों

लॉकडाउन के कारण औद्योगिक उत्पादन ठप हो गया है। सामान्य दुकानों से लेकर स्कूल तक बंद हैं। दुनिया को हर दिन अरबों डॉलर की आर्थिक चपत लग रही है। ऐसे में वर्क फोर्स को दोबारा काम पर लगाने की चुनौती है। जर्मनी ने इस दिशा में पहल की है। उसने इम्युनिटी पासपोर्ट योजना पर लॉकडाउन का फैसला करने के साथ ही काम करना शुरू कर दिया था। जिन लोगों के पास इम्युनिटी पासपोर्ट होगा उन्हें सबसे पहले काम पर आने का मौका मिलेगा। कोरोना वायरस का हमला अगर दोबारा नहीं होता है तो फिर धीरे-धीरे अन्य लोगों को।

ये कर रहे हैं शोध

जर्मनी के रॉबर्ट रोच इंस्टीट्यूट, जर्मन इंस्टीट्यूट ऑफ वायरस इंफेक्शन और बर्लिन के चैरिएट अस्पताल के इंस्टीट्यूट ऑफ वायरोलॉजी को जर्मनी के सार्वजनिक स्वास्थ्य मंत्रालय ने इस प्रोजेक्ट पर लगाया है। ब्लड डोनेशन में लगे एनजीओ से मदद ली जा रही है ताकि ज्यादा से ज्यादा सैंपल एकत्रित किए जा सकें। इस दौरान मानव शरीर में मौजूद लाखों तरीके की एंटी बॉडीज को पहचानने और उन्हें कोरोना से लड़ाई पर लगाने की युक्ति सोची जा रही है। स्वस्थ एंटी बॉडीज को पहचाना जाएगा, खासकर वे जो कोरोना के खिलाफ ताकतवर हैं।

ब्रिटेन भी तैयारी में

ब्रिटेन के शैडो हेल्थ सेक्रेट्री जोनाथन एशवर्थ ने बताया कि जर्मनी ने पहल की है। हमारी नजर उनके टेस्ट पर है। हम अपने यहां अपनी जरूरतों के मुताबिक टेस्ट कराएंगे और इम्युनिटी पासपोर्ट योजना पर अमल करेंगे। यह अच्छी योजना शुरुआती रूप से लग रही है। हेलमोट्ज इंस्टीट्यूट फॉर इंफेक्शन रिसर्च के एपिडोलॉजी के अध्यक्ष डॉ. गेराड क्रूज ने बताया कि ये लोग (इम्युनिटी पासपोर्ट होल्डर) एक तरह के वैक्सिनेशन कार्यक्रम का हिस्सा होंगे, जिन्हें काम करने की रियायत दी जाएगी। हालांकि जर्मनी की सरकार ने आधिकारिक रूप से इस संबंध में अब तक कोई टिप्पणी नहीं की है।

युवाओं को लेकर चिंता

हालांकि ब्रिटेन में इम्युनिटी पासपोर्ट योजना को लेकर लोग चिंता भी जाहिर कर रहे हैं। खासकर कमजोर स्वास्थ्य वाले युवाओं को लेकर, जिन्होंने भारी कर्ज लेकर पढ़ाई की है। काम नहीं कर पाने के कारण उनका कर्ज बढ़ता ही जा रहा है। निश्चित रूप से 'इम्युनिटी पासपोर्ट' के कारण उनका काम पर लौटना कठिन होगा। मगर स्वास्थ्य विशेषज्ञों का मत है कि ऐसे लोगों के बारे में बाद में सोचा जा सकता है।

(स्रोत: गार्जियन)

न्यूज गैलरी

महामारी से जंग को संयुक्त राष्ट्र में प्रस्ताव मंजूर

संयुक्त राष्ट्र: कोरोना से जंग के लिए संयुक्त राष्ट्र महासभा ने भारत समेत दुनिया के 188 देशों के समर्थन वाले एक प्रस्ताव को सर्वसम्मति से मंजूर कर लिया है। इसमें कोरोना वायरस यानी कोविड-19 की महामारी को खत्म करने के लिए अंतरराष्ट्रीय सहयोग तेज करने का प्रस्ताव किया गया है। कहा गया है कि इस जानलेवा वायरस से 'समाज और अर्थव्यवस्था को भीषण' खतरा है। प्रस्ताव का शीर्षक 'कोविड-19 के खिलाफ लड़ाई में वैश्विक एकजुटता' है। इस वैश्विक महामारी पर संयुक्त राष्ट्र द्वारा स्वीकार किया गया यह पहला दस्तावेज है। पूरी दुनिया में इस वायरस से संक्रमित लोगों की संख्या 10 लाख तक पहुंच गई है, लेकिन संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में अब तक इस महामारी पर चर्चा नहीं हुई है। (एपी)

इजरायल में बनी ब्राक शहर बना संक्रमण का केंद्र

बनी ब्राक(यरुशलम) : इजरायल में बनी ब्राक शहर कोरोना संक्रमण का सबसे बड़ा केंद्र बन गया है। जानकारों के मुताबिक, इसके लिए यहां यहूदियों के कट्टर रुढ़िवादी समुदाय हारेदी के नेता और लोग जिम्मेदार हैं। संक्रमण रोकने के लिए सरकार ने लोगों को घरों में ही रहने का निर्देश दे रखा है। लेकिन इस समुदाय के लोगों पर सरकारी फरमान का कोई असर नहीं देखा जा रहा है। इसके फलस्वरूप शहर में एक हफ्ते के भीतर संक्रमित मरीजों की तादाद सबसे ज्यादा हो गई है। तेजी से बढ़े संक्रमण पर चिंता जताते हुए इजरायली चिकित्सक संघ के प्रमुख हागेई लिवाइन ने कहा कि सिर्फ धर्मगुरुओं के आदेश को सिर-माथे लगाने वाले ये लोग पूरे देश को खतरे में डाल रहे हैं। (एपी)

ट्रंप की कंपनी पर कोरोना की चोट, कर्ज चुकाने को मांगा वक्त

न्यूयॉर्क: अमेरिका में राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के परिवार की कंपनी पर भी कोरोना वायरस की चोट पड़ी है। ट्रंप ऑर्गनाइजेशन ने कर्जदाताओं से धन के भुगतान के लिए अतिरिक्त समय मांगा है। कहा है कि कोरोना जनित बीमारी का कारोबार पर असर पड़ा है। भविष्य की योजनाएं प्रभावित हुई हैं। इसलिए उसे ऋण चुकाने के लिए अतिरिक्त समय दिया जाए। कंपनी ने यह बात ड्यूशे बैंक और कुछ अन्य कर्जदाताओं से कही है। न्यूयॉर्क में मुख्यालय वाली इस कंपनी स्थापना डोनाल्ड ट्रंप ने की थी। उनके राष्ट्रपति बनने के बाद अब उनके बेटे एरिक और डोनाल्ड जूनियर कारोबार संभालते हैं। न्यूयॉर्क टाइम्स के मुताबिक ट्रंप ऑर्गनाइजेशन ने अपने सबसे बड़े कर्जदाता ड्यूशे बैंक से इस बाबत मार्च में संपर्क किया है। कंपनी बकाया की वापसी के लिए अतिरिक्त समय चाहती है। इस संबंध में एरिक ट्रंप ने कहा, हम सभी लोग मिलकर काम कर रहे हैं। (एएफपी)

अमेरिका में हाहाकार, ढाई लाख संक्रमित

राष्ट्रपति ट्रंप बोले ▶ कोरोना वायरस से लड़ाई जीतने के लिए घरों में ही रहें लोग

देश में कोविड-19 से दम तोड़ने वाले पीड़ितों का आंकड़ा छह हजार के पार

वाशिंगटन, एजेंसियां : दुनिया के सबसे ताकतवर देश अमेरिका में कोरोना वायरस के कहर से हाहाकार जैसे हालात बन गए हैं। तमाम उपायों के बावजूद संक्रमित लोगों का आंकड़ा ढाई लाख के करीब पहुंच गया है। मरने वालों की संख्या छह हजार के पार पहुंच गई है। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा कि अमेरिका इस समय कोरोना के खिलाफ लड़ाई में बेहद अहम चरण में है। उन्होंने अमेरिकियों को सलाह दी है कि वे महामारी के खिलाफ लड़ाई जीतने के लिए अगले चार हफ्ते तक घरों में ही रहें और सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करें।

ट्रंप ने गुरुवार को ह्वाइट हाउस में पत्रकारों से बातचीत में कहा, 'हम कोरोना के खिलाफ लड़ाई में बेहद अहम दौर में हैं। यह महत्वपूर्ण है कि हर अमेरिकी प्रकोप पर अंकुश लगाने के लिए हमारे दिशा-निर्देशों का 30 दिनों तक पालन करें। आगामी चार हफ्ते तक के हमारे त्याग से अनगिनत अमेरिकियों की जान बच जाएगी।'

उन्होंने कहा कि हम वायरस से बचाव के लिए नए तरीकों के साथ ही तमाम थेरेपी, उपचार और वैक्सीन का विकास कर रहे हैं। अमेरिका में रोजाना एक लाख से ज्यादा कोरोना टेस्ट किए जा रहे हैं।

ट्रंप के निशाने पर मास्क निर्माता कंपनी : ट्रंप ने ट्वीट के जरिये फेस मास्क निर्माता कंपनी 3एम को आड़े हाथ लेते हुए कहा कि इसे कीमत चुकानी पड़ेगी। एन-95 मास्क बनाने वाली इस कंपनी के बारे में बताया जा रहा है कि इसने आपूर्ति कम कर दी है।

30 करोड़ से ज्यादा आबादी घरों में कैद : ह्वाइट हाउस ने बताया कि कोरोना वायरस की रोकथाम के प्रयास में अमेरिका की 33 करोड़ की आबादी में से 30.5 करोड़ लोग घरों में कैद हैं। ट्रंप ने सोशल डिस्टेंसिंग के दिशा-निर्देशों को 30 अप्रैल तक के लिए बढ़ा दिया है।

पहले एंटीबॉडी टेस्ट को मंजूरी : ट्रंप ने बताया कि यूएस फूड एंड ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन ने पहले कोरोना एंडीबॉडी टेस्ट को मंजूरी दी है। इससे कोरोना से उबरने वाले लोगों में इस संक्रमण से मुकाबले में उनकी प्रतिरक्षा प्रणाली की प्रतिक्रिया को समझने में मदद मिलेगी।

दूसरे टेस्ट में भी अमेरिकी राष्ट्रपति पास : ह्वाइट हाउस के फिजिशियन सीन कोनले ने बताया कि राष्ट्रपति ट्रंप का कोरोना वायरस को लेकर किया गया टेस्ट दूसरी बार भी निगेटिव आया है। वह पूरी तरह स्वस्थ हैं और उनमें कोरोना का कोई लक्षण नहीं पाया गया है। ट्रंप की यह जांच एक नए रैपिड-प्वाइंट-ऑफ-केयर टेस्ट से हुई। इससे नतीजा महज 15 मिनट में ही आ जाता है।

विमानवाहक युद्धपोत के कैप्टन की छुट्टी : अमेरिकी विमानवाहक युद्धपोत यूएसएस थियोडोर रूजवेल्ट के कैप्टन ब्रेट क्रोजियर को बर्खास्त कर दिया गया है। उन्होंने पत्र लिखकर आरोप लगाया था कि युद्धपोत पर कोरोना वायरस के संक्रमण को रोकने के लिए कुछ नहीं किया जा रहा है। पोत के करीब एक हजार नौसैनिकों को क्वारंटाइन किया गया है। 93 नौसैनिकों का टेस्ट पॉजिटिव आया है।

बचाव के लिए फेस मास्क पर्याप्त नहीं : ह्वाइट हाउस ने कहा कि कोरोना से बचाव में फेस मास्क पर्याप्त नहीं है। इसके लिए सोशल डिस्टेंसिंग और दूसरे सख्त उपायों की भी जरूरत है। ह्वाइट हाउस का यह बयान उन चर्चाओं के बीच आया है कि सभी अमेरिकियों को फेस मास्क पहनने की जरूरत है। ह्वाइट हाउस टास्क फोर्स की सदस्य डेबोरा बर्क्स ने पत्रकारों से कहा, 'याद रखें कि हर चीज के लिए यह (फेस मास्क) विकल्प नहीं है, जिसे सबको पहनने को कहा जा रहा है।'

डोनाल्ड ट्रंप। फाइल/एएफपी

मरीजों और शवों से भरे अस्पताल और मुर्दाघर

अमेरिका में कोरोना का केंद्र बने न्यूयॉर्क राज्य में महामारी से सबसे बुरे हालात हैं। न्यूयॉर्क शहर में स्थिति ऐसी है कि मरीजों से अस्पताल भर गए हैं। इससे निपटने के लिए शहर में कई अस्थायी अस्पताल बनाए जा रहे हैं। शहर के मुर्दाघरों में भी शवों को रखने के लिए जगह नहीं बची है। न्यूयॉर्क शहर के अंतिम संस्कार स्थलों और कब्रिस्तानों के निदेशकों ने बताया कि ऐसे हालात देखने को कभी नहीं मिले। शवों का अंतिम संस्कार रात में भी किया जा रहा है। न्यूयॉर्क राज्य में कोरोना से अब तक करीब 90 हजार से ज्यादा लोग संक्रमित पाए जा चुके हैं। ढाई हजार से अधिक की मौत हो चुकी है।

भारतवंशी ने बयां किया मंजर

न्यूयॉर्क शहर में कोरोना से मुकाबले में अग्रिम पंक्ति में खड़े भारतीय मूल के डॉक्टर कृष्ण कुमार ने शहर के भयावह मंजर को बयां किया है। उन्होंने कहा, 'यह कितनी भयावह स्थिति है कि लोग इमरजेंसी रूम में दम तोड़ रहे हैं।' उन्होंने बताया कि अस्पतालों के गलियारों में मरीज पड़े हैं। जबकि अस्पतालों के बाहर शवों को ले जाने के लिए फ्रीजर ट्रक खड़े हैं।

मृतकों की याद में चीन में शोक दिवस आज

बीजिंग, प्रेट्र : चीन में कोरोना वायरस से मरने वाले लोगों की याद में शनिवार को राष्ट्रीय शोक दिवस मनाया जाएगा। इस दिन राष्ट्रीय ध्वज झुका रहेगा और वायरस के खिलाफ लड़ाई में अपनी जान गंवाने वाले डॉक्टर ली वेनलियांग समेत अन्य शहीदों और इस संक्रामक रोग से देशभर में 3,300 से ज्यादा मरने वाले लोगों को याद किया जाएगा।

चीन के सरकारी अखबार ग्लोबल टाइम्स में शुक्रवार को प्रकाशित खबर के अनुसार, राष्ट्रीय शोक के दौरान पूरे देश और विदेश में सभी चीनी दूतावासों और वाणिज्य दूतावासों में राष्ट्रीय ध्वज आधा झुका रहेगा। इस दौरान देशभर में सार्वजनिक मनोरंजन की गतिविधियां भी स्थगित रहेंगी। देशभर में चीनी नागरिक शनिवार सुबह दस बजे मृतकों की याद में तीन मिनट का मौन रखेंगे। कोरोना वायरस के खिलाफ लड़ाई में जान देने वाले मध्य चीन के वुहान के डॉक्टर ली वेनलियांग समेत 14 कार्यकर्ताओं की शहीद के तौर पर पहचान की गई है। इन्होंने वायरस से लड़ाई में अग्रणी भूमिका निभाई थी। 34 वर्षीय वेनलियांग ने ही सबसे पहले वायरस के बारे में चेतावनी दी थी। लेकिन पुलिस ने इस पर ध्यान देने की जगह उन्हें प्रताड़ित किया था।

भीड़ को रोकने के लिए कराची में कर्फ्यू जैसे लॉकडाउन का एलान

▶ जुमे की नमाज में लोगों को आने से रोकने के लिए उठाया गया कदम

इस्लामाबाद, एजेंसियां : पाकिस्तान में लॉकडाउन तो है, लेकिन मस्जिदों में एकत्र होकर नमाज पढ़ने और धार्मिक आयोजनों का सिलसिला बदस्तूर जारी है। ताजा सिरदर्द जुमे की नमाज को लेकर है, जिसमें भारी संख्या में लोग मस्जिदों में आकर नमाज अदा करते हैं। मस्जिद में एकत्र होने वाली भीड़ को रोकने के लिए पाकिस्तान के सिंध प्रांत की राजधानी कराची में कुछ कड़े कदम उठाए गए हैं। यहां पर शुक्रवार को दिन में 12 बजे से तीन बजे के बीच कर्फ्यू जैसे लॉकडाउन का एलान किया गया है।

सिंध के स्थानीय निकाय और सूचना मंत्री नासिर शाह ने कहा कि सभी इस्लामिक स्कूलों के मौलवियों संग बैठक के बाद मस्जिदों में नमाज पर प्रतिबंध लगाने का निर्णय लिया गया है। शरई कानून इसकी पूरी तरह अनुमति देता है। उन्होंने कहा कि इस दौरान मस्जिदें पूरी खुली रहेंगी और तीन से लेकर पांच लोग जुमे की नमाज अदा कर सकेंगे। इस संबंध में लाहौर की एक इस्लामिक यूनिवर्सिटी ने फतवा भी जारी किया है। बता दें कि पाकिस्तान में अभी तक 2,450 लोग कोरोनावायरस के संक्रमण का शिकार हो चुके हैं जबकि 35 लोगों की मौत हो चुकी है। उधर, बांग्लादेश में भी मना करने के बावजूद लोग मस्जिदों में आने से बाज नहीं आ रहे हैं। बांग्लादेश की शीर्ष मुस्लिम संस्था द इस्लामिक फाउंडेशन ने कहा है कि बुजुर्ग और ऐसे लोग जिन्हें बुखार और खासी जैसे लक्षण हैं, उन्हें घर पर ही नमाज अदा करनी चाहिए।

डेढ़ करोड़ लोगों की जाएगी नौकरी : सरकार का अनुमान है कि कोरोनावायरस महामारी से तीन महीने के दौरान अर्थव्यवस्था को बड़ा नुकसान होगा। इस दौरान 1.23 करोड़ से 1.85 करोड़ लोगों को अपनी नौकरी से हाथ धोना पड़ेगा।

ई-मेल से आदेश भेजने की शुरुआत : लाहौर हाई कोर्ट ने ई-मेल के माध्यम से जिला अदालतों को जमानत आदेश भेजने की शुरुआत की है। शारीरिक दूरी के नियमों का पालन करते हुए हाई कोर्ट ने यह कदम उठाया है। इससे पहले वायरस के संक्रमण रोकने के लिए कैफेटेरिया के इस्तेमाल पर पांच अप्रैल तक प्रतिबंध लगा दिया गया है।

गूगल ने जारी की 131 देशों के लोगों की लोकेशन डाटा रिपोर्ट

ऑकलैंड (कैलिफोर्निया), रायटर : गूगल ने 131 देशों के लिए लोकेशन डाटा रिपोर्ट जारी की है। इस रिपोर्ट से यह दर्शाने में मदद मिलेगी कि कोरोना का संक्रमण रोकने के लिए जिस समय कई देशों में सरकारों ने लोगों को घर पर रहने का आदेश जारी किया था तो उस दौरान दुकान, पार्क और कार्यस्थल पर जाने वालों की संख्या में कमी आई या नहीं। मार्च माह में कई देशों ने अपने लोगों को घरों से बाहर ना निकलने का आदेश जारी किया था।

गूगल के लाखों फोन यूजर्स के लोकेशन डाटा का यह विश्लेषण सबसे बड़ा सार्वजनिक डाटा हो सकता है। डाटा स्वास्थ्य अधिकारियों के लिए यह आकलन करने में मददगार साबित होगा कि लोग अपने घरों में ही रहने और दुनिया भर में जारी ऐसे ही आदेश का पालन कर रहे हैं या नहीं। विशेषज्ञों का कहना है कि उम्र, आय और अन्य जनसांख्यिकी हिसाब से समूहों की यात्रा के विश्लेषण से सार्वजनिक सेवाओं की घोषणा को आकार देने में मदद मिलेगी। बता दें कि संक्रमण के इस दौर में चीन, सिंगापुर तथा दक्षिण कोरिया समेत कई देशों ने अपने लोगों से शारीरिक दूरी बनाए रखने के लिए एप का इस्तेमाल करने का निर्देश दिया था।

अमेरिका के बाद स्पेन में सबसे ज्यादा कोरोना के मरीज

मैड्रिड, एजेंसियां : कोरोना वायरस का कहर कम होने का नाम नहीं ले रहा। स्पेन में पिछले चौबीस घंटों में 932 लोगों की जान गई है। गुरुवार को यह आंकड़ा 950 था। वहां मृतकों की कुल तादाद 10,935 हो गई है। खास बात यह है कि अमेरिका के बाद स्पेन में सबसे ज्यादा लोग संक्रमित हैं। इनकी संख्या 1,17,710 है। यह हाल तब है, जब स्पेन की आबादी अमेरिका से सात गुना कम है। महामारी से राजधानी मैड्रिड सबसे ज्यादा प्रभावित है। वहां पर 4400 से ज्यादा मौतें हुई हैं। राजधानी के नर्सिंग होम बीमार लोगों से भरे पड़े हैं और यहां रहने वाले पचास हजार बुजर्ग लोगों को सबसे ज्यादा खतरा है। स्पेन में पिछले 14 मार्च से लॉकडाउन है।

फ्रांस में मृतकों की संख्या में अप्रत्याशित वृद्धि : फ्रांस में कोरोना से मरने वालों की संख्या 5,387 हो गई है। नर्सिंग होम में जान गंवाने वालों की संख्या को मिलाने के बाद मृतकों के आंकड़ों में यह अप्रत्याशित उछाल आया है। बता दें कि गुरुवार तक फ्रांस के सरकारी अस्पतालों में 4503 लोगों की जान गई थी। जबकि 884 लोगों की मौत नर्सिंग होम में हुई थी। हालांकि अभी भी देश के सभी नर्सिंग होम का आंकड़ा नहीं मिल सका है। फ्रांस में 7400 नर्सिंग होम पंजीकृत हैं। फ्रांस के प्रधानमंत्री ने लॉकडाउन को 15 अप्रैल से आगे बढ़ाने की संभावना जताई है। वहां पर 17 मार्च को इसकी शुरुआत हुई थी। पेरिस में आइसीयू बेड खत्म हो चुके हैं।

ईरान की संसद के स्पीकर भी आए चपेट में : ईरानी संसद के स्पीकर अली लारिजानी का कोरोना टेस्ट पॉजिटिव आया है। वहीं ईरान में पिछले चौबीस घंटे में 134 और लोगों की जान गई है। इस तरह मरने वालों की संख्या 3294 हो गई है। पिछले चौबीस घंटे में 2,715 संक्रमण के नए मामले सामने आए हैं। इस तरह ईरान में संक्रमित लोगों की तादाद बढ़कर 53,183 हो गई है।

मृतकों की संख्या पर जर्मनी में उठे सवाल : जर्मनी के डिजीज कंट्रोल एजेंसी के प्रमुख ने महामारी से मरने वालों की संख्या पर सवाल उठाए हैं। राबर्ट कोच इंस्टीट्यूट के लोथर विलियर ने कहा कि आधिकारिक तौर पर मृतकों के जो आंकड़े बताए जा रहे हैं, उसके मुकाबले मरने वालों की तादाद कहीं ज्यादा है। हालांकि उन्होंने यह नहीं बताया कि उनका आशय सिर्फ जर्मनी से है या फिर पूरे विश्व से है। जर्मनी में मृतकों की संख्या 1107 हो गई है। जबकि 85,000 लोग संक्रमित हुए हैं।

चीन ने सीमा पर निगरानी बढ़ाई: विदेशों से किसी तरह के संक्रमण को रोकने के लिए चीन ने दक्षिण-पूर्व एशिया देशों के साथ लगती सीमा पर निगरानी बढ़ा दी है। पीएम ली क्यांग के नेतृत्व में बने कार्यबल ने कहा है कि देश में प्रवेश करने वाले यात्रियों को आइसोलेशन में रहना होगा।

आगे भी आइसोलेशन में रहेंगे बोरिस जॉनसन

ब्रिटेन में पिछले चौबीस घंटों में 684 लोगों की जान गई है। एक दिन पहले के मुकाबले मृतकों की संख्या में 23 फीसद की वृद्धि दर्ज की गई है। ब्रिटेन के पीएम बोरिस जॉनसन में अभी भी कोरोना के लक्षण दिखाई दे रहे हैं। उनके सात दिनों के सेल्फ आइसोलेशन की अवधि शनिवार को खत्म हो रही है, लेकिन वह फिलहाल आइसोलेशन में रहेंगे। इसकी पुष्टि उन्होंने स्वयं की। सरकार के चीफ मेडिकल ऑफिसर क्रिस व्हिटी भी आइसोलेशन में हैं ।

बोरिस जॉनसन। एएफपी

देश	मौतें	संक्रमित
इटली	13,915	1,15,242
स्पेन	10,935	1,17,710
अमेरिका	6098	2,45,442
फ्रांस	5,387	59,105
ईरान	3,294	53,183
चीन	3,322	81,620
ब्रिटेन	3,605	38,168
जर्मनी	1107	85,000

महामारी से दुनियाभर के लोग हैं सांसत में

ब्राजील में पिछले चौबीस घंटों में 59 लोगों की मौत हुई है। वहां मृतकों की संख्या 299 हो गई है। पिछले चौबीस घंटे में 1,074 लोग संक्रमित हुए हैं।

टोरंटो में दो लोगों के बीच 6 फुट का फासला नहीं रखने वालों पर 3500 डॉलर (दो लाख 63 हजार रुपये) का जुर्माना लगाने का फैसला लिया गया है।

अमेरिका के क्रूज शिप कोरल प्रिंसेज में सवार 12 लोगों का कोरोना टेस्ट पॉजिटिव आया है। इसमें 1020 यात्री और चालक दल के 878 लोग सवार हैं।

प्रिंस चार्ल्स ने शुक्रवार को चार हजार बिस्तरों वाले एक फील्ड हॉस्पिटल का वीडियो लिंक के माध्यम से उदघाटन किया।

ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री ने कोरोना महामारी के दौरान अंतरराष्ट्रीय छात्रों को आर्थिक मदद देने से इन्कार कर दिया है।

स्विटजरलैंड में मृतकों की संख्या 484 हो गई है। जबकि संक्रमित लोगों का आंकड़ा 19,303 हो गया है।

सऊद अरब ने निजी क्षेत्र में काम करने वाले लोगों के लिए लगभग 18 हजार करोड़ रुपये के पैकेज का एलान किया है।

कार्टून सीरिज 'द योगी बियर शो' के वाइस एक्टर जूली बेनेट की कोरोना से मौत हो गई है।

लंदन के हीथ्रो एयरपोर्ट के एक रनवे को अगले सप्ताह तक बंद कर दिया गया है।

हवा के जरिये नहीं, ड्रॉपलेट्स से फैलता है महामारी का वायरस

▶ विश्व स्वास्थ्य संगठन ने अपनी हालिया रिपोर्ट में किया दावा

▶ संक्रमित व्यक्ति के आसपास रखी वस्तुओं को छूने से भी फैलती है बीमारी

बीजिंग, प्रेट्र : विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) का मानना है कि खतरनाक कोरोना वायरस रेस्पिरेटरी ड्रॉपलेट्स और करीबी संपर्क से फैलता है। ऐसा लगता है कि यह वायरस हवा में लंबे समय तक बरकरार नहीं रहता।

डब्ल्यूएचओ की हालिया रिपोर्ट में कहा गया है कि यह संक्रमण विभिन्न आकार की श्वसन बूंदों के जरिये फैलता है। जब खांसी-सर्दी से पीड़ित कोई व्यक्ति छींकता है तो रेस्पिरेटरी ड्रॉपलेट्स (सूक्ष्म श्वसन बूंदों) के जरिये संक्रमण उसके करीबी संपर्क (एक मीटर से कम दूरी पर स्थित व्यक्ति) तक पहुंच जाता है, जिसका आकार 5-10 माइक्रोन तक होता है। एक माइक्रोन 0.001 मिलीमीटर के बराबर होता है। चीन के सरकारी समाचार पत्र चाइना डेली ने डब्ल्यूएचओ की रिपोर्ट का हवाला देते हुए लिखा, 'संक्रमित व्यक्ति के आसपास के तात्कालिक वातावरण में सतह या वस्तुओं को छूने से भी संक्रमण के फैलाव का खतरा रहता है। हवा में फैलने वाला संक्रमण सूक्ष्म श्वसन बूंदों के जरिये फैलने वाले संक्रमण से अलग होता है। इसका कारण है कि यह सूक्ष्म बूंदों के भीतर वायरस की मौजूदगी को दिखाता है, जिनका व्यास आमतौर पर पांच माइक्रोन से कम होता है।'

डब्ल्यूएचओ की रिपोर्ट के अनुसार, चीन में कोरोना वायरस के 75,465 मरीजों की जांच की गई है। इस दौरान किसी में भी हवा के जरिये संक्रमण की पुष्टि नहीं हुई। इसके आधार पर डब्ल्यूएचओ ने कोरोना संक्रमित मरीजों की देखभाल कर रहे लोगों को खांसने या छींकने से बाहर आने वाली सूक्ष्म बूंदों और उनके नजदीकी संपर्क से सावधान रहने की सलाह दी है।

अमेरिकी दबाव में झुका पाक, पर्ल के हत्यारे फिर गिरफ्तार

▶ सिंध की प्रांतीय सरकार ने रिहा होने से पहले चारों को किया गिरफ्तार

▶ अमेरिका ने पाकिस्तानी हाई कोर्ट के फैसले को अपमानजनक करार दिया

वाशिंगटन, प्रेट्र: अमेरिकी दबाव के आगे झुकते हुए पाकिस्तान ने पत्रकार डेनियल पर्ल के हत्यारों को फिर से गिरफ्तार कर लिया है। इससे पहले पाकिस्तान की सिंध प्रांत के हाई कोर्ट ने पर्ल की हत्या के मुख्य दोषी और ब्रिटिश मूल के अलकायदा आतंकी अहमद उमर सईद शेख की मौत की सजा को सात साल कैद में तब्दील कर दिया था। साथ ही तीन अन्य दोषियों फहद नसीम, सलमान साकिब और शेख मुहम्मद आदिल को रिहा कर दिया था। इन तीनों को सात-सात कैद की सजा सुनाई गई थी। कोर्ट के इस फैसले को अमेरिका ने 'अपमानजनक' बताया था। मुख्य दोषी उमर सईद शेख 2002 में कराची में पर्ल की हत्या में दोषी ठहराए जाने के बाद से पिछले 18 साल से जेल में बंद है।

सिंध की प्रांतीय सरकार द्वारा जारी आदेश के अनुसार, सरकार के पास इस बात के पर्याप्त कारण है कि मुख्य दोषी उमर सईद शेख, फहद नसीम अहमद, सलमान साकिब और शेख मुहम्मद आदिल को गिरफ्तार किया जाए और तीन महीने तक हिरासत में रखा जाए। चारों को जेल से रिहा किया जाने के पहले ही गिरफ्तार कर लिया गया। अधिकारियों को चिंता है कि ये लोग देशहित के खिलाफ काम कर सकते हैं।

उधर, इससे पहले दक्षिण एशिया मामलों की शीर्ष अमेरिकी राजनयिक एलिस वेल्स ने कहा, 'डेनियल पर्ल की हत्या के दोषियों की सजा कम करना दुनिया में आतंकवाद से पीड़ित प्रत्येक व्यक्ति का अपमान करने जैसा है।' हालांकि उन्होंने पाकिस्तानी अभियोजकों के उन संकेतों का स्वागत किया है, जिसमें उन्होंने फैसले के खिलाफ अपील करने की बात कही है।

अलकायदा और आइएसआइ के संबंधों की कर रहे थे पड़ताल

'द वॉल स्ट्रीट जर्नल' के दक्षिण एशिया ब्यूरो प्रमुख 38 वर्षीय पर्ल को 2002 में कराची से अगवा किया गया था और उसके बाद हत्या कर दी गई। वह आइएसआइ और आतंकी संगठन अलकायदा के बीच संबंधों की पड़ताल करने वाली एक खोजी खबर के सिलसिले में वहां गए थे।

पत्रकार डेनियल पर्ल की हत्या का मुख्य दोषी अलकायदा का आतंकी अहमद उमर सईद शेख। फाइल/रायटर

आयोग ने भी जताई नाराजगी

अंतरराष्ट्रीय धार्मिक स्वतंत्रता से संबंधित अमेरिकी आयोग की कमिश्नर अनुरिमा भार्गव ने कहा है कि कोर्ट का फैसला यह दिखाता है कि पाकिस्तान ने पर्ल की हत्या के दोषियों को सजा दिलाने में कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई। इतना ही नहीं इस फैसले से पाकिस्तान की न्यायिक व्यवस्था पर भी सवाल उठते हैं। अमेरिका के नेशनल प्रेस क्लब और नेशनल प्रेस क्लब जर्नलिज्म इंस्टीट्यूट ने पाक की सुप्रीम कोर्ट से फैसले पर पुनर्विचार का आग्रह किया है।

चीन के सी-फूड बाजार पर कार्रवाई करें संयुक्त राष्ट्र

मेलबर्न, प्रेट्र : महामारी का कारण बने चीन के सी-फूड बाजार के खिलाफ दुनिया का गुस्सा अब बढ़ने लगा है। इसकी शुरुआत ऑस्ट्रेलिया से हुई है। वहां के प्रधानमंत्री स्कॉट मॉरिसन ने शुक्रवार को डब्ल्यूएचओ और संयुक्त राष्ट्र से चीन के इन बाजारों के खिलाफ कार्रवाई का आग्रह किया है। बता दें कि वुहान के सी-फूड बाजार में बिकने वाले चमगादड़ से मनुष्य में वायरस फैलने की बात सामने आई थी।

गुरुवार को एक टीवी चैनल को दिए इंटरव्यू में मॉरिसन ने कहा कि चीन के सी-फूड बाजार एक बहुत बड़ी समस्या हैं। यह वायरस चीन से शुरू हुआ और अब पूरी दुनिया में फैल गया है। लोगों के स्वास्थ्य को देखते हुए विश्व स्वास्थ्य संगठन को इस बारे में कुछ करना चाहिए। शुक्रवार को एक मीडिया ब्रीफिंग के दौरान भी मॉरिसन ने इस तरह की बाजारों पर कार्रवाई की बात कही थी।

भारत में चल रहे लॉकडाउन के समय हमें मानसिक स्वास्थ्य का भी ख्याल रखना जरूरी है।

– अजिंक्य रहाणे, भारतीय क्रिकेटर

पाक अल्पसंख्यकों के लिए आगे आएं युवी-भज्जी : कनेरिया

नई दिल्ली, प्रेट्र : पाकिस्तान के पूर्व स्पिनर दानिश कनेरिया ने टीम इंडिया के सीनियर स्पिनर हरभजन और 2011 विश्व चैंपियन टीम के सदस्य रहे युवराज सिंह से अपील की है कि वे आगे आएं और एक वीडियो बनाकर पाकिस्तानी अल्पसंख्यकों का समर्थन करें। कनेरिया ने लिखा कि मैं युवराज सिंह और हरभजन सिंह से आग्रह करता हूं कि वे पाकिस्तान में रह रहे अल्पसंख्यकों के लिए भी एक वीडियो बनाएं।

एक नजर में

किसी को नहीं पता कब शुरू होगा फुटबॉल : फीफा प्रमुख

अशनशिओन : फीफा प्रमुख गिआनी इंफानटिनो ने स्वीकार किया कि किसी को भी नहीं पता है कि कब पूरी दुनिया में फुटबॉल दोबारा से शुरू हो पाएगा। उन्होंने कहा कि कोरोना वायरस महामारी की वजह से इस वक्त फुटबॉल सबसे अहम चीज नहीं है। हम सभी दुआ करते हैं कि कल से ही फुटबॉल शुरू हो जाए, लेकिन यह मुमकिन नहीं है और पूरी दुनिया में कोई ऐसा इंसान नहीं है जो बता सके कि यह कब से शुरू होगा। (एएफपी)

प्रो लीग का निलंबन बढ़ा

नई दिल्ली : अंतरराष्ट्रीय हॉकी फेडरेशन ने एफआइएच प्रो लीग के दूसरे सत्र के निलंबन को कोरोना वायरस की वजह से आगे बढ़ा दिया है। अब यह जुलाई और अगस्त में कराने की तैयारी है। एफआइएच को इससे पहले दो बार कोरोना वायरस की वजह से लीग का निलंबन करना पड़ा था। पहले उन्होंने 15 अप्रैल तक रद किया, इसके बाद उन्होंने 17 मई तक इसे बढ़ा दिया था। (प्रेट्र)

रूस के कोच को कोरोना

मास्को : रूस की राष्ट्रीय मुक्केबाजी टीम के कोच को कोराना वायरस हो गया है। वह पिछले महीने लंदन से ओलंपिक क्वालीफायर में भाग लेकर पहुंचे थे। एंटोन कादुशिन ने अपने इंस्टाग्राम पर कोरोना पॉजिटिव होने की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि 25 मार्च को मुझे बुखार महसूस हुआ था। तब से ही वह घर पर अलग-थलग हैं। (रायटर)

एजबेस्टन में होगा टेस्ट

लंदन : काउंटी क्रिकेट क्लब वार्विकशायर ने शुक्रवार को कहा कि वह एजबेस्टन स्टेडियम को सरकार को सौंप रहा है ताकि इसका इस्तेमाल कोरोना वायरस जांच के लिए एक केंद्र के रूप में किया जा सके। स्टेडियम की मुख्य कार पार्किंग को राष्ट्रीय स्वास्थ्य सेवा (एनएचएस) में काम कर रहे मेडिकल स्टाफ के परीक्षण करने के लिए इस्तेमाल किया जाएगा। (प्रेट्र)

टेनिस नहीं होने का डर

लंदन : विंबलडन प्रमुख रिचर्ड लुईस ने स्वीकार किया कि उन्हें डर है कि इस वर्ष पूरा टेनिस सत्र ही ना धुल जाए। पिछले महीने से ही टेनिस गतिविधि बंद है और 13 जुलाई तक इसे चालू नहीं होने की उम्मीद है। बुधवार को ही विंबलडन को रद कर दिया गया था। (एएफपी)

लॉकडाउन के बाद भी हम लोग नीचे नहीं कर सकते गार्ड : सचिन

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से बात करने के बाद बोले पूर्व भारतीय क्रिकेटर तेंदुलकर

जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की शुक्रवार को खिलाड़ियों के साथ वीडियो कांफ्रेंस में चर्चा के बाद पूर्व भारतीय दिग्गज बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर ने कहा कि लॉकडाउन के बाद भी हम गार्ड नीचे नहीं कर सकते। प्रधानमंत्री ने हमसे कहा है कि 14 अप्रैल के बाद का समय कोरोना वायरस महामारी के खिलाफ लड़ाई में काफी अहम होगा।

तेंदुलकर उन 40 खिलाड़ियों में से थे जिन्होंने देश की मौजूदा स्थिति पर की वीडियो कांफ्रेंस में भाग लिया। सचिन ने कहा कि प्रधानमंत्री ने मेरी इस धारणा को पुख्ता किया कि हम 14 अप्रैल के बाद भी निश्चिंत होकर बैठ नहीं सकते। उसके बाद का समय काफी अहम होगा।

सचिन ने बताया कि उन्होंने पीएम से कहा कि मैं अब किसी से हाथ मिलाने की बजाय हाथ जोड़कर नमस्ते करता हूं। मैं जहां तक संभव हो, इसी तरीके से अभिवादन करता रहूंगा, महामारी से उबरने के बाद भी। सचिन ने कहा कि प्रधानमंत्री ने हमें बताया कि इस समय बुजुर्गों का खास ध्यान रखने की जरूरत है। उनके अनुभव और उनकी कहानियां सुननी चाहिए। सचिन ने कहा कि हमने यह भी बात की कि इस समय शारीरिक के साथ मानसिक स्वास्थ्य पर भी ध्यान देना होगा। हमें एक टीम भावना से टीम के रूप में काम करते हुए देश को इस महामारी से निकालना है।

सचिन तेंदुलकर ● फाइल फोटो, फेसबुक

शास्त्री और हरभजन ने की अपील : भारतीय टीम के कोच रवि शास्त्री और ऑफ स्पिनर हरभजन सिंह ने देशवासियों से कोरोना वायरस पर जंग में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का साथ देने की अपील की। शास्त्री ने ट्वीट किया कि एकजुटता दिखाने के लिए 130 करोड़ लोगों से मेरी अपील है कि एक दीया या एक मोमबत्ती या टॉर्च या मोबाइल की फ्लैश लाइट पांच अप्रैल रात नौ बजे नौ मिनट के लिए जलाकर एकजुटता दिखाएं। हरभजन ने लिखा कि हर इंसान को अपने हिस्से की जिम्मेदारी घर पर रहकर निभानी है। हमें अपने टीम लीडर नरेंद्र मोदी पर गर्व है। हमें अभी घर पर ही रहना है और सुरक्षित रहना है। पांच अप्रैल को मोमबत्ती, दीया, टॉर्च, मोबाइल की फ्लैश लाइट जलाएं लेकिन घर से ही। वहीं भारतीय निशानेबाज मनु भाकर और पहलवान बजरंग पूनिया ने भी प्रधानमंत्री का साथ देने की अपील की है।

दुखी हूं कि लोग पुलिस-डॉक्टर पर पत्थर बरसा रहे हैं : हिमा

नई दिल्ली : भारतीय महिला धावक हिमा दास ने प्रधानमंत्री से कहा कि वह दुखी हैं कि लोग पुलिस और डॉक्टर पर पत्थर बरसा रहे हैं। असम पुलिस में डीएसपी दास ने कहा कि प्रधानमंत्री ने हमें बताया कि सरकार कोरोना को रोकने के लिए क्या कदम उठा रही है। साथ ही हमें बताया गया कि हम कैसे घर में रहकर लॉकडाउन का पालन कर सकते हैं। मैंने कहा कि 21 दिन का लॉकडाउन खत्म होने के बाद भी जब तक पूरी तरह से कोरोना वायरस खत्म नहीं होता है लॉकडाउन के नियम लागू रहने चाहिए। लोगों को अपने घरों से बाहर नहीं जाना चाहिए और शारीरिक दूरियां बनाए रखनी चाहिए।

भूटिया बोले, जिन्होंने स्वास्थ्य कर्मियों पर हमला किया उनको सजा हो : भारतीय फुटबॉल टीम के पूर्व कप्तान बाइचुंग भूटिया ने प्रधानमंत्री से कहा कि जिन लोगों ने स्वास्थ्य कर्मियों पर हमला किया है उनको सजा मिलनी चाहिए। साथ ही उन्होंने सिक्किम में पीपीई और टेस्टिंग किट्स उपलब्ध कराने की भी मांग की। उन्होंने कहा कि स्वास्थ्यकर्मी का हौसला बढ़ाने की जरूरत है, क्योंकि उनमें संक्रमण फैलने की संभावना सबसे अधिक है।

फिटनेस पर ध्यान दे रहा हूं : आशीष

ओलंपिक क्वालीफायर (75 किग्रा) कांस्य जीतकर देश को टोक्यो ओलंपिक का कोटा दिलाने वाले भारतीय मुक्केबाज लॉकडाउन का अच्छा इस्तेमाल कर रहे हैं। हिमाचल प्रदेश के मंडी का यह मुक्केबाज अब लॉकडाउन में मुक्केबाजी से ज्यादा अपनी फिटनेस पर काम कर रहा है और अपने परिवार के साथ समय व्यतीत कर रहा है। जेएसडब्ल्यू के सहयोग से मुक्केबाजी को आगे बढ़ा रहे **आशीष** से ओलंपिक के अलावा अन्य मुद्दों को लेकर **योगेश शर्मा** ने खास बातचीत की। पेश हैं मुख्य अंश :

साक्षात्कार

● ओलंपिक के एक साल टलने पर फायदा है या नुकसान?

-इससे हमें थोड़ा फायदा होगा और तैयारी करने का मौका मिल जाएगा। इसके अलावा अगर कोई खिलाड़ी चोट से परेशान है तो उसे भी उभरने में भी मदद मिलेगी लेकिन अगर यह इस साल होते तो अभी हम अच्छी फॉर्म थे और इसका फायदा हमें जरूरत मिलता।

● 2021 तक कई टूर्नामेंट होंगे। ऐसे में खिलाड़ियों के चोटिल होने का भी खतरा रहेगा?

-इस पर भी हमारा ध्यान है और चोटिल होने से बचने की पूरी कोशिश करेंगे। अन्य टूर्नामेंट में हम खेल सकते हैं, लेकिन मुख्य टूर्नामेंट तो ओलंपिक है।

● ओलंपिक क्वालीफायर में अच्छे प्रदर्शन के बाद भी स्वर्ण नहीं लाने के पीछे वजह?

-मैंने अपना 100 प्रतिशत दिया था। लेकिन कुछ कमी रह गई थी और जिन पर मैं काम कर रहा हूं। अगली बार उस मुक्केबाज को भी हरा दूंगा जिससे मैं हारा था।

● लॉकडाउन में आप घर पर कैसे समय व्यतीत कर रहे हैं?

-मैं अभी घर पर अपनी फिटनेस पर काम कर रहा हूं और फिटनेस से जुड़ी सभी चीजें मैंने घर पर रखी हुई हैं। मैं रोज एक्सरसाइज करता हूं और मौका मिलने पर मुक्केबाजी भी कर लेता हूं। लेकिन जो शिविर में हम अभ्यास करते हैं, वैसा अभ्यास घर पर नहीं हो पा रहा है। मुक्केबाजी से ज्यादा अपनी फिटनेस पर काम कर रहा हूं। मुझे परिवार वालों के साथ अधिक समय व्यतीत करने का मौका भी मिल रहा है और मैं इसका फायदा उठा रहा हूं।

● ओलंपिक क्वालीफायर से एक महीने पहले आपके पिता जी का निधन हो गया था?

-हां, उस समय मुझे लगा था कि मुझे टूर्नामेंट खेलने नहीं जाना चाहिए लेकिन मेरे परिवार ने मेरा समर्थन किया और उन्होंने मुझे घर पर तीन दिन से ज्यादा रुकने नहीं दिया। उन्होंने मुझे वापस भेज दिया और कहा कि जाओ तैयारी करो। देश को ओलंपिक का कोटा दिलाओ।

● भारतीय मुक्केबाजी संघ ने ऑनलाइन कोचिंग शुरू और हाई परफोर्मेंस नीवा के रहने से कोई फायदा पहुंचा?

-कोचिंग में हमारी कमियों के बारे में बताया जाता है और उसे विस्तार से समझाया जाता है। मुझे लगता है कि नीवा के आने से हमें फायदा मिला।

आशीष की उपलब्धियां

- 2015 में राष्ट्रीय चैंपियनशिप में स्वर्ण
- 2019 थाइलैंड ओपन में स्वर्ण
- 2019 एशियन चैंपियनशिप में रजत
- 2020 ओलंपिक क्वालीफायर में कांस्य

धौनी-गैरी कोहली को टीम में नहीं चाहते थे : वेंगसरकर

नई दिल्ली, जेएनएन : 2008 में तत्कालीन भारतीय कप्तान एमएस धौनी, कोच गैरी कर्स्टन और बीसीसीआइ प्रमुख एन. श्रीनिवासन विराट कोहली के चयन से खुश नहीं थे। इस बात का रहस्योद्घाटन उस वक्त चयन समिति के चेयरमैन रहे दिलीप वेंगसरकर ने किया।

उन्होंने बताया कि मैंने और मेरे पैनल ने अंडर-23 टीम के कुछ खिलाड़ियों को टीम में लेने का फैसला किया था। उसी वक्त भारतीय टीम ने अंडर-19 विश्व कप का खिताब विराट कोहली की कप्तानी में जीता था। हमने 2008 में श्रीलंका दौरे के लिए उन्हें चुन लिया। कर्स्टन और धौनी ने विराट के लिए साफ ना कहा था। दोनों ने कहा था कि उसे खेलते नहीं देखा है और हम पुरानी टीम के साथ श्रीलंका जाएंगे। मैंने उनसे बताया कि मैंने उस लड़के को खेलते देखा है। इस लड़के को टीम में होना चाहिए। धौनी और श्रीनिवासन ने कहा था कि एस. बद्रीनाथ को टीम में होना चाहिए। उन्होंने घरेलू क्रिकेट में अच्छा प्रदर्शन किया है। यही हुआ भी। हालांकि, विराट को भी श्रीलंका दौरे पर टीम में जगह मिल गई थी। वेंगसकर का कहना है कि इसी बात से नाराज होकर श्रीनिवासन ने उनके मुख्य चयनकर्ता का कार्यकाल जल्द समाप्त कर दिया।

दिलीप वेंगसरकर ● फाइल फोटो, प्रेट्र

अब ओलंपिक क्वालीफिकेशन की नई समय सीमा तय

जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली : अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति (आइओसी) ने शुक्रवार को कहा कि टोक्यो ओलंपिक के एक साल तक के लिए स्थगित होने के बाद उसने ओलंपिक क्वालीफिकेशन की नई समय सीमा 29 जून 2021 तय की है। टोक्यो ओलंपिक इस साल 24 जुलाई से नौ अगस्त तक होना था, लेकिन कोरोना वायरस के कारण इसे अगले साल तक के लिए स्थगित कर दिया गया है। अब ओलंपिक का आयोजन अगले साल 23 जुलाई से आठ अगस्त के बीच में होगा।

आइओसी ने सभी राष्ट्रीय ओलंपिक समितियों को भेजे गए पत्र में ओलंपिक क्वालीफिकेशन के लिए नई तारीखें निर्धारित की हैं और कहा कि नई क्वालीफिकेशन समय सीमा 29 जून 2021 होगी।

आइपीएल को लेकर अब भी उम्मीद : कमिंस

क्रिकेट डायरी

सिडनी, प्रेट्र : आइपीएल के सबसे महंगे खिलाड़ियों में से एक ऑस्ट्रेलिया के तेज गेंदबाज पैट कमिंस ने लीग के आयोजन को लेकर उम्मीद नहीं छोड़ी है। उन्होंने स्वीकार किया कि कोरोना वायरस के कारण लॉकडाउन से टूर्नामेंट के इस महीने शुरू होने की संभावना कम है।

कमिंस को कोलकाता नाइटराइडर्स ने इस साल के शुरू में हुई नीलामी में 15.50 करोड़ रुपये में खरीदा था। वह आइपीएल में सबसे बड़ी कीमत पर बिकने वाले विदेशी खिलाड़ी बने थे। 26 साल के कमिंस ने कहा कि आइपीएल अभी रद नहीं किया गया है या इस तरह का कोई फैसला आयोजकों ने नहीं किया है। उसकी स्थिति अभी जस की तस है। हम लगातार अपनी टीमों के संपर्क में हैं। निश्चित तौर पर अब भी हर कोई चाहता है कि इस टूर्नामेंट का आयोजन हो।

जिंदगी ज्यादा अहम है, आइपीएल इंतजार कर सकता है : रैना

नई दिल्ली : भारतीय बल्लेबाज सुरेश रैना ने कहा कि जिंदगी ज्यादा अहम है और आइपीएल इंतजार कर सकता है। रैना ने कहा कि इतने सारे लोगों की इस समय जान जा रही है। हमें जिंदगियां बचाने की जरूरत है। मैं लॉकडाउन में आराम कर रहा हूं, खाना पका रहा हूं, बच्चों के साथ समय बिता रहा हूं। क्रिकेट के अलावा भी जिंदगी में इतना कुछ करने को है, इस तरह के क्षण आपको यह महसूस कराते हैं। इस लॉकडाउन से लोगों को जमीन से जुड़ने की महत्वता को महसूस करना चाहिए।

भारत से लौटे दक्षिण अफ्रीकी खिलाड़ियों के टेस्ट निगेटिव : भारतीय दौरा बीच में रद होने के बाद स्वदेश लौटने वाले सभी दक्षिण अफ्रीकी क्रिकेटरों में कोरोना वायरस का कोई लक्षण नहीं पाया और इनमें से जिनका परीक्षण किया गया वह भी निगेटिव रहा। टीम के मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा. शोएब मांजरा ने यह जानकारी दी। दक्षिण अफ्रीकी टीम 18 मार्च को स्वदेश लौट गई थी और इसके बाद उन्हें आइसोलेशन में रहने के लिए कहा गया था। उन्होंने गुरुवार को यह अवधि पूरी कर दी लेकिन वे अपने अन्य देशवासियों की तरह अगले दो सप्ताह तक लॉकडाउन में रहेंगे। मांजरा ने कहा कि किसी भी खिलाड़ी में लक्षण नहीं पाया गया और जिन खिलाड़ियों ने परीक्षण करवाया था उसका परिणाम भी 'निगेटिव' आया।

न्यूजीलैंड ने अगस्त में 'ए' टीम के भारत दौरे का विकल्प खुला रखा : न्यूजीलैंड क्रिकेट ने अपनी 'ए' टीम के अगस्त में भारत दौरे का विकल्प खुला रखा।

रवि शास्त्री से युवराज सिंह ने ली चुटकी : भारतीय क्रिकेट टीम ने दो अप्रैल को 2011 को विश्व कप का खिताब जीता था। टीम के मुख्य कोच रवि शास्त्री ने धौनी की छक्का लगाते हुए वीडियो क्लिप शेयर की। उन्होंने लिखा कि बधाई, कुछ ऐसा है जिसे आप जिंदगी भर संजोएंगे। ऐसे ही जैसे हम 1983 के ग्रुप वाले करते हैं। शास्त्री ने अपने पोस्ट में दिग्गज सचिन तेंदुलकर और मौजूदा कप्तान विराट कोहली को भी टैग किया। युवराज सिंह फाइनल में इस जीत के दौरान नॉन-स्ट्राइकर एंड पर थे। उन्होंने इस पर चुटकी लेते हुए लिखा कि धन्यवाद सीनियर, आप मुझे और माही (महेंद्र सिंह धौनी) को भी टैग कर सकते हैं क्योंकि हम इसका हिस्सा थे। उन्होंने हंसते हुए इमोजी भी लगाई। शास्त्री ने फिर युवराज को भी जवाब दिया। उन्होंने लिखा कि आप जूनियर नहीं हो। तुस्सी लीजंड हो युवराज।

शुभम करोति कल्याणम... इसलिए जलाएं दीये

हारेगा कोरोना ▸ भागेगा भय जब घरों के बाहर नन्हे दीयों में जगमगाएगा अंतस का प्रकाश व दृढ़ प्रतिज्ञ अजेय आत्मबल

जागरण विशेष

प्रधानमंत्री के आह्वान पर 'पांच अप्रैल को रात्रि नौ बजे नौ मिनट के लिए' घरों के बाहर दीयों का प्रकाश फैलाने को देश उसी तरह आतुर हो उठा है, मानो दिवाली मनने जा रही हो। प्रधानमंत्री का एक आह्वान 130 करोड़ भारतवंशियों के लिए क्या मायने रखता है, यह दुनिया देख और सुन चुकी है। घंटी-घंटा-थाली-ताली-शंख से गुंजायमान भारतीयता की अथाह अजेय इच्छाशक्ति का वह महानाद विश्वभर में गुंजायमान हुआ। कल जब घर-घर 'दिवाली' मनेगी और देश दीयों से जगमगा उठेगा, तब वह उत्साह और आत्मबल का प्रतीक वह प्रकाश कोरोना पर निश्चित ही भारी पड़ेगा। कैसे, बता रहे विज्ञानी और विशेषज्ञ। **कानपुर से बृजेश दुबे** और **लखनऊ से राजू मिश्र** की विशेष रिपोर्ट :

प्रतीकात्मक।

दीपक जलाने से कैसे मरते हैं जीवाणु... : दीपं ज्योति परम् ज्योति, दीप ज्योतिर्जनार्दनः। दीपो हरतु मे पापम् , दीपज्योतिर्नमोस्तुते।।
शुभम् करोति कल्याणम् आरोग्यम् धन सम्पदा शत्रुबुद्धि विनाशाय दीपज्योति नमोस्तुते।।

यह अतिप्राचीन श्लोक भी यही कह रहा है कि दीप शुभ और मंगल का कारक है। कल्याण का कारक है। दीपक जलाने से रोग मुक्त होते हैं, वातावरण स्वच्छ होता है, हवा हल्की होती है। ऐसा केवल हमारा प्राचीन ज्ञान ही नहीं वरन देश के श्रेष्ठ विज्ञान संस्थानों के केमिकल इंजीनियरों का भी यही कहना है। इनका कहना है कि सरसों के तेल में मैग्नीशियम, ट्राइग्लिसराइड और एलाइल आइसो थायोसाइनेट होता है। एलाइल जलने पर कीट-पतंगों को अपनी ओर आकर्षित करता है। वे लौ की चपेट में आकर जल जाते हैं। तेल में मौजूद मैग्नीशियम हवा में मौजूद सल्फर और कार्बन के आक्साइड के साथ क्रिया कर सल्फेट और कार्बोनेट बना लेता है। यह विषैले भारी तत्व इस तरह जमीन पर आ गिरते हैं। इसीलिए जले दीपक के आसपास हल्की सफेद राख सी दिखती है। भारी तत्व जमीन पर आने से हवा हल्की हो जाती है और सांस लेना आसान हो जाता है। यही घी का दीपक जलाने पर होता है। देसी गाय के दूध से निर्मित घी का दीपक रोगाणुओं को मारता है। डॉक्टरों का मानना है कि वातावरण साफ और खुशनुमा रहने से इम्यून सिस्टम बेहतर रहता है और व्यक्ति निरोगी रहता है। अगर दिवाली की बात करें तो नरक चतुर्दशी के दिन कूड़े के ढेर और नाली के मुहाने पर और दिवाली पर घर-बाहर हर जगह दीपक रखा जाता है।

शुभ फलदायी बता रहे ज्योतिषशास्त्री... : काशी हिंदू विश्वविद्यालय में ज्योतिष के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. चंद्रमौलि उपाध्याय कहते हैं कि पांच अप्रैल 2020 को रात्रिकाल अर्थात रात्रि नौ बजे पूर्वा फाल्गुनि नक्षत्र है, जिससे सिंह राशि बनती है। जिसका अधिपति सूर्य है। सूर्य परमेश्वर की ज्योति का प्रतिनिधित्व करते हैं। लोक में अंधकार से प्रकाश की स्थापना करते हैं।

अग्नि के पांच रूप होते हैं। (1) ब्राह्म, (2) प्राजापत्य, (3) गार्हस्थ्य, (4) दक्षिणाग्नि और (5) क्रव्यादाग्नि, जिसमें पहले का अरणिमंथन के द्वारा उत्पत्ति होती है। द्वितीय का ब्रह्मचारी को अग्निहोत्र के उपनयन के समय प्राप्त होता है। तृतीय का विवाहोपरांत कुल में प्रतिष्ठित होकर शुभकर्मों में इसका प्रयोग होता है। चतुर्थ का उपयोग चिताग्नि के रूप में होता है। पंचम का उपयोग बाह्य उपद्रव के शमन अर्थात राक्षस, बाह्यबाधा, अदृश्य शक्तियों के उपद्रव का विनाश और अवरोध हो इसके लिए किया जाता है।

वैज्ञानिक वास्तु शास्त्री संजीव गुप्त कहते हैं कि मोमबत्ती और मोबाइल की लाइट का प्रयोग भी किया जा सकता है किंतु यह ज्योतिष की द्रष्टि से उतना कारगर उपाय नही है। काशी के पंचांग के अनुसार शनिवार 5 अप्रैल को रात्रि 9 बजे चैत्र माह शुक्ल पक्ष में त्र्योदशी तिथि, पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र में तुला लग्न और सिंह राशि का चंद्रमा गोचर मे होगा। उस समय श्री अनंग त्रयोदशी भी है। अनंग अर्थात मंगल। आम जनता की जान-माल की रक्षा और सुख, स्वास्थ्य के लिए चतुर्थ भाव में उच्च के मंगल की शनि और गुरु के साथ युति महत्वपूर्ण कारक है जिसमें शनि के अंधकार को मंगल की ऊर्जा को बढ़ाने से अवश्य किया जा सकता है। आमजन के मनोबल को बढ़ाने के लिए सिंह अर्थात सूर्य की राशि मे बैठे चंद्रमा को जलते हुए दीपकों से अवश्य बल मिलेगा। ज्योतिर्विद राजेश शुक्ल के अनुसार उस अवधि में सूर्य रेवती नक्षत्र में होगा और चंद्रमा पूर्वाफाल्गुनी में अर्थात समस्त दोषनाशक रवि योग बन रहा है।

जागरण विशेष की अन्य खबरें पढ़ें
www.jagran.com/topics/jagran-special

राजेश शुक्ल। सौ. स्वत :

संजीव गुप्ता। सौ. स्वत :

चंद्रमोलि उपाध्याय। सौ. स्वत :

दीपक जलाने से नमी भी बढ़ती है। अधिक संख्या में जलाने पर वातावरण का तापमान बढ़ता है। दोनों स्थितियां कोरोना से लड़ने के लिए मुफीद हैं। चूंकि इस बार मार्च-अप्रैल का औसत तापमान कमोबेश अक्टूबर जैसा ही है, जैसा कि दिवाली के समय रहता है, इसलिए हवा भारी है। दीपक जलाने से वह हल्की और साफ होगी।

-प्रो. आरके त्रिवेदी, सेवानिवृत्त विभागाध्यक्ष, ऑयल एंड पेंट टेक्नोलॉजी, एचबीटीयू कानपुर

यह तो नहीं कहूंगा कि दीये जलाने से कोरोना वायरस नष्ट होंगे, लेकिन यह जरूर है कि सरसों के तेल में ऐसे तत्व होते हैं, जिनके ज्वलन और वातावरण में मौजूद रसायनों से प्रतिक्रिया स्वरूप विषैले तत्वों, कीट-पतंगे, रोगाणु आदि की मारने की शक्ति होती है। यह दिवाली के पीछे का वैज्ञानिक कारण भी हो सकता है। रसायनविज्ञान भी इस बात की पुष्टि करता है।

-प्रो. अनिमांगशू घटक, विभागाध्यक्ष केमिकल इंजीनियरिंग विभाग, आइआइटी कानपुर

अंक विद्या का भी अदभुत संयोग...

अंक विद्या के द्वारा 9 संख्या पांच अप्रैल 2020 को आ रही है। रात्रि नौ बजे नौ मिनट का समय

निर्धारण कार्य की पूर्णता और शुभता का प्रतीक है। क्योंकि 9 संख्या को

पूर्ण संख्या माना जाता है। संयोग भी कह सकते हैं कि 3 अप्रैल को सुबह 9 बजे

प्रधानमंत्री ने देश का आह्वान किया। प्रधानमंत्री का संबोधन भी हुआ मात्र 9 मिनट। संबोधन की

तारीख 3.4.20 (3+4+2+0)=9 । 5 अप्रैल का दिन यानी (5 + 4) का योग हुआ 9। समय रात 9

बजकर 9 मिनट। वस्तुत: 9 का अंक अविभाज्य होता है। 9 में कितनी भी बार 9 जोड़ें फलांकों का योग 9 ही होगा।

आत्मबल का प्रतीक है दीया...

उत्साहो बलवानार्य नास्त्युत्साहात्परं बलम्।
सोत्साहस्य हि लोकेषु न किंचिदपि दुलर्भम्।।

उत्साह बड़ा बलवान होता है, उत्साह से बढ़कर कोई बल नहीं होता है। उत्साही पुरुष के लिए संसार में कुछ भी दुर्लभ नहीं है। वाल्मीकि रामायण के किष्किंधा कांड का यह श्लोक भी दीपक प्रज्वलन परंपरा के मूल में है। डीजी कॉलेज की संस्कृत विभाग की से.नि. एचओडी प्रो. नीलम त्रिवेदी कहती हैं, भारतीय परंपरा में दीप अति महत्वपूर्ण है। दीप ज्योति को श्रेष्ठ और विष्णु कहा गया है। इसे पापों को हरने वाला कहा गया है।

आस्था का मनोविज्ञान भी ढाल बन बढ़ा रहा आत्मविश्वास

अशोक आर्य, बरेली

स्वस्थ समाज

जी हां, ईश्वर में आस्था दरअसल आत्मविश्वास का दूसरा नाम है। इस पैथी का प्रयोग बरेली में छह कोरोना संक्रमितों पर सफल रहा है। यह उदाहरण उन लोगों के लिए सुखद है, जो आस्थावान हैं। और जो नहीं हैं, जो आस्था-श्रद्धा-संस्कृतिके इस विज्ञान को कपोल कल्पना व अवैज्ञानिक कह खारिज कर देते हैं, उनके लिए सबक और प्रेरणा है।

बरेली, उप्र स्थित जिला अस्पताल के आइसोलेशन वार्ड में भर्ती कोरोना संक्रमित इस परिवार की बहू ने ये बातें जागरण के साथ फोन पर साझा कीं। कहा- कोरोना वायरस की भयावहता के बारे में देख-पढ़ रहे थे, लेकिन जब पता चला कि पति संक्रमित हो गए हैं तो परिवार के सभी लोग घबरा गए। फिर सभी के सैंपल लिए गए। जांच रिपोर्ट आई तो सुनकर दिमाग सुन्न हो गया। मुझे, सास-ससुर और ननद, देवर को भी संक्रमित बताया गया। उसी दिन स्वास्थ्य विभाग की टीम हम सभी को जिला अस्पताल के आइसोलेशन वार्ड में ले गई। एक कमरे में पूरा परिवार बैठा था मगर किसी के मुंह से शब्द नहीं निकल रहे थे। वह रात डरावनी थी, हम सभी पूरी रात जागते रहे। हमारी बेचैनी देखकर अस्पताल स्टाफ ने समझाया कि ईश्वर पर भरोसा रखो, खुद पर विश्वास रखो, बीमारी से लड़ोगे तो यह हार जाएगी, हार मान ली तो पार नहीं पाओगे। केवल इतना सुनकर ही हमें लगा कि हमें हार नहीं मानना है। लगने लगा कि सब ठीक हो जाएगा।

उन्होंने बताया, पहली रात डर था मगर अब हम सब सामान्य हैं। सुबह स्टाफ नर्स ने प्रार्थना कराई। फिर काउंसलिंग भी हुई, तब मन शांत हुआ। तब से नियमित प्रार्थना कराई जाती है। ईश्वर का ध्यान करते हैं। प्राणायाम करते हैं। निश्चिंत रहने का प्रयास करते हैं, जो अब संभव हो सका है।

परिवार का बेटा 22 मार्च को नोएडा से लौटा था, जहां नौकरी करता था। उसी से पत्नी, मां-पिता, भाई-बहन तक संक्रमण पहुंच गया। 29 मार्च को जब भर्ती कराया गया तो पहली रात बेहद तनाव भरी थी। घबराहट का आलम यह था कि दरवाजे पीटना शुरू कर दिया था। मरीजों की मनःस्थिति ठीक करने के लिए स्वास्थ्य विभाग ने जिला अस्पताल की मनोवैज्ञानिक को बुलवाया। मरीजों के साथ फोन पर बात कराई गई। उन्होंने परिवार के सभी सदस्यों की काउंसिलिंग की। इसके बाद से परिवार के सभी सदस्यों की दशा में सुधार है। अब दोबारा काउंसिलिंग की भी जरूरत नहीं पड़ी है।

आइसोलेशन वार्ड में भर्ती कोरोना संक्रमित मरीज रोजना सुबह और शाम भजन-कीर्तन और प्रार्थना कर रहे हैं। डॉक्टर और नर्स भी वार्ड के बाहर शीशे के पास खड़े होकर इसमें सहभाग करते हैं। टीवी पर प्रार्थना-भजन-कीर्तन संबंधी वीडियो दिखाया जाता है। इसके साथ ही रोजाना सुबह योग और प्रणायाम कर रहे हैं। दिन में ध्यान साधना के साथ ही चालीसा पाठ भी करते हैं। गर्म पानी, और भाप लेते हैं। डॉक्टर कहते हैं कि उनकी मनोदशा मजबूत करने के लिए यह जरूरी है। सकारात्मक सोच के साथ व्यस्त रहना उपचार को आसान बना देगा।

सरोकार की अन्य खबरें पढ़ें
www.jagran.com/topics/positive-news

▸ बरेली के छह संक्रमित मरीजों की कहानी, जिन्हें प्रार्थना, ध्यान, साधना के बूते तनाव से उबार लिया गया

प्रतीकात्मक।

सभी छह मरीज अब एकदम ठीक हैं। उनकी मानसिक दृढ़ता और शारीरिक मजबूती उन्हें संक्रमण से बाहर ले जा सकती है। लगातार यही प्रयास कर रहे हैं। शुरुआती तनाव के बाद अब इनकी मनोदशा ठीक है। उम्मीद है कि इलाज से अच्छे परिणाम आएंगे।

-डॉ. वागीश वैश्य, जिला अस्पताल, बरेली, उप्र

दैनिक जागरण
सबरंग
शहर को जानने के...

नई दिल्ली, शनिवार, 4 अप्रैल, 2020

सुझाव व प्रतिक्रिया के लिए लिखें : sabrang@nda.jagran.com
https://www.facebook.com/jagransabrang/

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद • जागरण

स्वच्छता सुधार नीतियों को यूं मिला आकार

दिल्ली की देहरी

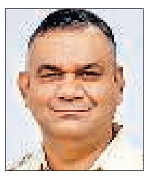

नलिन चौहान
दिल्ली के अनजाने इतिहास के खोजी

आजादी की पहली लड़ाई (1857) में दिल्ली को जीतने के बाद अंग्रेजों के लिए शहर के सार्वजनिक स्वास्थ्य में सुधार एक बड़ी चिंता का विषय बन गया था। स्वच्छता और सुरक्षा के नाम पर शहर के लगभग एक तिहाई हिस्से को ध्वस्त कर दिया गया। परोक्ष रूप से, नए विदेशी शासकों ने शहर को एक रोगग्रस्त जीव के रूप में देखा, जिसके बुरे प्रभाव को रोकने और कम करने की जरूरत थी। उष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों में रहस्यमयी बीमारियों और मृत्यु की धारणा, सैनिकों के स्वास्थ्य की चिंता और सभ्य बनाने का राजनीतिक एजेंडा...इन सभी बातों ने दिल्ली में स्वच्छता सुधार नीतियों को आकार देने में सहायक भूमिका निभाई।

उस समय दिल्ली में हैजा, मलेरिया और दिल्ली 'सोर' का जोर था, जिसके बारे में माना जाता था कि ये पूरी तरह से जल-जनित संक्रामक रोग हैं जो कि बहते पानी, कुएं के खारे पानी और तालाबों के रुके हुए पानी के माध्यम से फैलते हैं। इसी बात की पुष्टि करते हुए उर्दू के मशहूर शायर और दिल्ली वासी मिर्जा गालिब 1860-61 के अपने एक पत्र में लिखते हैं 'कारी का कुआं सूख गया है। लाल डिग्गी के सारे कुओं का पानी अचानक पूरी तरह खारा हो गया है। अगर कुएं खत्म हो जाते हैं और ताजा पानी मोती के समान दुर्लभ हो जाता है तो यह शहर कर्बला की तरह एक उजाड़ में बदल जाएगा।' इससे यह साफ होता है कि यह केवल पानी की उपलब्धता ही नहीं बल्कि बचे हुए पानी की गुणवत्ता की बात थी।

1860 तक, खुले नालों और महामारियों से निपटने में दिल्ली म्युनिसिपल कारपोरेशन के खिलाफ याचिकाएं दायर होने लगी थीं। यहां तक कि दिल्ली में सफाई के लिए अपनाई जाने वाली तकनीक के संबंध में भी सफाईकर्मी अपना विरोध दर्ज करवाने लगे थे। एक महामारी की घटना के दौरान नगर पालिका अपने नियमों को पूरी तरह से लागू करने में विफल रही।

निगम की हुई थी आलोचना... सफाई और पानी को लेकर नहीं थीं सुविधाएं : उल्लेखनीय है कि 1840 में भारत में तपेदिक के रोग का आगमन हो चुका था और इसके कारण प्लेग या हैजे की बीमारी से अधिक व्यक्तियों की मौत हुई थी। फिर भी इस बीमारी की रोकथाम के उपायों के लिए धन की व्यवस्था करने के काम में ढिलाई थी। इस बीमारी की मार से सरकार या अर्थव्यवस्था सीधे तौर पर प्रभावित नहीं होने के कारण इसके लिए पैसों का प्रबंध करने पर कतई ध्यान नहीं दिया गया। इतना ही नहीं, वर्ष 1869 में बड़े पैमाने पर फैली चेचक की बीमारी के दौरान म्युनिसिपल कमिश्नरों पुलिस शक्तियां न होने के कारण यमुना नदी के किनारे मृतकों के शवों को छोड़ने वालों को दंड देने में अक्षम साबित हुए। उल्लेखनीय है कि अप्रैल 1871 में, उर्दू अखबार ने दिल्ली म्युनिसिपल कारपोरेशन की शहर में साफ नहरों, कचरे की नालियों और पीने के पानी उपलब्ध करवाने में विफल रहने के लिए आलोचना की थी। यही कारण था कि सरकारी चिकित्सा सुविधाओं को लेकर सामान्य नागरिक की सोच अच्छी नहीं थी। हकीमों और वैद्यों के निजी उपचार ही अधिक लोकप्रिय थे।

पहाड़गंज में पहली निदानशाला स्थापित की :दिल्ली में सबसे पहले, क्षय रोग नियंत्रण कार्यक्रम वर्ष 1933 में आरंभ किया गया जबकि रामकृष्ण आश्रम मिशन ने पहाड़गंज में एक क्षय रोग निदानशाला स्थापित की। उसके बाद निदानशाला जामा मस्जिद ले जाई गई। 68 बिस्तरों वाला सिल्वर जुबली अस्पताल वर्ष 1935 और श्यामा प्रसाद मुखर्जी मार्ग पर म्युनिसिपल टीबी क्लीनिक वर्ष 1938 में स्थापित किए गए। भारतीय क्षय रोग संघ ने नई दिल्ली क्षय केंद्र वर्ष 1940 में प्रारंभ किया। जबकि भारत में राष्ट्रीय क्षय रोग कार्यक्रम वर्ष 1950 में आरंभ हुआ, जिसके तहत क्षय रोग के छिपे हुए मामलों का पता लगाना और स्थानिक उपचार की व्यवस्था करना, लोगों से संपर्क के कारण होने वाले क्षय रोग की रोकथाम, जनता को क्षयरोग से बचाना और बीसीजी के टीके की व्यवस्था शामिल है।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आइसीएमआर) वर्तमान समय में देश की शीर्ष एवं प्रमुख चिकित्सा शोध संस्था है जो देश में जैवचिकित्सा संबंधी अनुसंधान करने की मुख्य जिम्मेदारी भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के कंधों पर है। नई दिल्ली के अंसारी रोड पर स्थित आइसीएमआर के नाम से प्रसिद्ध यह संस्था जैव चिकित्सा के क्षेत्र में अनुसंधान की योजना बनाने से लेकर क्रियान्वयन के लिए जिम्मेदार है। यह योजना, सूत्रीकरण, समन्वय, क्रियान्वयन तथा प्रोत्साहन को बढ़ावा देने की मुख्य दायित्व है। यह विश्व के सबसे पुराने चिकित्सा शोध निकायों में से एक है। वर्ष 1911 में, अंग्रेजी भारत सरकार ने देश में चिकित्सा संबंधी अनुसंधान को प्रायोजित और समन्वित करने के विशिष्ट उद्देश्य के साथ इंडियन रिसर्च फंड एसोसिशन (आइआरएफए) की स्थापना का ऐतिहासिक निर्णय लिया था। देश की आजादी के बाद वर्ष 1949 में आइआरएफए, के कार्यों और गतिविधियों में उचित विस्तार करके इसे नया नाम 'भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद' दिया गया। आइआरएफए का प्राथमिक उद्देश्य संचारी रोगों की रोकथाम के लिए चिकित्सा अनुसंधान, उससे संबंधित ज्ञान का प्रसार और प्रायोगिक कार्यों को प्रोत्साहन देने तथा ऐसे कार्यों के प्रचार का वाहक बनने के साथ दूसरे क्षेत्रों में भी हो रही अनुसंधान गतिविधियों का वित्तपोषण करना और सहायता देना था। इस पूरे काम की जिम्मेदारी आइआरएफए के संचालक मंडल को दी गई थी। जिसमें अंग्रेज वायसराय की कार्यकारी परिषद में शिक्षा और स्वास्थ्य तथा भूमि विभागों के सदस्य की अध्यक्षता में शेष सभी सदस्य सरकारी अफसर थे। तब आइआरएफए के सदस्यों में इंडियन मेडिकल सर्विस के महानिदेशक, भारत सरकार के स्वच्छता आयुक्त, कसौली के सीआरआइ के निदेशक, वर्ष 1909 में बने केंद्रीय मलेरिया ब्यूरो के विशेष कार्याधिकारी, इंडियन मेडिकल सर्विस (स्वच्छता), के सहायक महानिदेशक और मानद परामर्शदाता सदस्य के रूप में चुने गए रोनाल्ड रॉस थे। एसोसिएशन के संचालक मंडल की पहली बैठक 15 नवंबर 1911 को मुंबई के परेल स्थित प्लेग प्रयोगशाला में हरकोर्ट बटलर की अध्यक्षता में हुई थी। जबकि दूसरी बैठक में एसोसिएशन की आम सभा में चिकित्सा अनुसंधान के प्रसार की दृष्टि से इंडियन मेडिकल रिचर्स का एक जर्नल शुरू करने का निर्णय हुआ। इसका नाम 'इंडियन जर्नल ऑफ मेडिकल रिसर्च' रखा गया और उसमें पहले से प्रकाशित हो रहे 'पाल्यूडिज्म' नामक प्रकाशन तथा वैज्ञानिक संस्मरणों के रूप में छपे अधिकतर मोनोग्राफों को भी समाहित कर लिया गया। यह जर्नल एसोसिएशन का आधिकारिक प्रकाशन है जो कि जुलाई 1913 से नियमित प्रकाशित हो रहा है। कोरोना से जंग में आइसीएमआर भी लगातार दिशा निर्देश जारी कर रहा है।

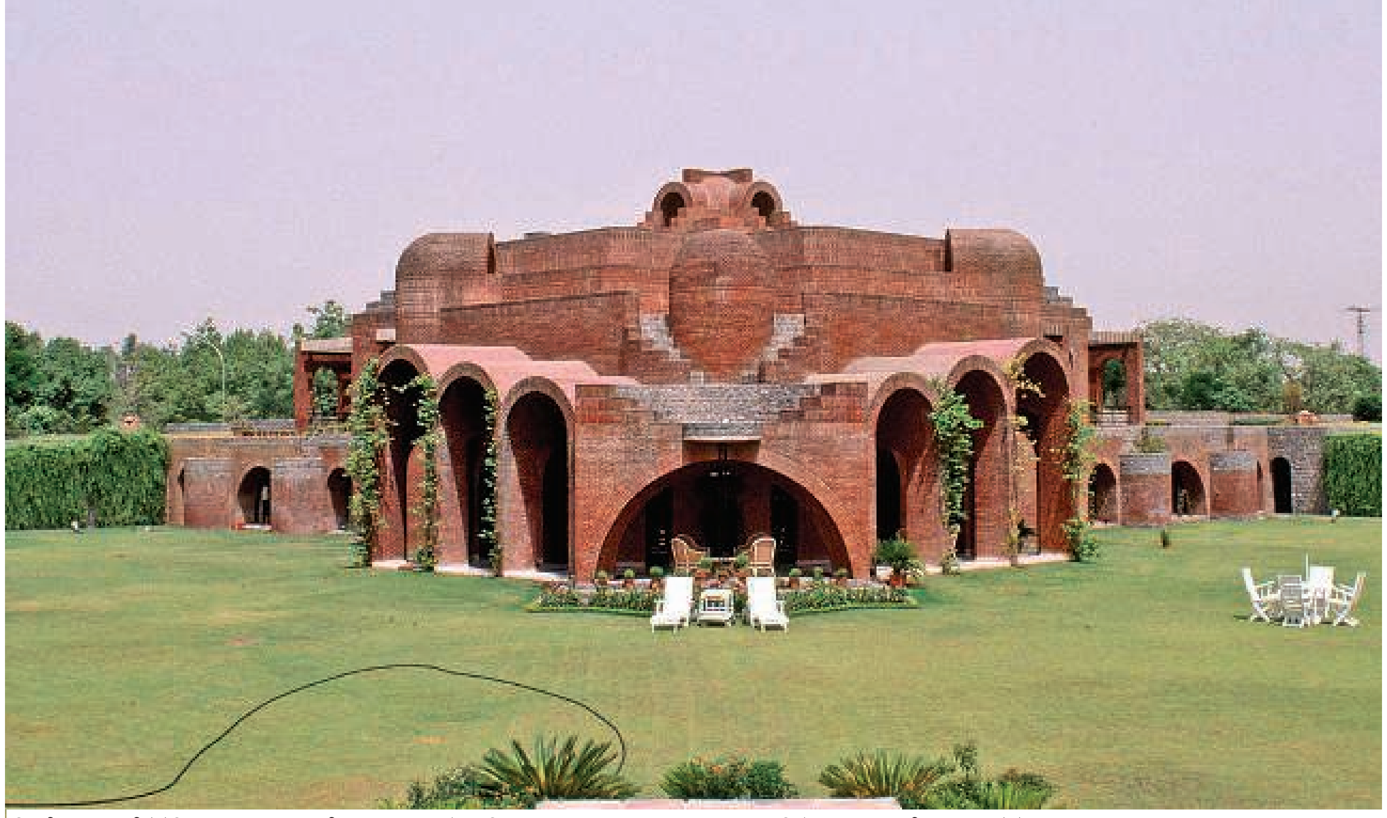

दिल्ली, चाणक्यपुरी में बेल्जियम दूतावास...सतीश गुजराल द्वारा तैयार किया गया था इसका वास्तु...अद्भुत आकृति है इस दूतावास की • फाइल फोटो

स्मृति में सतीश गुजराल

वास्तुशिल्प का नायाब नगीना

सतीश गुजराल...एक चित्रकालर... कलाकार और एक वास्तुकार भी। बंटवारे का दंश भी झेला था और उसे उतनी ही संजीदगी से कैनवस पर उकेरा भी। उनकी कलाकृतियां किसी भी संजीदा व्यक्ति को भावुक करने वाली रहीं। शायद यही कारण था कि उनकी बंटवारे पर बनाई गई कलाकृतियों को दुनिया ने सराहा। दिल्ली, चाणक्यपुरी में बेल्जियम एंबेसी इनकी वास्तुशिल्प का नायाब नगीना है। सबरंग के इस अंक में इन्हीं सब पहलुओं से रूबरू करा रहे हैं **संजीव कुमार मिश्र** :

सतीश का हमारे परिवार से बहुत पुराना नाता रहा है। तब का जब आजादी के बाद सभी कांस्टीट्यूशन क्लब में बने बैरक में रहते थे। वे मेरे जन्म के समय घर भी आए थे। उम्र बढ़ने के दौरान मैं उनके कामों से परिचित हो पाया। यह कहना है दिल्ली के मशहूर फोटोग्राफर राम रहमान का। उनसे जुड़े अनुभवों को याद कर बताते हैं मैंने त्रिवेणी कला संगम समेत कई अन्य जगहों पर लगी उनकी कलाकृतियों की प्रदर्शनी की उनके लिए फोटो भी की थीं। वो कई बार हंसी में कहते थे कि राम तुम मेरी नेफ्यू से शादी करलो। मैं कहता फोटोग्राफर के पास कहां बहुत पैसा रहता है तो बिगड़ जाते। कहते, जब मैंने किरण से शादी की थी तो कहां पैसे थे। खैर, बहुत कम लोगों को पता होगा कि उन्होंने फरीदाबाद में मोदी मिल की इमारत का भी डिजाइन तैयार किया था। और दिल्ली में तो कई इमारतों का वास्तुशिल्प उन्होंने ही डिजाइन किया ही था।

बचपन...की वो घटना : सतीश बचपन में एक हादसे का शिकार हो गए थे। जिसकी वजह से इनकी श्रवण शक्ति प्रभावित हुई थी। अपनी आत्मकथा 'ए ब्रश विद लाइफ' में उन्होंने इसका जिक्र किया है, लिखते हैं कि उस दिन अगर मेरी मां ने मुझे झिंझोड़ कर नहीं जगाया होता तो मुझे पता भी नहीं चलता की सुबह हो गई है। मैंने अपना मुंह खोलकर कुछ कहने की कोशिश की लेकिन मैं अपनी ही आवाज सुन नहीं पाया। मेरी मां ने मुझे हिलाया और पूरी ताकत से मेरे कानों में चिल्लाई। मैं उनका मुंह देखता रहा, मुझे कुछ सुनाई नहीं दे रहा था। दरअसल नदी पार करने की कोशिश के दौरान गुजराल तेज बहाव वाले पानी में बह गए थे। उनका पैर एक पत्थर के नीचे आ गया था। इस दुर्घटना में उनकी जान तो बच गई थी लेकिन एक साल बिस्तर पर रहना पड़ा था।

कलाकृतियों में अभिव्यक्त किया बंटवारे का दंश : सतीश की बंटवारे पर आधारित कलाकृतियों की प्रदर्शनी 2016 में इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय कला केंद्र में भी लगी थी। एक साक्षात्कार में उन्होंने कहा था कि उस समय मैं लाहौर में था, जब देश का बंटवारा हुआ। लाहौर मानों नरक में तब्दील हो गया था। चारों तरफ आगजनी हो रही थी। पिता ने हमें अपने घर झेलम जाने के लिए कहा। एक कार भी दी। लाहौर से हमारा घर 100 मील की दूरी पर था। जब हम घर की तरफ निकले तो रास्ते में भयानक मंजर था। लोगों का कत्ल किया जा रहा था। महिलाएं बदहवास थीं। सड़क पर हर तरफ आग ही आग दिख रही थी। तय समय से, बहुत अधिक वक्त लगा हमें घर पहुंचने में। गांव पूरा उजाड़ था। घर पहुंचे तो पता चला कि हमारे मकान को शरणार्थी स्थल बनाया गया है। यहां से हमने हिंदुस्तान का सफर तय किया। शिमला आए और छह महीने तक पीड़ितों की सेवा में लगाई। लेकिन बंटवारे की घटनाएं दिमाग में अंकित हो चुकी थीं। शिमला में पहली नौकरी ग्राफिक डिजाइनर की मिली। काम करने के दौरान सतीश ने शरणार्थियों के इसी दर्द को कलाकृतियों में अभिव्यक्त किया। इसके बाद उन्होंने यह भी कहा कि 'उस समय मुझे एहसास हुआ कि मैं बंटवारे के दंश पर नहीं बल्कि अपने दुखों को रंगों में उकेर रहा हूं।'

खूब सुनाते थे दिल्ली के किस्से : सतीश गुजराल के पास दिल्ली से जुड़ी खूब कहानियां थीं। चूंकि उन्होंने दिल्ली को बड़े करीब से देखा था, यहां की मिट्टी से उन्हें लगाव था इसलिए बहुत से दिलचस्प किस्से सुनाते थे। बताते थे कि जब दिल्ली आए थे तो लोग बैलगाड़ी पर बैठकर हुमायू का मकबरा देखने जाते थे। एक बार वो लाजपत नगर स्थित अपने एक दोस्त से मिलने गए। बातों बातों में उससे कहा कि वो हुमायूं का मकबरा कहां है, देखना चाहते हैं। दोस्त बोला कि बस यहीं है? वो छत पर ले गया तो वहीं से दिखाई दिया। बीच में कुछ भी नहीं था, सिवाय खाली जमीन के। विभाजन के बाद जब शरणार्थियों को जमीन का वितरण किया जाने लगा, जिन्होंने पाकिस्तान में अपना सब कुछ गंवा दिया था। उस समय सुंदर नगर कब्रिस्तान था। ज्यादातर दलदल था क्योंकि यमुना वहां तक होकर बहती थी। तत्कालीन सरकार ने इसे विकसित करने की योजना बनाई। सतीश, भी सुंदर नगर में रहना चाहते थे लेकिन उनके चचेरे भाई ने मना कर दिया था। कहा था कि कब्रिस्तान के लिए क्या ऐसे ही जाना है। पूर्व प्रधानमंत्री इंद्र कुमार गुजराल सहित तीनों भाइयों को 200-200 वर्ग गज के प्लॉट प्राप्त हुए। भाइयों को निजामुद्दीन में 600 वर्ग गज प्लॉट मिला। उस समय निजामुद्दीन में जंगल था। यहां कौन रहेगा? यही कहकर जमीन बेच दी गई। बाद में जोर बाग में जमीन की नीलामी चल रही थी, वहीं 5000 रुपये की जमीन पर बोली लगाई। 2000 रुपये तत्काल जमा कर दिए।

मशहूर कलाकार और वास्तुकार रहे स्वर्गीय सतीश गुजराल की कलाकृतियां खूब मशहूर रही हैं। खासकर विभाजन के दंश पर बनाई गई सीरीज वाली कलाकृति • सौजन्य : सोशल मीडिया

सतीश गुजराल का 94 वर्ष की उम्र में 26 मार्च को निधन हो गया। पद्म विभूषण से सम्मानित गुजराल वास्तुकार, चित्रकार, भित्तिचित्र कलाकार और ग्राफिक कलाकार थे। उनके प्रमुख कामों में दिल्ली उच्च न्यायालय के बाहर की दीवार पर एल्फाबेट भित्तिचित्र शामिल है। वो भारत के पूर्व प्रधानमंत्री इंद्र कुमार गुजराल के छोटे भाई थे। भारत सरकार ने कला के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए सन् 1990 में उन्हें पद्म विभूषण से सम्मानित किया था।

जब मिले पांच कलाकार: उन दिनों कलाकृतियों को बेचना बहुत मुश्किल था। एक बार पांच कलाकारों सतीश गुजराल, एमएफ हुसैन, राम कुमार, सावंत और अमीना ने मिलकर एक शो आयोजित करने और कलाकृतियां बेचने का फैसला किया। ओल्ड मिल रोड पर सभी ने मिलकर एक दुकान ली। चार दिन तक कोई खरीदार नहीं आया। हमारे माता-पिता और भाई-बहन भी नहीं! लेकिन पांचवे दिन हमारे माता-पिता आए। शायद हमारा दिल रखने के लिए। सतीश जब 1952 में मैक्सिको से दिल्ली आए तो अपनी कलाकृतियां बेचना चाहते थे। वो कनॉट प्लेस में धूमिल (एक आर्ट गैलरी) में गए। कुमार गैलरी (दिल्ली की दूसरी आर्ट गैलरी जो 1956 में आई थी) जहां वीरेंद्र कुमार ने प्रति माह पांच रुपये में काम किया। सतीश बताते थे कि जब वीरेंद्र ने उन्हें देखा तो कहा, मैं अपनी खुद की एक गैलरी शुरू करना चाहता हूं। क्या आप मदद कर सकते हैं? मुझे अपने काम करने के लिए चार से पांच कलाकारों की जरूरत है। बाद में उन्होंने सुंदर नगर के एक कोने में एक छोटी सी गैलरी खोली।

मशहूर भारत-पाकिस्तान मुशायरा : सतीश यह मानते थे कि दिल्ली में साहित्यिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में वृद्धि हुई है। लेकिन फिर भी उस तरह के कार्यक्रमों की कमी थी जैसा भारत पाकिस्तान का मुशायरा। जिसमें पूरा शहर उमड़ पड़ता था। एक साक्षात्कार में उन्होंने कहा था कि 'विभाजन के बाद जब दिल्ली में पहला मुशायरा आयोजित हुआ, तो लगभग पूरा शहर वहां पहुंच गया। प्रख्यात शायर हाफिज जालंधरी ने प्रस्तुति शुरू ही की थी कि बारिश होने लगी। लेकिन क्या मजाल की कोई दर्शक टस से मस हुआ हो। उन्होंने एक नज्म पढ़ी

जब तक है हिंद की तकसीम कौन सा मुकद्दर है जो मेरे महफूज है?

(जब से हिंदुस्तान बंटा है, किसकी किस्मत सुरक्षित है?) यह सुनकर दर्शक भावुक हो रहे थे। यह नज्म सतीश के दिल के करीब थी। वो इसे लिखकर अपने साथ मेक्सिको ले गए...ताकि अपने कमजोर पलों के दौरान सामजस्य बनाने में मदद मिली थी।

वास्तु की नजीर बेल्जियम दूतावास : दिल्ली स्थित बेल्जियम दूतावास...नायाब वास्तु की नजीर है। इसके बनने की कहानी भी उतनी ही दिलचस्प है। सन् 1982 में सतीश गुजराल को इसका वास्तुशिल्प तैयार करने जिम्मेदारी दी गई थी। इसके बाद तो मानों तहलका ही मच गया। पेशेवर वास्तुकारों ने तो यह तक कहा कि गुजराल के पास तो कोई आर्किटेक्चर की डिग्री भी नहीं है। कई ने गुजराल को गिरफ्तार करने के लिए हायर अथॉरटी को लेटर भी लिख दिया था। लेकिन गुजराल सिर्फ अपने काम पर केंद्रित रहे। वो मुश्किल दौर था लेकिन जब दूतावास बनकर तैयार हुआ तो इसके लिए उन्हें राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय स्तर के कई पुरस्कार मिले। सन् 2000 में इस इमारत को वास्तुकारों की अंतरराष्ट्रीय जूरी द्वारा दुनिया भर के 1,000 सर्वश्रेष्ठ वास्तुशिल्प में स्थान दिया गया था। उनके डिजाइन के लिए, गुजराल को बेल्जियम के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'ऑर्डर ऑफ द क्राउन' से भी सम्मानित किया गया था। बेल्जियम का दूतावास दिल्ली के चाणक्यपुरी में स्थित है। दूर से, इसकी दो गुंबद जैसी संरचनाएं दिखाई देती हैं जैसे कि वे कुम्हार के चाक से निकल रही हों। यह एक विशिष्ट आधुनिक संरचना है, जो गुजराल की कलात्मक संवेदनशीलता को दर्शाती है। यह 5 एकड़ भूखंड पर स्थित है। यह भूमि आवंटन तो 1950 में ही किया गया था लेकिन बेल्जियम सरकार ने 30 वर्षों तक इसका निर्माण नहीं किया। अंत में, जब भारत सरकार ने बेल्जियम सरकार को जमीन के अधिग्रहण के लिए नोटिस दिया, तो परियोजना परवान चढ़ी और दूतावास बना। इसके अलावा भी दिल्ली में जिंदल फार्महाउस और मैक्स फार्महाउस की इमारतों का भी इन्होंने वास्तुशिल्प किया था।

लॉकडाउन है तो क्या...

घर में ही तैयार हो रहा हेल्दी स्ट्रीट फूड

जायका

लॉकडाउन ने लोगों को भले ही घरों में रहने को मजबूर कर दिया है, लेकिन मन का क्या करें। इसे तो गोलगप्पे, समोसे, मोमोज, जलेबी और डोसे की रह रह कर याद सताती रहती है। दिल्ली के लजीज जायके चाट-पकौड़े का स्वाद जुबान पर बरबस आ ही जाता है। लेकिन कहते हैं न जहां चाह है वहां राह है। पहले काम की आपाधापी में घर में पसंदीदा भोजन बनाने का समय नहीं होता था लेकिन लॉकडाउन के दौरान दिल्ली में रह रहे विभिन्न समुदाय के लोग न केवल अपने पारंपरिक और पंसदीदा व्यंजनों को बना रहे हैं, बल्कि परिवार के साथ उसका जी भर कर स्वाद भी ले रहे हैं।

मोमो खाए बिना तो रहा ही नहीं जाता: बुराड़ी में रहने वाले उत्तराखंड समाज के विक्रम रावत केंद्रीय विद्यालय में शिक्षक हैं, लेकिन परिवार की खुशी के लिए आजकल रसोई में भी समय बीता रहे हैं।

विक्रम रावत

कहते हैं पहले समय नहीं मिलता था, लेकिन लॉकडाउन के चलते परिवार के साथ वक्त बिताने का मौका मिला है तो उनकी खुशी के लिए अच्छी-अच्छी डिश बना रहा हूं। पहाड़ के लोगों को मोमोज बहुत पसंद हैं। इसलिए घर पर हर दूसरे दिन मोमोज मंगा लेते थे। लॉकडाउन के चलते दुकानें बंद हैं और घर से बाहर भी नहीं निकल सकते ऐसे में खुद ही घर पर लजीज पनीर मोमोज व चटनी बनाने लगे हैं। घरवालों को भी विक्रम के हाथों का स्वाद इतना भाने लगा है कि हर दूसरे-तीसरे दिन शाम के वक्त सब मिलजुल का मोमोज तैयार करते हैं और उसका स्वाद लेते हैं। विक्रम कहते हैं मोमोज बनाने में तेल का प्रयोग बहुत ही कम होता है। इसे भाप से पकाया जाता है, इसलिए ये सुपाच्य और पौष्टिक से भरपूर है। पनीर मोमाज तैयार करने के लिए सबसे पहले प्याज, बंदगोभी, बारीक कटा हरा धनिया, लहसुन, नमक व पनीर को मिक्स कर मसाला तैयार करते हैं। उसके बाद मैदे की छोटी-छोटी लोई (गोली) बनाकर उसमें मसाला भरते हैं फिर मनचाहा आकार दे मोमोज को 10 मिनट तक स्टीम करें। मोमोज की बात करें और चटनी का जिक्र न हो ऐसा कैसे हो सकता है। मोमोज का स्वाद ही चटनी से है। चटनी बनाने के लिए पानी में लाल मिर्च और टमाटर को उबालकर उससे एक पेस्ट तैयार कर लें। फिर पैन में तेल गर्म कर लहसून और अदरक का तडक़ा लगा दें। बस तैयार हो गई तीखी व चटपची चटनी। अब परिवार के साथ मोमोज और चटनी का जी भर कर स्वाद लें।

विक्रम रावत द्वारा घर पर ही तैयार किए गए मोमोज ▲

पारंपरिक व्यंजन फोगला का ढोकला :

पूजा वर्मा

शास्त्री नगर में रहने वाली पूजा वर्मा को राजस्थान का खास पारंपरिक व्यंजन फोगला का ढोकला बेहद पसंद है। राजस्थान के लोग इसे बड़े चाव से खातेहैं। इसे राजस्थान के प्रसिद्ध व्यंजन दाल बाटी चूरमा का विकल्प भी कहा जाता है। यह स्वास्थ्य के लिए भी लाभदायक है। पूजा कहती हैं वैसे तो फोगला का ढोकला गौर के तीज या कुछ विशेष अवसर पर ही बनाया जाता है, लेकिन आजकल सभी लोग घर पर हैं इसलिए इसे बनाने का इससे बढ़िया अवसर तो कोई हो ही नहीं सकता। जब भी किसी का मन फोगला का ढोकला खाने का होता है वे झट से इसे बना देती हैं। फोगला का ढोकला में मिठास के साथ दाल के तड़के का कॉम्बिनेशन होता है। इसे बनाने के लिए सबसे पहले फोगले को दो-तीन घंटे भिगोना पड़ता है ताकि उसकी सारी मिट्टी निकल जाए। उसके बाद एक कढ़ाई में पानी डालकर उसे 15 मिनट तक उबालें। फिर फोगला को निकालकर अच्छी तरह निचोड़ लें ताकि उसमें से पूरा पानी निकल जाए। जितना फोगला है उसी मात्रा में आटा लें फिर उसमें नमक, मिर्च, हल्दी, अजवाइन और चुटकी भर हींग व मीठा सोडा मिला दें। इसमें थोड़ा तेल या देसी घी भी डाल दें जिससे यह मुलायम हो जाए। इन सब को मिलाकर आटे की तरह गूंथ लें। इसके बाद पानी की भाप से इसे 15 मिनट तक सेक लें। अब इस तैयार फोगले को नमकीन और मीठा मिलाकर दाल के साथ परोसें।

◀ फोगला का ढोकला...इसे तड़का दाल के साथ खाया जाता है

धनिया की चटनी और मूंग दाल का चीला

दीप्ति भल्ला

पीतमपुरा में रहने वाली पंजाबी समुदाय की दीप्ति भल्ला कहती हैं कि लॉकडाउन के दौरान वे अपने परिवार के सदस्यों के लिए हर रोज कुछ न कुछ नया डिश बना रही हैं। परिवार के लोगों को उनके हाथों से बना मूंग दाल का चीला और धनिया की चटनी बेहद पसंद है। वे इसे बड़े चाव से खाते हैं। लेकिन काफी समय से उन्होंने यह डिश बनाई नहीं थी, क्योंकि उनके पास समय नहीं होता था। लॉकडाउन के चलते उन्हें अपनी इस भूली बिसरी डिश को बनाने का सुनहरा मौका मिल गया। दीप्ति कहती हैं यह स्वादिष्ट तो है ही स्वास्थ्यवर्द्धक भी है। सबसे पहले मूंग दाल को दो घंटे तक पानी में भिगोएं। उसके बाद उसे निकालकर पीस लें। फिर उसमें हरी मिर्च, हरा धनिया और नमक मिला लें। चीले की स्टफिंग के लिए पनीर, प्याज, टमाटर, लहसून, धनिया का पेस्ट तैयार कर लें। सब को अच्छी तरह मिला लें। उसके बाद तवे को गर्म कर उस पर तेल डालें। जब तेल गर्म हो जाए तो उसके उपर चीले को फैला दें। थोड़ी देर हल्के आंच पर पकने दें। जब वह पक कर तैयार हो जाए तो उसे निकाल लें। इसी तरह चटनी बनाने के लिए सबसे पहले धनिया पत्ती लें। हरी मिर्च, नमक, आमचूर व नींबू रस के साथ इसे मिक्सी में अच्छी तरह पीस लें। जब यह बनकर तैयार हो जाए तो परिवार के सभी सदस्यों के साथ गरमागरम मूंग दाल के चीले को धनिया की चटनी के साथ खाएं।

हरी चटनी के साथ...मूंग दाल चीला का सुस्वाद लाजवाब होता है। ▲

रितु राणा

राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
शनिवार 4 अप्रैल 2020

पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री जुल्फिकार अली भुट्टो को दी गई फांसी

1979 में आज ही पाकिस्तान के 10वें प्रधानमंत्री जुल्फिकार अली भुट्टो को रावलपिंडी सेंट्रल जेल में फांसी दी गई। राजनीतिक प्रतिद्वंद्वी की हत्या में दोषी पाए जाने पर सुप्रीम कोर्ट ने उन्हें सजा सुनाई थी। 1972 में उन्होंने ही पाक परमाणु कार्यक्रम का ढांचा तैयार किया था।

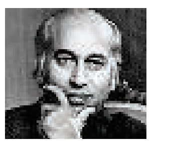

दिग्गज आइटी कंपनी माइक्रोसॉफ्ट की स्थापना हुई

1975 में आज ही बिल गेट्स और पॉल एलन ने अमेरिका में दुनिया की सबसे बड़ी साफ्टवेयर कंपनी माइक्रोसॉफ्ट की स्थापना की। 1980 में एमएस डॉस ऑपरेटिंग सिस्टम से लोकप्रिय हुई। विंडोज ऑपरेटिंग सिस्टम दुनिया में सर्वाधिक इस्तेमाल होता है।

'एक भारतीय आत्मा' माखनलाल चतुर्वेदी का जन्मदिन

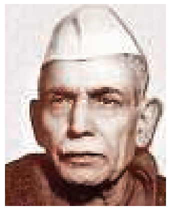

प्रखर पत्रकार, चिंतक और कवि माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म वर्ष 1889 में आज ही मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले में हुआ। राष्ट्र भक्ति और प्रकृति प्रेम में रची-बसी उनकी रचनाएं भारतीय आत्मा का पर्याय हैं। पुष्प की अभिलाषा, दीप से दीप जले उनकी लोकप्रिय कविताएं हैं। उन्होंने पूरा जीवन पत्रकारिता, साहित्य और राष्ट्रीय आंदोलन के लिए समर्पित कर दिया। वे कई बार जेल गए। 1955 में हिम तरंगिनी के लिए उन्हें साहित्य अकादमी के हिंदी भाषा के प्रथम पुरस्कार से नवाजा गया। 1963 में पद्म भूषण से अलंकृत हुए। 30 जनवरी 1968 को उन्होंने इस लोक से विदा ले ली।

इधर-उधर की

मददगार बनीं टोकरियां

मिलान, एजेंसी : कोरोना के कारण बहुत से लोगों के सामने रोजी-रोटी का संकट खड़ा हो गया है। हालांकि संकट की इस घड़ी में बहुत से लोग सामने आ रहे हैं, जो गरीबों की मदद में जुटे हैं। इटली में इसके लिए नया तरीका खोज निकाला है जो बहुत हद तक सुरक्षित भी है। यहां के लोग अपनी बालकनी से एक टोकरी को रस्सी से बांधकर के नीचे लटकाते हैं, जिसमें खाना होता है। जरूरतमंद इसमें से खाना ले लेते हैं और टोकरी वापस चली जाती है। इटली के नेपल्स शहर में यह नजारा आम है। एंजिलियो पिकोने ने सॉलिडेल पानरो नाम से यह अभियान शुरू किया है। यह पहल तब शुरू हुई जब उन्होंने एक बेघर व्यक्ति के साथ भोजन किया। अब पड़ोसी भी इसमें भाग लेने लगे हैं। इसके लिए सोशल मीडिया पर उन्हें खूब सराहा जा रहा है।

मरीजों की मस्तिष्क संबंधी समस्याएं भी बढ़ा रहा है कोरोना

नया पहलू ▶ कोविड-19 से पीड़ित कई लोगों को बुखार-खांसी से पहले दिमागी परेशानी हुई

न्यूयॉर्क टाइम्स से

अमेरिका-इटली सहित कई देशों के डॉक्टरों ने इस बात को महसूस किया

वाशिंगटन : कोरोना वायरस कोविड-19 की चपेट में आने वाले लोगों को खांसी, जुकाम, सीने में जकड़न, सांस लेने में कठिनाई और न्यूमोनिया ही नहीं मस्तिष्क संबंधी गंभीर दिक्कतों का भी सामना करना पड़ रहा है। डॉक्टरों के मुताबिक, कोरोना के कारण लोगों के दिमाग पर असर पड़ने को इंसेफैलोपैथी के नाम से भी जाना जाता है। इसमें लोगों की दिमागी क्षमता प्रभावित होने के साथ ही सूंघने और स्वाद लेने की क्षमता घट जा रही है।

फ्लोरिडा के बोका रैटन अस्पताल में आए 74 वर्षीय एक मरीज का जिक्र करते हुए डॉक्टरों ने बताया कि मार्च की शुरुआत में जब मरीज को लाया गया तो इसे खांसी और बुखार की ही शिकायत थी। उसका एक्सरे कराया गया। हालात सामान्य समझकर उसे घर जाने दिया गया। घर में बुखार बढ़ने पर अगले दिन उसे फिर अस्पताल लाया गया। उसकी हालत बिगड़ चुकी थी। सांस लेने की दिक्कत के साथ वह मानसिक चेतना खो चुका था। वह डॉक्टरों को अपना नाम तक नहीं बता पा रहा था। उसके हाथ-पांव कांप रहे थे। इस पर डॉक्टरों को शक हुआ कि वह कोविड-19 की चपेट में है। जांच में डॉक्टरों का शक सही निकला।

इसी तरह मंगलवार को डॉक्टरों ने डेट्रायट की एक महिला मरीज के बारे में चौंकाने वाली जानकारी दी। एक एयरलाइन में काम करने वाली पचास वर्षीय महिला पिछले कुछ दिनों से कोरोना की चपेट में है। इसकेसिर में दर्द रहने से यह भ्रम की शिकार हो गई है। यह डॉक्टरों को अपना नाम भी नहीं बता पा रही है। उसे समय का भी कोई भान नहीं रह गया है। उसके मस्तिष्क की स्कैनिंग करने पर कई हिस्सों में सूजन मिली। इन हिस्सों में कुछ कोशिकाएं (सेल) मृत भी पाई गईं।

डॉक्टरों ने इस दशा को काफी गंभीर बताते हुए इसे एक्यूट नेक्रोटाइजिंग इंसेफैलोपैथी का नाम दिया। यह दशा इंफ्लुएंजा जैसे वायरल संक्रमण के बिगड़ने के कारण पैदा होती है।

हेनरी फोर्ड हेल्थ सिस्टम की डॉक्टर इलिजा फोरी ने एक ईमेल संदेश में बताया कि इस महिला मरीज की हालत खराब है। इस केस से साबित होता है कि कुछ परिस्थितियों में वायरस सीधे दिमाग पर हमला कर सकता है। अमेरिकी डॉक्टरों की ही तरह इटली और अन्य देशों के डॉक्टरों ने भी यह पाया है कि कोविड-19 कुछ मरीजों के दिमाग पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रहा है। कोरोना पीड़ित कई मरीजों में पक्षाघात, सुन्नपन, रक्त के थक्के बनने के लक्षण मिले है। चिकित्सा विज्ञान में इन्हें एक्रोपैरेस्थेशिया भी कहा जाता है। कुछ मामलों में तो लोगों को बुखार चढ़ने और सांस की तकलीफ होने से पहले ही दिमागी हालत बिगड़ गई। इटली के ब्रेसिया शहर में ऐसे मरीजों का इलाज करने के लिए डॉक्टर अलेज्रांदो पैडोवनी को अलग न्यूरोकोविड यूनिट बनानी पड़ी।

श्वसन तंत्र में ही सीमित नहीं रहता वायरस : उधर, कई विशेषज्ञों का कहना है कि कोरोना के ज्यादातर मरीजों की दिमागी हालत सामान्य रहती है। इस बारे में अभी कुछ कहना जल्दबाजी होगी। बाल्टीमोर के जॉन हॉपकिंस स्कूल ऑफ मेडिसिंस के डॉ. राबर्ट स्टीवेंस ने बताया कि वे जिन मरीजों पर रिसर्च कर रहे हैं वे पूरे होश में रहते हैं और आसपास के माहौल से वाकिफ रहते हैं। हालांकि एक रिसर्च पेपर में चीनी विशेषज्ञों ने कहा है कि कोरोना श्वसन तंत्र में ही सीमित नहीं रहता बल्कि मरीजों के दिमाग पर भी असर डालता है।

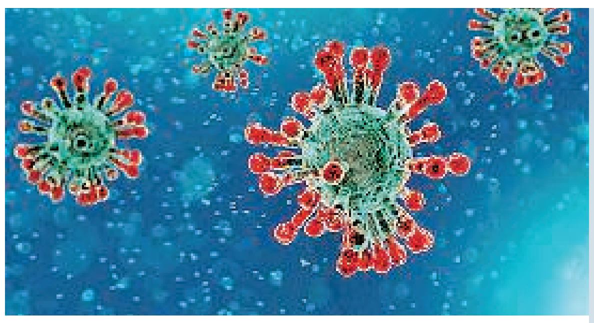

प्रतीकात्मक फोटो

भ्रमित और संज्ञाशून्य थे मरीज

इलाज के लिए लाए गए इंसेफैलोपैथी के लक्षण वाले ज्यादातर मरीज भ्रमित और संज्ञाशून्य थे। ये कुछ बता नहीं पा रहे थे। इनमें से तो कई बेहोश भी हो जा रहे थे। विशेषज्ञों ने इस तरह के मरीजों का इलाज कर रहे डाक्टरों और अन्य चिकित्साकर्मियों को संक्रमण में आने से सावधान किया है। इस संबंध में पिट्सबर्ग यूनिवर्सिटी के स्कूल आफ मेडिसिन के न्यूरोलाजिस्ट डॉ. शेरी एच. वाई चाऊ ने कहा कि इस वायरस के न्यूरो सिस्टम पर पड़ने वाले असर के बारे में अभी बहुत कुछ पता करना है।

75 साल पहले जितना पहुंचा कार्बन का स्तर

लॉकडाउन का असर

- वैज्ञानिकों का अनुमान इसी रफ्तार से उत्सर्जन 5 फीसद तक कम हो सकता है
- कैलिफोर्निया की स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने किया अध्ययन

लंदन, रायटर : कोरोना वायरस के संक्रमण के कारण अमेरिका, भारत समेत सैकड़ों देशों में लॉकडाउन के कारण भले ही अर्थ व्यवस्थाएं थम गई हों। लेकिन विश्व भर में बड़े पैमाने पर औद्योगिक और मानवीय गतिविधियां कम होने से पिछले कुछ ही दिनों में पर्यावरण में बेहतरीन सुधार आया है। पूरे विश्व में कार्बन उत्सर्जन इस साल इतना अधिक कम हो गया है जितना 75 साल पहले द्वितीय विश्व युद्ध के बाद हुआ था। कार्बन उत्सर्जन के आंकड़े जुटाने वाले विश्व भर के वैज्ञानिकों के अनुसार, साल दर साल इसी रफ्तार से कार्बन उत्सर्जन 5 फीसद तक कम हो सकता है।

वैश्विक कार्बन उत्सर्जन का हिसाब रखने वाले ग्लोबल कार्बन प्रोजेक्ट के चेयरमैन रॉब जैक्सन का कहना है कि 2008 के वित्तीय संकट के बाद 1.4 फीसद कार्बन उत्सर्जन में कमी आई थी जो अब पांच फीसद तक हो सकती है।

कैलिफोर्निया की स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी अर्थ सिस्टम साइंस के प्रोफेशर जैक्सन ने कहा कि इस साल कार्बन उत्सर्जन में पांच फीसद या उससे भी ज्यादा की गिरावट आश्चर्यजनक होने वाली है। ऐसा द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से नहीं देखा गया है। उन्होंने कहा कि कितने ही बड़े संकट आए हों, चाहे सोवियत संघ का विघटन हो, तेल संकट हो या बैंकों के कर्ज का संकट हो, कभी भी उसका पर्यावरण पर इतना अच्छा प्रभाव नहीं पड़ा है। लेकिन इस लॉकडाउन ने औद्योगिक इकाइयों, एयरलाइनों और सभी प्रकार की मानवीय गतिविधियों की रोकथाम कर दी है। नतीजतन, पिछले 50 सालों में किसी संकट ने कार्बन उत्सर्जन पर इतना असर नहीं डाला जितना कोरोना वायरस संक्रमण की रोकथाम के लिए विभिन्न देशों में किए गए लॉकडाउन ने किया है। हालांकि इंग्लैंड की एक्सेटर यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिक पीयरे फ्रेडलिंगस्टन का कहना है कि पर्यावरण में यह सुधार कुछ ही अरसे के लिए है। चूंकि कोविड-19 महामारी के बाद विश्व में आर्थिक संकट से निपटने के लिए दुनिया फिर से अपनी पुरानी दिनचर्या पर चल देगी। अगले साल तक कार्बन उत्सर्जन की स्थिति फिर वहीं पहुंच जाएगी।

प्रतीकात्मक

व्यग्रता और अवसाद से दूर रखेगा योग

वाशिंगटन, प्रेट्र : अमेरिकन हार्ट एसोसिएशन के तरफ से भारतवंशी चिकित्सक इंद्रनील बसु-रे ने लोगों से अपील की है कि वे लॉकडाउन के दौरान सेहत को दुरुस्त रखने के लिए योग का सहारा लें।

अमेरिका के मेंफिस वेटरन हॉस्पिटल में हृदयरोग विशेषज्ञ डॉक्टर रे ने कहा कि लॉकडाउन के दौरान घर में बंद रहने से अनेक लोगों को व्यग्रता और अवसाद जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। इससे शरीर की रोग से लड़ने की प्रतिरोधक क्षमता पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। इसलिए ऐसी परिस्थिति में जरूरी है कि लोग सेहतमंद रहें। इसके लिए उन्हें योग करना चाहिए। योग सिर्फ शारीरिक कसरत भर नहीं है। योग के दौरान ध्यान और श्वसन प्रक्रिया के जुड़ने से तनाव कम होता है। इसपर किए गए अध्ययनों से प्रमाण मिलता है कि योग से शरीर की प्रतिरोधक क्षमता में विकास होता है।

पहले परीक्षण में सफल पाई गई वैक्सीन

शोध अनुसंधान

कोरोना वायरस (कोविड-19) से मुकाबले के लिए तैयार की जा रही एक संभावित वैक्सीन अपने पहले परीक्षण सफल पाई गई है। यह वैक्सीन इतनी मात्रा में प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया की उत्पत्ति करने में खरी पाई गई, जिससे इस खतरनाक वायरस को बेअसर किया जा सकता है। ईबायोमेडिसिन पत्रिका में प्रकाशित अध्ययन के अनुसार, परीक्षण में चूहे को जब पिट्सबर्ग कोरोना वायरस वैक्सीन दी गई तो इससे दो हफ्ते के अंदर वायरस के खिलाफ एंटीबॉडी की उत्पत्ति शुरू हो गई। अमेरिका की पिट्सबर्ग यूनिवर्सिटी के प्रमुख शोधकर्ता एंड्रिया गैम्बोटो ने कहा, 'हम सटीक रुप से जानते हैं कि नए वायरस से कहां मुकाबला करना है।' शोधकर्ताओं का कहना है कि यह वैक्सीन एनिमल टेस्ट में सफल पाई गई है। परीक्षण के अगले चरण में यह वैक्सीन इंसानों पर आजमाई जाएगी। यह परीक्षण आगामी कुछ माह में शुरू होने की उम्मीद है। अगर यह सफल पाई जाती है तो बाजार में वैक्सीन के आने में एक साल से ज्यादा समय लग सकता है। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में कोरोना वायरस से बचाव का एक मात्र उपाय हमारे सामने है। वह है-सतर्कता, शारीरिक दूरी और स्वच्छता। जरा-सी भी असावधानी किसी क्षेत्र के लिए काफी महंगी पड़ सकती है। -प्रेट्र

नई दवा में दिखी वायरस से मुकाबले की उम्मीद

वैज्ञानिकों को परीक्षण के दौर से गुजर रही एक नई दवा में कोरोना वायरस से मुकाबले की उम्मीद की किरण दिखी है। यह दवा कोशिका के स्तर पर वायरस का रास्ता रोकने में प्रभावी पाई गई है। इस दवा के विकास से कोरोना का उपचार संभव हो सकता है। सेल जर्नल में प्रकाशित यह अध्ययन कोविड-19 की वजह बनने वाले सार्स-कोवी-2 के अहम पहलुओं पर नई रोशनी डालता है। कोशिका स्तर पर वायरस की पारस्परिक क्रियाओं के बारे में विस्तृत जानकारी मिलने के साथ ही अध्ययन से यह भी पता चलता है कि वायरस किस तरह रक्त वाहिनियों और किडनी को संक्रमित करता है। कनाडा की ब्रिटिश कोलंबिया यूनिवर्सिटी के शोधकर्ता जोसेफ पेनिंगर ने कहा, 'हम इस महामारी के उपचार की दिशा में विकसित की जा रही नई दवा को लेकर आशावान हैं।' -प्रेट्र

बॉलीवुड अपडेट

'रामायण' ने बनाया टीआरपी में नया कीर्तिमान

21 दिनों के लॉकडाउन में लोगों की मांग पर देश के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय की तरफ से दूरदर्शन पर 'रामायण' का पुनः प्रसारण शुरू किया गया है। यह धारावाहिक दर्शकों को खूब रास आ रहा हैं। गुरुवार को टीवी की दुनिया के आंकड़े इकट्ठा करने वाली कंपनी बार्क द्वारा जारी आंकड़ों के मुताबिक, 'रामायण' बीते पांच वर्षों में जनरल एंटेरटेनमेंट श्रेणी में सबसे ज्यादा टीआरपी हासिल वाला धारावाहिक बना। प्रसार भारती के सीईओ शशि शेखर ने सोशल मीडिया पर यह जानकारी देते हुए लिखा, 'मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि दूरदर्शन पर पुनः प्रसारित हो रहा धारावाहिक 'रामायण' साल 2015 से अब तक का सबसे अधिक टीआरपी हासिल करने वाला हिंदी एंटरटेनमेंट धारावाहिक बन गया है।' हर दिन 'रामायण' के दो एपिसोड दिखाए जा रहे हैं। बीते शनिवार और रविवार को दिखाए गए चार एपिसोड्स को करीब 17 करोड़ लोगों ने देखा, जबकि 28 मार्च को प्रसारित किए गए पहले एपिसोड को करीब 3.4 करोड़ लोगों ने देखा था। रविवार की रात को दिखाए जाने वाले एपिसोड के प्रसारण के दौरान इस शो की टीआरपी करीब 5.2 प्रतिशत रही, जो बीते पांच वर्षों में किसी भी हिंदी धारावाहिक के लिए कीर्तिमान है। 'रामायण' के अलावा दूरदर्शन पर 'महाभारत', 'ब्योमकेश बक्शी' और 'शक्तिमान' जैसे धारावाहिकों का भी पुनः प्रसारण किया जा रहा है। रामानंद सागर द्वारा निर्देशित 'रामायण' का प्रसारण दूरदर्शन पर 25 जनवरी, 1987 में किया गया था।

कोरोना को पापा से डरना चाहिए : रितिक

घर में रहने के साथ ही कोरोना वायरस से लड़ने का दूसरा सबसे अच्छा तरीका है खुद को स्वस्थ रखना और इम्युनिटी को बढ़ाना। बात करें अगर 71 वर्षीय राकेश रोशन की तो वह इन बातों का ख्याल बखूबी रख रहे हैं। राकेश रोशन कैंसर सर्वाइवर हैं। पिछले साल उन्होंने कैंसर को मात दी थी। राकेश खुद को फिट रखने के लिए रोजाना दो घंटे वर्कआउट करते हैं। कोरोना वायरस के चलते वह भी अपने घर पर ही हैं, लेकिन उनकी आदत में कोई बदलाव नहीं आया है। रितिक ने अपने पिता राकेश रोशन का एक वीडियो सोशल मीडिया पर साझा किया है, जिसमें राकेश घर के भीतर ही बने जिम में वर्कआउट कर रहे हैं। इस वीडियो के साथ रितिक ने एक भावुक मैसेज लिखा, 'यह मेरे पिता हैं, जो कभी हार नहीं मानते। मौजूदा दौर में कुछ इसी तरह के दृढ़ संकल्प की हमें भी जरूरत है। इनकी उम्र 71 वर्ष है। ये आज भी रोज दो घंटे वर्कआउट करते हैं। पिछले साल ही इन्होंने कैंसर को मात दी थी। मुझे लगता है वायरस को इनसे डरना चाहिए।'

दूसरे देशों के मुकाबले हम पहले उबरेंगे : रोनित रॉय

घर पर रहते हुए अगर रूटीन तय हो, तो वक्त का सदुपयोग होने के साथ अनेक काम समुचित तरीके से हो जाते हैं। यह मानना है अभिनेता रोनित रॉय का। उन्होंने अपनी दिनचर्या का टाइम टेबल बना रखा है। उसके अनुसार ही वह अपना दिन व्यतीत करते हैं। वह कहते हैं, 'मैं घर पर बैठकर बिल्कुल भी बोर नहीं हो रहा हूं। मेरी दिनचर्या काफी व्यस्त है। सुबह सात बजे उठने के बाद कॉफी बनाने के साथ मेरे दिन की शुरुआत होती है।' इन दिनों वह हॉलीवुड अभिनेता लैरी मॉस की एक्टिंग वेबसाइट पर लाइव एक्टिंग की पढ़ाई भी कर रहे हैं। वह बच्चों को घर पर वर्कआउट करवाते हैं। अपने डॉग के साथ भी समय बिताते हैं। रात साढ़े दस बजे के आसपास सो जाते हैं। रोनित बताते हैं कि इसके बीच जो वक्त मिलता है, उसमें वह अपने घर और बाहर से जो भी सामान आता है, उन्हें सैनेटाइज करने का काम करते हैं। ऑफिस का काम भी वह घर से ही करते हैं। अपने बिजनेस क्लाइंट्स से वह फोन पर ही बात कर लेते हैं। रोनित का मानना है कि हमारा देश दूसरे देशों के मुकाबले जल्द ही इस समस्या से बाहर आ जाएगा। वह कहते हैं कि एक आदत लोगों में इस लॉकडाउन के बाद रह जाएगी। उसके बारे में वह कहते हैं कि लोग जिस तरह से डिजिटल पर ज्यादा वक्त बिता रहे हैं, यह आदत उनमें लॉकडाउन खत्म होने के बाद भी रहेगी।

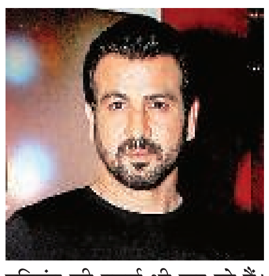

ताहिरा लाई हैं लॉकडाउन के किस्से अपनी कहानियों में

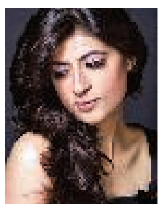

कोरोना वायरस को लेकर एक प्रोडक्शन हाउस शीर्षक रजिस्टर करा चुका है। वहीं ताहिरा कश्यप इस लॉकडाउन में कई दिलचस्प कहानियों से लोगों को परिचित करा रही हैं। उनकी कहानियां वर्तमान स्थिति से प्रेरित हैं। लोग किस तरह से इस लॉकडाउन से प्रभावित हो रहे हैं, यह बताने के साथ ही इसमें उन्होंने अपनी कल्पनाओं के मुताबिक ट्विस्ट भी दिया है। ताहिरा इन कहानियों की वीडियो सीरीज बना रही हैं, जिसे उन्होंने सोशल मीडिया पर साझा करना शुरू कर दिया है। ताहिरा के अनुसार, लॉकडाउन के दौरान स्थितियों को देखने के दो तरीके हैं, पहला जो उपलब्ध है उसका लाभ उठाएं या फिर सिर्फ शिकायत करें। ताहिरा बताती हैं कि उन्होंने दोनों तरीके अपनाएं। जिसके बाद उन्हें लॉकडाउन की कहानियां कहने का आइडिया आया। ताहिरा कहती हैं कि यह समय भले ही जटिल है, लेकिन कहानियां सरल हैं। मुझे लेखन पसंद है और मैं बिना किसी एजेंडे के ये कहानियां बता रही हूं। ये लॉकडाउन की कहानियां हमारे जीवन से लिए गए बस एक पल या विचार हैं। कई बार हमें उन पलों को संजोने की जरूरत होती है। ताहिरा ने अपनी पहली कहानी '6 फुट दूर' सोशल मीडिया पर सुनाई भी है।

मनरंजन

पिता को आदर्श मानते हैं भूषण कुमार

म्यूजिक कंपनी टी-सीरीज के चेयरमैन भूषण कुमार अपने पिता गुलशन कुमार को अपना आदर्श मानते हैं। शुक्रवार को उन्होंने भी अर्जुन कपूर, अनन्या पांडे और शाहिद कपूर की तरह सोशल मीडिया पर अपने प्रशंसकों से सवाल पूछने के लिए कहा। इसके बाद एक यूजर ने पूछा कि आज आपके पास हर सुख-सुविधा है, इसके बावजूद क्या बात आपको लगातार काम करने के लिए प्रेरित करती हैं। जवाब में भूषण ने लिखा, 'मेरे पिता टी-सीरीज को सिर्फ एक म्यूजिक कंपनी नहीं, बल्कि एक विश्वस्तरीय एंटरटेनमेंट कंपनी बनाना चाहते थे। मैंने इसे अपना उद्देश्य बना लिया और पिता का सपना पूरा करना ही मेरा लक्ष्य रहा।' इन दिनों आप क्या कर रहे हैं? इस सवाल के जवाब में उन्होंने लिखा कि वह इस दौर के सकारात्मक पहलू को देख रहे हैं और अपनी पत्नी दिव्या खोसला कुमार और बेटे रुहान के साथ वक्त व्यतीत कर रहे हैं। एक अन्य यूजर ने उनसे इतना बड़ा व्यापार खड़ा करने के लिए सुझाव मांगे तो भूषण ने लिखा, 'हमेशा अपनी अंतरात्मा की सुनें। आपका दिल आपको सही दिशा में ले जाएगा। मैंने हमेशा यही किया है और आपसे भी यही उम्मीद रखता हूं।' आदर्श व्यक्ति के बारे में पूछे गए सवाल पर भूषण ने अपने पिता गुलशन कुमार को अपना आदर्श बताया।

प्रियंका पर पिता ने लगाई थी चुस्त कपड़े पहनने पर रोक

प्रियंका चोपड़ा जोनास अपने पिता अशोक चोपड़ा के काफी करीब थीं, उनसे जुड़ी एक बात उन्होंने सोशल मीडिया पर साझा की है। एक पत्रिका को दिए साक्षात्कार में प्रियंका ने बताया कि उनके पिता ने उन्हें चुस्त कपड़े पहनने से मना किया था, जिसके चलते दोनों में अनबन भी हो गई थी। प्रियंका ने बताया कि जब वह पढ़ाई करने के लिए अमेरिका गई थीं, तब वह सिर्फ बारह साल की थीं। वह 16 साल की उम्र में अमेरिका से स्वदेश वापस आईं। तब स्कूल से लौटते वक्त लड़के प्रियंका का पीछा करते थे। प्रियंका के मुताबिक, उनके पिता को शुरुआती कुछ दिनों तक यह समझ में ही नहीं आया कि उन्हें क्या करना चाहिए। ऐसे में उनके पिता को उनके खिड़की पर खड़े होने और टाइट कपड़े पहनने पर पाबंदी लगानी पड़ी थी।

प्रियंका ने यह भी बताया उनके पिता उनके एक अच्छे दोस्त भी थे। वह हर मौके पर उनका साथ देते थे। प्रियंका के पिता का साल 2008 में निधन हो गया था। प्रियंका पिछले साल रिलीज हिंदी फिल्म 'द स्काई इज पिंक' में नजर आई थीं। आगामी दिनों में वह नेटफिलक्स पर रिलीज होने वाली फिल्म 'द व्हाइट टाइगर' में नजर आएंगी।

करिश्मा ने दिखाया कपूर परिवार का ओरिजिनल पोस्टर

इन दिनों फुर्सत के क्षणों में सिनेमा के सितारे अपने जीवन के पुराने पन्नों को उलटकर पुरानी स्मृतियों को ताजा कर रहे हैं। शुक्रवार को करिश्मा कपूर ने सोशल मीडिया पर एक पुरानी तस्वीर साझा की। इस तस्वीर में राज कपूर उनकी पत्नी कृष्णा कपूर के साथ करिश्मा, करीना कपूर खान, रणबीर कपूर और रिद्धिमा कपूर नजर आ रहे हैं। इस तस्वीर को साझा करते हुए करिश्मा ने लिखा, 'परिवार मायने रखता है।' करिश्मा की इस तस्वीर को करीना ने भी अपने सोशल मीडिया पर साझा करते हुए लिखा, 'हमने कपूर परिवार का ओरिजिनल पोस्टर ढूंढ़ लिया है।' करिश्मा हालिया रिलीज वेब सीरीज मेंटलहुड में मां के किरदार में नजर आई थी।

परेश रावल के बेटे 'बमफाड़' से रख रहे अभिनय में कदम

ओटीटी प्लेटफॉर्म पर लगातार फिल्में और वेबसीरीज रिलीज हो रही हैं। इस कड़ी में फिल्म 'बमफाड़' 10 अप्रैल से जी5 पर स्ट्रीमिंग के लिए उपलब्ध होगी। अनुराग कश्यप इस फिल्म को प्रजेंट कर रहे हैं। इलाहाबाद की यह कहानी रोमांटिक है। इस फिल्म से दो नए कलाकार शालिनी पांडे और परेश रावल के बेटे आदित्य रावल डेब्यू कर रहे हैं। आदित्य का कहना है कि वह इंडस्ट्री में बतौर कलाकार अपनी पहचान बनाना चाहते हैं। उनका कहना है कि भले ही यह लव स्टोरी होगी, लेकिन इस कहानी में कई परतें होंगी। परेश रावल ने भी सोशल मीडिया पर अपने बेटे की फिल्म का पोस्टर साझा करते हुए लिखा, 'मेरे बेटे को आपके आशीर्वाद की जरूरत है।' इस फिल्म से अभिनेत्री शालिनी पांडे डेब्यू कर रही हैं। उनका कहना है कि मैं ऐसे किरदार करना चाहती हूं, जो कलाकार होने के नाते मझे चुनौती दें।

आज के प्रमुख टीवी कार्यक्रम

डीडी नेशनल
रामायण : सुबह 9 बजे/रात 9 बजे
व्योमकेश बख्शी : सुबह 11.00
गोदान : दोपहर 12.30
सर्कस : दोपहर 3.00
श्रीमान श्रीमती : शाम 4.00
आरोग्य भारत : शाम 7.00
शक्तिमान : रात 8.00
चाणक्य : रात 10.00
डीडी भारती
महाभारत : दोपहर 12 एवं शाम 7
उपनिषद गंगा : शाम 6.00
स्टार प्लस
सिया के राम : सुबह 7.00
राधाकृष्ण : सुबह 9.00
ये रिश्ते हैं प्यार के : दोपहर 12.00
बेस्ट ऑफ डांस प्लस : शाम 6.00
द जंगल बुक : रात 8.00
कलर्स
खतरा खतरा खतरा : सुबह 8.00
खतरों के खिलाड़ी : दोपहर 12.00
महाकाली : शाम 4.00
लवकुश : शाम 5.00
कॉमेडी नाइट्स विद कपिल : शाम 6.00
नागिन : रात 8.00
सोनी
बेस्ट ऑफ द कपिल शर्मा शो : सुबह 7.00
इंडियाज बेस्ट डांसर : शाम 8.00